RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol : 9, Issue : 2 / Vol: 10, Issue : 1, July 2017-June 2018

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

A graded by NAAC

NAAC Re-accredited 'A' Grade Certificate

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान
NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL
An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Jain Vishva Bharati Institute
(Deemed to be University u/s 3 of the UGC Act, 1956)
Ladnun, Dist. Nagaur, Rajasthan as
Accredited
With CGPA of 3.11 on the four point scale
at A grade
valid up to July 07, 2018

Date : July 08, 2013

Director

EC/64/RAR/25

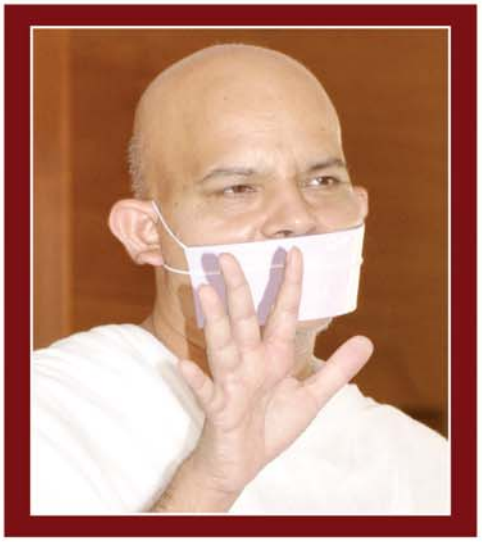

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्व भारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

प्रश्न करें

प्रश्न किया गया– **पडिपुच्छणयाए णं भंते! जीवे किं जणयई?** भंते! प्रतिप्रश्न करने से जीव क्या प्राप्त कर सकता है? उत्तर दिया गया– **पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ। कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिंदइ।** प्रतिप्रश्न करने से जीव सूत्र, अर्थ और उन दोनों से सम्बंधित संदेहों का निर्वतन करता है और कांक्षा मोहनीय कर्म का विच्छेद करता है।

स्वाध्याय के पांच प्रकारों में दूसरा है– प्रतिप्रश्ना। अध्यापन की प्रक्रिया में जैसे पढ़ाना महत्त्वपूर्ण है तो प्रश्न करना भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिस विद्यार्थी में प्रश्न करने की क्षमता होती है, वह विद्यार्थी प्रतिभावान होता है। जो सर्वज्ञ है, सब कुछ जानता है, उसे प्रश्न पूछने की जरूरत नहीं होती अथवा जो नासमझ है, कुछ समझता ही नहीं है, वह व्यक्ति भी प्रश्न नहीं करता। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिनमें समझ शक्ति होती है किन्तु संकोच या किसी अन्य कारण से प्रश्न नहीं पूछते। ज्ञान विकास का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, प्रश्न करना। श्रीमद्भागवत गीता में कहा गया है–

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।।

ज्ञान प्राप्त करने के लिये पहले गुरू को प्रणाम करो, उनकी सेवा करो, उनसे प्रश्न पूछो, तब वे तत्त्वदर्शी और ज्ञानी गुरू तुम्हें उपदेश देंगे, ज्ञान देंगे।

अनुक्रमणिका

01.	कोलकाता में 'जैन विद्वत् संगोष्ठी' का आयोजन	06
02.	संस्थान के विद्यार्थियों ने बनाये 5 विश्व रिकॉर्ड	07
03.	जैवीबीआई इंटरनेशनल स्टार स्टूडेंट अचीवर्स	07
04.	कोलकाता में संस्थान का 10वाँ दीक्षांत समारोह	08-09
05.	28वाँ स्थापना दिवस समारोह	10-11
06.	यूजीसी एक्सपर्ट टीम का दौरा	12-13
07.	नया भारत मंथन कार्यक्रम	14-15
08.	इंटरनेशनल समर स्कूल ऑन जैनिज्म 21 दिवसीय कोर्स	16
09.	जैन आचार्यों से सम्पर्क कार्यक्रम	16
10.	उपखण्ड स्तरीय योग समारोह आयोजित	17
11.	संस्थान में मुख्यमंत्री का स्वागत	17
जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग		
12.	21 दिवसीय राष्ट्रीय पांडुलिपि व प्राच्य लिपि विज्ञान कार्यशाला आयोजित	18-19
13.	अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला के संभागियों के साथ बैठक	20
14.	''प्री-मैरिज कॉउन्सलिंग'' विषय व्याख्यान	20
15.	आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा संवर्धिनी व्याख्यानमाला में जैन ज्योतिष पर व्याख्यान	21
16.	Workshop on Western Philosophy Faculty Development Programme	21
17.	जैन संस्थाओं से जुड़ाव पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला	22
18.	महावीर जयंती पर विशेष कार्यक्रम	23
19.	अहिंसा की प्रासंगिकता पर व्याख्यान आयोजित	23
प्राकृत एवं संस्कृत विभाग		
20.	संस्कृत दिवस	24
21.	रिसर्च मेथोडोलोजी पर व्याख्यान आयोजित	24
22.	व्याख्यानमाला आयोजित/10 दिवसीय संस्कृत-प्राकृत जैन स्कॉलर कार्यशाला आयोजित	25
योग एवं जीवन विज्ञान विभाग		
23.	योग व ध्यान पर तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला	26
24.	अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया/विविध गतिविधियां	27
अहिंसा एवं शांति विभाग		
25.	तीन दिवसीय युवा अहिंसा एवं मानवाधिकार शिविर	28-29
26.	अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस/अहिंसा दिवस	29
27.	साहित्य में अहिंसा व समरसता पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित	30-31
समाज कार्य विभाग		
28.	आपदा-विपदा प्रबंधन पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी	32
29.	तीन दिवसीय आमुखीकरण कार्यक्रम/एड्स दिवस/विविध	33
शिक्षा विभाग		
30.	तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला/शिक्षक दिवस	34-35
31.	शुभभावना कार्यक्रम/गणेश चतुर्थी/हिन्दी दिवस/रक्षाबंधन पर्व	36
32.	जन्माष्टमी/स्वामी विवेकानन्द/अंबेडकर जयंती कार्यक्रम	37
33.	शैक्षणिक भ्रमण	37
34.	स्वच्छता अभियान कार्यक्रम/होली पर सुरसंगम कार्यक्रम	38
अंग्रेजी विभाग		
35.	अंग्रेजी सम्प्रेक्षण दक्षता के लिए कक्षाओं का आयोजन	39
36.	नवागन्तुक विद्यार्थियों का स्वागत/शैक्षणिक भ्रमण	39
आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय		
37.	डांडिया नृत्य/नवागन्तुक विद्यार्थियों का स्वागत	40-41
38.	यूथ फेस्टिवल/मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण	42
39.	मंगल भावना कार्यक्रम/ज्ञान केन्द्र का उद्घाटन	43
40.	राज्य स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता/ कॅरिअर व्याख्यान	44
41.	मेहनाज ने जीते 3 राज्य स्तरीय पुरस्कार/अन्य	45
42.	कॅरियर परामर्श कार्यक्रम/त्रिदिवसीय नवीकरण एवं प्रेक्षाध्यान शिविर/क्लबों का गठन/	46
43.	साहित्यिक प्रतियोगिता	47
44.	अभिभावक शिक्षक बैठक व अन्य	48
45.	राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय शिविर	49
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय		
46.	दो दिवसीय दूरस्थ शिक्षा सम्प्रसारक कार्यशाला स्वरचित एकांकी लेखन प्रतियोगिता का परिणाम	50-51
संस्थान की अन्य विविध गतिविधियाँ		
47.	सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं/आंतकवाद विरोधी दिवस, नया भारत मंथन प्रतियोगिताए, खेल-कूद प्रतियोगिताएं/ दो दिवसीय रिसर्च ओरियंटेशन वर्कशॉप, नववर्ष समारोह/ संकल्प दिवस/तहसील स्तरीय हेलमेट जागरूकता कार्यशाला	52-59

संस्थान का देश-विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से एमओयू

संस्थान निरन्तर वैश्विक स्तर पर अग्रसर हो रहा है। इसके अन्तर्गत दो विदेशी विश्वविद्यालयों से उसके एमओयू/एग्रीमेंट्स हैं। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार वीके कक्कड़ ने बताया कि देश-विदेश के 9 विश्वविद्यालयों से जैन विश्व भारती संस्थान के साथ एमओयू हुये हैं, जिनमें विद्यार्थियों एवं फेकल्टी का एक्सचेंज कार्यक्रम तय किये गये हैं। इन शिक्षण संस्थानों व विश्वविद्यालयों से अन्तर्सम्बंधों के कारण जहां इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को विदेशों के विश्वविद्यालयों में नवीन शिक्षण पद्धतियों एवं तकनीकों को सीखने का अवसर मिलेगा, वहीं विदेशी विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों को यहां आकर जैन विद्या, योग व जीवन विज्ञान, संस्कृत व प्राकृत भाषा, भारतीय संस्कृति, पाठ्यक्रमों एवं पद्धतियों को नजदीकी से देखने-समझने एवं सीखने का अवसर मिल पायेगा। कुलसचिव कक्कड़ ने बताया कि सिंगापुर की प्रज्ञा योग, बेल्जियम की घेंट यूनिवर्सिटी, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी जयपुर, स्वर्णिम गुजरात स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी गांधीनगर, कोबा की प्रेक्षाध्यान एकेडमी एवं स्वामी विवेकानन्द योग अनुसंधान विश्वविद्यालय बैंगलोर के साथ अन्तर्सम्बंध स्थापित किये गये हैं। उन्होंने बताया कि इससे पहले भी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ इस विश्वविद्यालय के अन्तर्सम्बंध रहे हैं।

जैविभा विश्वविद्यालय देश के 20 प्रशंसित विश्वविद्यालयों में शुमार

शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले संस्थानों की समीक्षा करने वाली विश्वस्तरीय ख्याति-प्राप्त पत्रिका ''दी नोलेज रिव्यू मैगजीन'' द्वारा जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) को देश के सबसे प्रशंसित विश्वविद्यालयों की वार्षिक समीक्षा सूचि में वर्ष 2017 के लिये चुना गया है। मैग्जीन की प्रधान सम्पादक पूजा एम बंसल ने इस सम्बंध में विश्वविद्यालय को प्रमाण पत्र भी प्रदान किया है। उन्होंने बताया कि जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय को उसकी शीर्ष-स्तरीय शिक्षण गतिविधियों, मूल्यपरक उत्कृष्ट शिक्षा एवं उच्च स्तरीय प्लेसमेंट रिकॉर्ड के आधार पर प्रदान किया गया है। इस विश्वस्तरीय मैग्जीन द्वारा किसी भी संस्थान को उससे सम्बंधित आंकड़ों का उच्च स्तरीय मानकों के आधार पर अध्ययन व विश्लेषण किये जाने के पश्चात ही रिकॉग्नाईजेशन प्रदान किया जाता है। इस मैग्जीन के भारतीय संस्करण में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के बारे में विशेषताओं का एक आलेख भी प्रकाशित किया गया है।

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान

वर्ष-9, अंक-2 एवं वर्ष-10, अंक-1
जुलाई 2017 - जून 2018
(संयुक्तांक)

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
समणी भास्कर प्रज्ञा

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341306
नागौर, राजस्थान
दूरभाष : (01581) 226110 226230
फैक्स : (01581) 227472
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

मूल्यांकन की हर कसौटी पर खरा रहा है जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय

जैन विश्वभारती संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की ओर से जितनी भी बार कोई टीम या कमेटी निरीक्षण के लिये आती है, तो हर बार उनके प्रत्येक मूल्यांकन की कसौटी पर यह संस्थान खरा उतरता रहा है। यह कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ के कुशल नेतृत्व एवं स्टाफ की संयुक्त क्षमता का ही परिणाम कहा जा सकता है कि सभी पूरे मनोयोग से विश्वविद्यालय की निरन्तर प्रगति के लिये कार्यरत रहते हैं और अपने हर दायित्व को बखूबी निभाते हैं।

यूजीसी की 12-बी सम्बंधी एक्सपर्ट की टीम ने फिर अपने निरीक्षण में विश्वविद्यालय की आधारभूत संरचना, उपलब्ध संसाधनों, अध्यापन व अनुसंधान सम्बंधी कार्यों एवं व्यवस्थाओं को सराहनीय बताया है। यह एक उपलब्धि के रूप में गिना जा सकता है। एक्सपर्ट कमेटी की रिपोर्ट भी संस्थान के लिये अनुकूल आई है। संस्थान अब यूजीसी की सिफारिशों के अनुरूप प्राकृत भाषा एवं जैनोलोजी के उत्थान की दिशा में विशेष कार्य कर रहा है तथा नेचुरोपैथी एवं योग थैरेपी के शिक्षण-प्रशिक्षण एवं अनुसंधान व चिकित्सालय के लिये भी विश्वविद्यालय की विशेष योजना बनाई जाकर उसे क्रियान्वित किया जाने का कार्यक्रम चल रहा है।

कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ के नेतृत्व में संस्थान द्वारा जैन विद्या के प्रसार, शोध और जैन विद्या क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं के मद्देनजर अनेक विशेष कदम उठाये गये हैं, जिनमें विभिन्न जैन सम्प्रदायों के जैनाचार्यों से भेंट करने, उन्हें विश्वविद्यालय की योजना से अवगत करवाना और परामर्श करके पाठ्यक्रमों को नवीन स्वरूप प्रदान करने के सम्बंध में खतरगच्छ जैन आचार्य मणिप्रभ सूरीश्वर आदि से मिल कर विचार-विमर्श किया जाना महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार जैन धर्म व दर्शन की प्रगति के लिये विभिन्न जैन संस्थाओं के पदाधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संस्थान में किया गया, जिसके सकारात्मक परिणाम रहे। मातृसंस्था जैन विश्व भारती के साथ मिलकर कोलकाता में संस्थान द्वारा अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में "जैन विद्वत् संगोष्ठी" का आयोजन किया गया। इसमें समसामयिक समस्याओं के समाधान की दिशा में जैन दर्शन के सिद्धांतों की उपयोगिता पर चर्चा हुई तथा जैन विद्या के प्रसार पर विचार किया गया। 21 दिवसीय राष्ट्रीय पांडुलिपि विज्ञान व प्राच्य लिपि विज्ञान कार्यशाला में भी प्राकृत भाषा एवं जैन ग्रंथों पर कार्य करने पर विचार किया गया।

जैन विश्वभारती संस्थान को विश्वस्तरीय खातिप्राप्त पत्रिका "दी नोलेज रिव्यू मैगजीन" ने अपनी समीक्षा में देश के 20 प्रशंसित विश्वविद्यालयों में शुमार किया है और तदर्थ प्रमाण पत्र भी जारी किया है। यह सम्मान इस संस्थान की विभिन्न शीर्ष स्तरीय शैक्षणिक गतिविधियों, मूल्यपरक शिक्षा एवं उच्च स्तरीय प्लेसमेंट रिकार्ड के कारण प्राप्त हुआ है।

संस्थान द्वारा राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से "भारतीय साहित्य में अहिंसा एवं सामाजिक समरसता" विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में अनेक उच्च स्तरीय विद्वानों ने हिस्सा लिया एवं विभिन्न उपविषयों पर 62 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। नई दिल्ली के एनसीईआरटी के सहयोग से संस्थान द्वारा "आईसीटी इंटीग्रेशन इन एजुकेशन एंड लर्निंग" विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। भारत सरकार की ओर से प्रस्तावित "नया भारत-मंथन एवं संकल्प से सिद्धि" कार्यक्रमों के तहत सुधर्मा सभा में विशाल आयोजन किया गया, जिसमें केन्द्रीय मंत्री सी.आर. चौधरी उपस्थित रहे। इन सबके अलावा अनेक कार्यशालायें, शिविर, संगोष्ठियां, प्रतियोगितायें आदि महत्वपूर्ण एवं विशेष उल्लेखनीय कार्य एवं कार्यक्रम संस्थान द्वारा संचालित किये जाते रहे हैं। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में विविध नवीन गतिविधियों एवं नवाचार उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

- समणी भास्कर प्रज्ञा

कोलकाता में 'जैन विद्वत् संगोष्ठी' का आयोजन

जैन जीवनशैली से वैश्विक समस्याओं का समाधान

जैन विश्व भारती एवं जैन विश्वभारती संस्थान के संयुक्त तत्त्वाधान में अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में 14-15 सितम्बर को चातुर्मास प्रवास स्थल राजरहाट कोलकाता में ''जैन विद्वत् संगोष्ठी'' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री कुमारश्रमण एवं संस्थान के कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ के निर्देशन में किया गया। उद्घाटन वक्तव्य में कुलपति बी.आर. दूगड़ ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्याप्त समसामयिक समस्याओं के स्वरूप एवं प्रभावों को बताते हुए उनके समाधान में सहकारी जैनदर्शन के सिद्धान्तों पर विचार रखे तथा समागत विद्वानों से आह्वान भी किया कि वे सभी जैनदर्शन के आलोक में ऐसा समाधान प्रस्तुत करे, जो क्रियान्वित हो सके, जिसे जीवन में उतारा जा सके।

निष्ठा से हो कर्तव्य पालन तो समस्यायें नहीं

आचार्यश्री महाश्रमण ने सभी वक्ताओं की भावनाओं का सार प्रस्तुत करते हुए कहा कि यदि आज का युवा सदाचार पूर्वक जीवन जीता है, हित-मित-परिमित जीवनशैली को अपनाता है तो संसार में समस्यायें स्वतः समाप्त हो जाएगी। आचार्यश्री ने साधना पर बल दिया। प्रथम सत्र के समापन पर आचार्यश्री ने अपने आशीर्वचन में कहा कि यदि प्रत्येक प्राणी अपने कर्तव्यों का निर्वाह पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा से करें तथा साधन एवं साध्य दोनों की शुद्धि का ध्यान रखे तो विश्व में कोई समस्या उत्पन्न ही नहीं होगी। प्रो. के. सी. अग्निहोत्री, प्रो. शुभचन्द्र, प्रो. महावीरराज गेलड़ा, जैनविद्या मनीषी प्रो. दयानन्द भार्गव ने विश्व की सभी समस्याओं के समाधान के लिये जैन जीवनशैली, अणुव्रत, महाव्रत की पालना पर जोर दिया।

जैन विद्या के प्रसार पर विचार

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया गया तथा जैनविद्या के पठन-पाठन, विद्यार्थियों की संख्या तथा जैनविद्या के क्षेत्र में रोजगार के संदर्भ में विचार-विमर्श किया गया। प्रो. भागचन्द्र जैन भास्कर, समणी सुलभप्रज्ञा, समणी अमलप्रज्ञा आदि के पत्रों का वाचन हुआ। संगोष्ठी के तृतीय सत्र में प्रो. धर्मचन्द्र जैन जोधपुर, प्रो. जितेन्द्रभाई शाह, प्रो. वीरसागर जैन, अनेकान्त जैन ने अहिंसा, समानता, सहअस्तित्व एवं जैन जीवनशैली तथा समस्या समाधान प्रस्तुत किये। सभी विद्वानों को संस्थान की ओर से मोमेन्टो भेंट कर उन्हें सम्मानित किया गया।

कॅरियर काउंसलिंग एवं चरित्र निर्माण पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की सहायक निदेशिका नुपुर जैन ने छात्राओं को उच्च शिक्षा हेतु प्रेरित करते हुये अच्छे संस्थान से शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यक बताई। वे राजकीय कन्दोई बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुजानगढ़ में 5 मई, 2018 को आयोजित कॅरियर काउंसलिंग एवं चरित्र निर्माण पर एक विशेष सत्र में बोल रही थी। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में उच्च शिक्षा के लिए जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय से बेहतर कोई विकल्प नहीं हो सकता। इस अवसर पर अभिषेक चारण, रत्ना चौधरी, डॉ. गोविन्द सारस्वत, डॉ. घनश्यामनाथ कच्छावा ने भी संस्थान की विशेषताओं को प्रस्तुत किया। मुमुक्षों बहिनों क्रमशः श्वेता और प्रेक्षा ने अपने अनुभवों को साझा किया।

सुजानगढ़ से निःशुल्क वाहन सुविधा

कार्यक्रम के अन्त में घोषणा की गई कि सत्र 2018-19 में सुजानगढ़ की छात्राओं के लिए निःशुल्क वाहन सुविधा की जायेगी, ताकि बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन मिल सके। इस अवसर पर संस्थान परिवार की ओर से कन्दोई बालिका विद्यालय की प्राचार्य सरोज पूनिया एवं व्याख्याता लक्ष्मण खत्री को संस्थान का प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय शिक्षिका मंजू ढाका द्वारा किया गया।

संस्थान के विद्यार्थियों ने बनाये 5 विश्व रिकॉर्ड

संस्थान ने जहां योग व जीवन विज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में कीर्तिमान कायम किये हैं, वहीं संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के 4 विद्यार्थियों ने एक साथ 5 विश्व रिकॉर्ड बनाकर मिसाल कायम करते हुये संस्थान की कीर्ति को चार चांद लगाये हैं।

विद्यार्थियों द्वारा कायम इन विश्व रिकॉर्ड्स को ''गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड'' में दर्ज किया गया है, जिनके प्रमाण पत्र इन्हें जारी किये हैं। ये चारों विद्यार्थी यहां दूरस्थ शिक्षा निदेशालय से योग एवं जीवन विज्ञान विषय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम कर रहे हैं। इनमें से लक्ष्मणगढ़ (सीकर) के पास के एक छोटे से गांव के रहने वाले जयपाल प्रजापत ने लगातार योगाभ्यास करते हुये दो विश्व रिकॉर्ड कायम किये। जयपाल ने लगातार 2 घंटे 21 मिनट तक शीर्षासन करके विश्व रिकॉर्ड बनाया। यह प्रदर्शन उसने छतीसगढ़ राज्य के भिलाई में किया था। इसके बाद जयपाल ने फिर गुजरात प्रांत के अहमदाबाद में लगातार 3 घंटा 33 मिनट तक मयूर चाल का प्रदर्शन करके दूसरा विश्व रिकॉर्ड बनाया। इसी प्रकार संस्थान के दूसरे विद्यार्थी जोधपुर के रहने वाले ललित भारती ने योग मुद्रा में विश्व रिकॉर्ड बनाया, जिन्होंने लगातार 1 घंटा 35 मिनट तक खेचरी मुद्रा का प्रदर्शन किया।

संस्थान की दूरस्थ शिक्षा की मेड़ता रोड रहने वाली छात्रा जानकी प्रजापति ने भी योगासन में विश्व रिकॉर्ड कायम किया, उसने लगातार 45 मिनट तक हनुमानासन में रहने का प्रदर्शन सफलता पूर्वक किया था। इसी प्रकार चौमूं के रहने वाले रामरस चौधरी ने तेजगति से लगातार एक सौ सूर्य नमस्कारों का प्रदर्शन करके फास्टेस्ट हंड्रेड सूर्यनमस्कार योगा का रिकॉर्ड कायम किया है। चौधरी ने ये एक सौ सूर्य नमस्कार योग मात्र 7 मिनट 32 सैकंड में पूरे किये थे।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इन विद्यार्थियों को पांच विश्व रिकॉर्ड कायम करने के लिये बधाई व शुभकामनायें प्रेषित की है। प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि इन विद्यार्थियों को आगामी दिनों में विश्वविद्यालय में समारोह आयोजित किया जाकर सम्मानित किया जायेगा।

जेवीबीआई इंटरनेशनल स्टार स्टूडेंट अचीवर्स

सिंगापुर से सुजाता चौलगी

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के योग और जीवन विज्ञान विभाग के अंतिम वर्ष मास्टर डिग्री प्रोग्राम की छात्रा सुजाता चौलगी आज विश्व भर में अपने काम की धूम मचा रही है। उसने योग के प्रचार-प्रसार पर व्यापक स्तर पर काम किया है और दुनिया के अनेक देशों में योग प्रशिक्षक तैयार कर दिये हैं। हमें उसकी इस वर्ष की उपलब्धियों को साझा करते हुये गर्व है-

- ☑ जनवरी 2018 में उन्होंने सिंगापुर में विदेशी मामलात मंत्रालय एवं भारतीय उच्चायोग द्वारा आयोजित आसियान के प्रवासी भारतीय दिवस पर वैकल्पिक उपचार एवं एकीकृत औषध पद्धतियों पर एक उच्चस्तरीय पैनल को नियंत्रित किया।
- ☑ इस साल 21 जून को सुजता ने 20,000 से अधिक प्रतिभागियों की उपस्थिति में नई दिल्ली के इंडिया गेट पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आयुष मंत्रालय द्वारा आयोजित मुख्य समारोह में हिंदी में सामान्य योग प्रोटोकॉल का नेतृत्व किया।
- ☑ अकेले वर्ष 2018 में, उन्होंने बड़ी तादाद में योग प्रशिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया, जो उनके द्वारा विकसित किया हुआ और अंतरराष्ट्रीय योग गठबंधन द्वारा मान्यता प्राप्त पेशेवर प्रशिक्षित योग शिक्षकों को विकसित करने के लिए तैयार किया गया था। कुआलालम्पुर एवं मलेशिया में सुजाता द्वारा विकसित पाठ्यक्रम द्वारा प्री-नेटल योग शिक्षक- प्रशिक्षण निर्देशित किया जा रहा है।
- ☑ उन्होंने सिंगापुर में योग शिक्षक के लिए कार्यात्मक शरीर रचना में एक समेकित प्रशिक्षण की भी पेशकश बड़ी संख्या में अंतरराष्ट्रीय छात्रों को की है।
- ☑ उन्होंने थाईलैंड के चियांग माई में सुस्वास्थ्य एवं योग के आवासीय कार्यक्रम का नेतृत्व किया।
- ☑ उसने सिंगापुर में आयुर्वेद, अरोमाथेरेपी और तनाव प्रबंधन पर सेमिनार की पेशकश भी की। वह सुस्वास्थ्य और योग पर नियमित रूप से कॉर्पोरेट प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रदान कर रही है।
- ☑ सुजाता ने सिंगापुर अमेरिकन स्कूल में शिक्षकों और छात्रों के लिए व्यक्तिगत और प्रोफेशनल विकास कार्यक्रम पढ़ा रही है।
- ☑ उसकी एक पुस्तक ''बड़े अंतर के लिये छोटे बदलाव सिर्फ आज से 30 दिनों के लिए'' का प्रकाशन पिछले महिने ही किया गया है। यह योग, ध्यान, पोषण और जीवन शैली में परिवर्तन के आधार पर शरीर और दिमाग के सकारात्मक परिवर्तन के लिए एक व्यापक टिकाऊ कार्यक्रम प्रदान करती है।
- ☑ सुजाता दुनिया की 13 भाषायें बोल सकती है और उनमें शिक्षण-प्रशिक्षण भी करवा सकती है। इस वर्ष उसे संयुक्त राज्य अमेरिका, यूके, जापान, इंडोनेशिया, थाईलैंड, सिंगापुर और भारत सहित दुनिया भर में योगा एवं सुस्वास्थ्य के शिक्षण को बीस साल हो रहे हैं।

कोलकाता में संस्थान का 10वाँ दीक्षान्त समारोह

4427 विद्यार्थियों को उपाधि-पत्र एवं 32 को स्वर्ण पदक प्रदान

संस्थान के10वें दीक्षान्त समारोह का भव्य आयोजन 13 अक्टूबर, 2017 को कोलकाता के राजरहाट में तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता एवं विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में किया गया। दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान के देवस्थान मंत्री राजकुमार रिणवां ने समारोह में कहा जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय केवल किताबी शिक्षा ही नहीं बल्कि विद्यार्थी को उसका जीवन अच्छा बनाने और खुद को बेहतर बनाने की शिक्षा प्रदान कर रहा है। देवस्थान मंत्री ने आचार्य महाश्रमण की सन्निधि को अभिभूत करने वाला बताया तथा कहा कि आदमी आचार्यश्री की शरण में आ जाए तो उसे वास्तविक सुख की प्राप्ति हो सकती है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पश्चिम बंगाल सरकार के उच्च शिक्षामंत्री पार्थ चटर्जी ने आचार्यश्री महाश्रमण के दर्शन कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया।

एकाग्रता, संयम, स्वाध्याय अपनाने पर बल

संस्थान के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने विद्यार्थियों को श्रुत प्राप्ति, एकाग्रचित्त होने, आत्मा को धर्म में स्थापित करने, असंयम को छोड़ संयमित होने, स्वाध्याय में रत रहने, प्रमाद से बचने, आवेश को नियंत्रित करने, सहिष्णुता का विकास करने का संकल्प प्रदान कर उन्हें आध्यात्मिक ऊर्जा के आशीर्वाद से अभिसिंचन किया। अहिंसा को सभी ग्रन्थों का सार बताते हुए उन्होंने कहा कि सभी के साथ मैत्री का भाव रखने का प्रयास करना चाहिए।

अहिंसा व नैतिकता का जीवन जीएँ – कुलाधिपति

विश्वविद्यालय की कुलाधिपति श्रीमती सावित्री जिंदल ने कहा कि पूर्वाचार्यों के प्राप्त आशीर्वाद और वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण के अभिसींचन से यह विश्वविद्यालय मानवता, अहिंसा, नैतिकता के साथ अनुशासनात्मक जीवन जीने की प्रेरणा विद्यार्थियों को प्रदान कर रहा है। हमें गर्व है कि जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय सम्पूर्ण जैन समाज को एक विचारधारा की माला से गूंथ रहा है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि यह विश्वविद्यालय देश के दूसरे विश्वविद्यालयों से इस कारण से अलग है क्योंकि इसकी संस्थापना इस युग के महान् संत, युग-द्रष्टा आचार्यश्री तुलसी ने की। यह संस्थान उनके जैन विद्या के विकास एवं चरित्र-निर्माण के स्वप्न को धरती पर उतारने का सफल मानवीय उपक्रम है। इस विश्वविद्यालय को जैन विद्या के क्षेत्र में अध्ययन, अध्यापन एवं शोध हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान मिली है। उन्होंने विश्वविद्यालय के विकास के संबंध में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि राजस्थान के सुदूरवर्ती गाँवों में भी शिक्षा की अलख जगाने में विश्वविद्यालय संलग्न है तथा अपने दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा समाज के वंचित छात्र-छात्राओं को शिक्षा द्वारा सशक्त बनाने के सामाजिक दायित्व को पूरा करते हुए पूरे देश में सकल प्रवेश अनुपात की अभिवृद्धि के शासकीय संकल्प को पूरा करने के लिए भी सशक्त प्रयत्न कर रहा है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि लाडनूँ विधायक ठाकुर मनोहर सिंह ने कहा मेरे लिए यह गौरव की बात है कि आज जैन विश्वभारती के कारण लाडनूँ को पूरा विश्व जानने लगा है।

अहिंसा यात्रा के प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमण और जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय के प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, कोलकाता चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कमलकुमार दूगड़ ने भी विचाराभिव्यक्ति दी।

विद्यार्थियों को उपाधियों व स्वर्ण पदकों का वितरण

दीक्षांत समारोह में नियमित स्नातक के 213, स्नातकोत्तर के 64, पी-एच.डी. के 35, डी.लिट्. के 2, दूरस्थ शिक्षा स्नातक के 1971 व स्नातकोत्तर के 2110 विद्यार्थियों सहित कुल 4427 विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की गईं। इस दौरान कुल 32 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक भी प्रदान किये गए। उपाधियां व पदक कुलाधिपति श्रीमती सावित्री जिंदल, कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, जैन विश्वभारती के अध्यक्ष रमेशचंद बोहरा, राजस्थान के देवस्थान मंत्री राजकुमार रिणवा व लाडनूं विधायक ठाकुर मनोहर सिंह द्वारा प्रदान किये गए।

विश्वविद्यालय को एक करोड़ का चैक भेंट

दीक्षांत समारोह के दौरान जैन विश्व भारती के अध्यक्ष रमेशचंद बोहरा द्वारा जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) को एक करोड़ रूपये का चैक भी प्रदान किया गया। समारोह का संयोजन कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने किया।

जैविभा संस्थान का 28वां स्थापना दिवस समारोह

हट कर सोचें व समस्या का समाधान निकालें- कुलपति

संस्थान के 28वें स्थापना समारोह में 20 मार्च, 2018 को अध्यक्षता करते हुए संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि कुछ अलग हट कर सोचें और हर समस्या का हल निकालें। उन्होंने इस अवसर पर बताया कि संस्थान में शीघ्र ही योग व नेचुरोपैथी कॉलेज खोले जाने, जैन विद्याओं के विकास के लिये कोर्स शुरू करने, मूक कोर्सेस एवं ओपन सोर्सेस कोर्स शुरू करने आदि बड़े कामों की चुनौतियां हैं, जिन्हें वे अपने स्टाफ के साथ मिल कर संभव बनायेंगे। उन्होंने कहा समणी वृंद की शक्ति इसमें सहायक सिद्ध होगी।

समारोह में प्रख्यात शनि धाम दिल्ली के महामण्डलेश्वर दाती महाराज ने 'बेटी-बचाओ, जल बचाओ, राष्ट्र बचाओं' का आह्वान किया तथा जैन विश्वभारती को आचार्य तुलसी, महाप्रज्ञ, महाश्रमण की तपोभूमि बताया। समणी नियोजिका समणी चारित्रप्रज्ञा ने सिर्फ ज्ञान के प्रति समर्पण के बजाये आचार, ध्यान व जीवन के आनन्द के प्रति आकर्षण को आवश्यक बताया। विशिष्ट अतिथि डॉ. धर्मचंद लूंकड़ ने मंगलकामनायें दी।

कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। डॉ. युवराज सिंह खांगारोत ने संस्थान की विशेषताओं के बारे में एवं विशाल पुस्तकालय, स्मार्ट क्लासेस, लैंग्वेज लैब, डिजीटल स्टुडियो, भगवान महावीर अन्तर्राष्ट्रीय शोध केन्द्र, महादेव लाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ आदि के बारे में बताया। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया एवं अतिथियों का परिचय दिया। समारोह में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष रमेश चंद बोहरा व ट्रस्टी भागचंद बरड़िया विशिष्ट अतिथि थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने बांधा समां

द्वितीय चरण में सुधर्मा सभा में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने देश प्रेम, सामाजिक जागरूकता, राजस्थानी-पंजाबी व गुजराती संस्कृति के विविध रंग बिखेरती मनभावन प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम में एनसीसी की छात्राओं ने विशेष नृत्य प्रस्तुत किया। समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों ने देशभक्ति पूर्ण नाट्य की प्रस्तुति दी। प्रीति एवं समूह ने 'बेटी बचाओ' थीम को साकार किया। सरिता एवं समूह ने 'पढेगा इंडिया तो बढेगा इंडिया' पर एक नाटक प्रस्तुत किया। हेमलता एवं समूह ने राजस्थानी गीत पर सामूहिक नृत्य, जीवन विज्ञान एवं योग विभाग के विद्यार्थियों ने विभिन्न योगासनों एवं योग क्रियाओं का शानदार प्रदर्शन किया। पूजा टाक एवं समूह के द्वारा नृत्य, अमिता एवं समूह के द्वारा पंजाबी नृत्य, अम्बिका एवं समूह के द्वारा गरबा नृत्य, प्रियंका एवं समूह घूमर नृत्य, महिमा एवं समूह सामूहिक के द्वारा नृत्य, सानिया छींपा एवं समूह के द्वारा नृत्य की कलात्मक प्रस्तुतियां दी गई। अंग्रेजी विभाग के विद्यार्थियों ने इंसान और टेक्नोलॉजी पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने एनसीसी की छात्राओं मानसी बुगालिया, जसोदा सींवर एवं रेणुका चौधरी को रेंक प्रदान की।

कार्यक्रम के अंत में शोध निदेशक प्रो. अनिलधर ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में भाजपा बेटी बचाओ बेटी पढाओ अभियान की जिला संयोजक सुमित्रा आर्य, भाजपा शहर अध्यक्ष हनुमान मल जांगिड़, महामंत्री लूणकरण शर्मा, भारत विकास परिषद के अध्यक्ष सुशील कुमार पीपलवा, पार्षद अंजना शर्मा, रमेश सिंह राठौड़, ललित कुमार वर्मा, देवाराम पटेल, धनराज वर्मा, कै. असगर खां आदि उपस्थित थे।

विद्यानिधि सम्मान व अन्य सम्मान

कार्यक्रम में संस्थान की ओर से इस वर्ष का विद्यानिधि सम्मान शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन को प्रदान किया गया। मंत्रालयिक कर्मचारियों के सम्मान में विजयकुमार शर्मा और रमेश सोनी को सम्मानित किया गया। डी श्रेणी कर्मचारियों के सम्मान में नगद पुरस्कार प्रदान किया गया तथा श्रेष्ठ विद्यार्थी अवार्ड स्नातक वर्ग में ज्योति नागपुरिया को और स्नातकोत्तर वर्ग में निशा सोनी को दिया गया। इस मौके पर छात्राओं ने राजस्थानी घूमर पर नृत्य की प्रस्तुति देकर दर्शकों को भावविभोर किया।

कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय में आयोजित हुए खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के विजेता रहे विद्यार्थियों को पुरस्कारों का वितरण कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा हेमलता शर्मा व दीप्ति दूगड़ ने किया।

प्राकृत, जैनोलॉजी, नेचुरोपैथी, जीवन विज्ञान क्षेत्र में अनुसंधान व प्रगति में लगा है विश्वविद्यालय - कुलपति

यूजीसी की 12-बी संबंधी एक्सपर्ट टीम ने कुलपति के साथ औपचारिक बैठक आयोजित की और उसके बाद संस्थान के प्रस्तुतिकरण के लिये आयोजित बैठक में शोध निदेशक प्रो. अनिल धर द्वारा पीपीटी के माध्यम से संस्थान की समस्त गतिविधियों के बारे में टीम को संक्षेप में जानकारी दी गई।

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने यूजीसी की एक्सपर्ट टीम के समक्ष इस प्रस्तुतिकरण बैठक में विश्वविद्यालय की विशेषताओं के बारे में बताते हुये कहा कि अनेकांत एवं अहिंसा तथा मानवता के लिये शांतिपूर्ण सहअस्तित्व एवं सहिष्णुता पर बल देने एवं श्रामणिक संस्कृति के उच्च आदर्शों को बढावा देने तथा मानव जाति के लिये सही आचरण व ज्ञान के प्रसार पर पूरा जोर दिया गया है। यह संस्थान प्राकृत भाषा और साहित्य, पाली, संस्कृत, अपभ्रंश, जैनोलोजी एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन के अध्ययन, ज्योतिष, मन्त्रविद्या, अवधान विद्या, योग और साधना, आयुर्वेद, नेचुरोपैथी, रंग थैरेपी, चुंबक थेरेपी, जीवन विज्ञान और प्रेक्षा ध्यान के क्षेत्र में ज्ञान के अनुसंधान और प्रगति में लगा हुआ है। उन्होंने कहा कि यह संस्थान ग्रामीण राजस्थान के गरीबी से छुटकारा दिलवाने और पिछड़े क्षेत्र की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने का महान कार्य भी कर रहा है।

इसके अलावा इस विश्वविद्यालय ने सामाजिक सद्भावना, महिला शिक्षा, वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति को लोकप्रिय बनाने और विशेष रूप से योग-विज्ञान और ध्यान में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में छात्रों के लिये बुनियादी सुविधायें, उत्कृष्ट केंन्द्रीय पुस्तकालय और रिप्रोग्राफिक सुविधाएं, केंद्रीकृत और विभागीय कंप्यूटर प्रयोगशालाएं, उच्च शोध और गुणवत्तायुक्त अनुसंधान, प्रकाशन, उत्कृष्ट प्लेसमेंट रिकार्ड, कुशल दूरस्थ शिक्षा का संचालन, पिछड़े क्षेत्र के सामाजिक दृष्टि से वंचित वर्ग की लड़कियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने और आसपास के करीब आधे दर्जन पास के गांवों में कुशलता से संगठित विस्तार सेवाओं की पूर्ति करता है।

तीन दिवसीय दौरे में शामिल एक्सपर्ट टीम के सदस्य

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की पांच सदस्यीय एक्सपर्ट कमेटी ने यहां जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) का तीन दिवसीय (12-14 मार्च) दौरा किया। इस टीम में कमेटी-अध्यक्ष कटक की रवेनशॉ युनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. प्रकाश सी. सरावगी सहित कुल पांच सदस्य शामिल थे, जिनमें जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के जाकिर हुसैन एज्युकेशन स्टडी सेंटर की प्रो. मिनाती पांडा, यूजीसी की सचिव सुरेश रानी, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के समाज विज्ञान के पूर्व डीन प्रो. गणेश कावडिया व डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के रिसर्च डीन प्रो. आर.के.एस. धाकरे सम्मिलित थे।

कमेटी के अध्यक्ष ने सराहा

बैठक में कुलसचिव वी.के. कक्कड़, प्रो. आर.के. यादव, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा, डॉ. समणी अमलप्रज्ञा, डॉ. श्रेयस प्रज्ञा, डॉ. समणी मल्लिप्रज्ञा, डॉ. समणी कुसुम प्रज्ञा, डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, डॉ. पी. सिंह, डॉ. जुगल किशोर दाधीच, डॉ. बी. प्रधान, प्रो. बी.एल. जैन, डॉ. गोविन्द सारस्वत, आर.के. जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी आदि उपस्थित थे। इस टीम ने विश्वविद्यालय के जैनोलोजी विभाग, जीवन विज्ञान विभाग, समाज कार्य विभाग, प्राकृत एवं संस्कृत भाषा विभाग, अहिंसा व शांति विभाग, अंग्रेजी विभाग, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय आदि का निरीक्षण किया एवं पूर्ण जानकारी प्राप्त की।

इस दल ने विश्वविद्यालय की आधारभूत संरचना व उपलब्ध संसाधनों तथा अध्यापन व अनुसंधान सम्बंधी कार्यों एवं व्यवस्थाओं का जायजा लिया ताकि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) अधिनियम के सेक्शन 12-बी के तहत जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के विकास व आवश्यकताओं के अनुसार अनुदान की उपयोगिता एवं स्वीकृति दिये जाने के सम्बंध में अपनी रिपोर्ट तैयार की जा सके।

यूजीसी 12-बी एक्सपर्ट टीम के अध्यक्ष प्रो. प्रकाश सारंगी ने विश्वविद्यालय की गतिविधियों को सराहनीय बताया। विश्वविद्यालय में टीम के सभी सदस्य अतिथियों का स्वागत-सम्मान कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, जैन विश्वभारती के अध्यक्ष रमेश चन्द बोहरा, पूर्व अध्यक्ष धर्मचंद लूंकड़, डॉ. अमिता जैन व डॉ. पुष्पा मिश्रा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वन्दना कुंडलिया ने किया।

भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध लोक कलाकार मानसी सिंह ने भवाई नृत्य तथा घूमर नृत्य में रोमांचक व रोंगटे खड़े कर देने वाले करतब प्रदर्शित किये। कार्यक्रम के शुभारम्भ पर मानसी सिंह 'केसरिया बालम आवो नीं पधारो म्हारे देश' गीत पर नृत्य प्रस्तुत किया तथा गणगौर पर्व के प्रसिद्ध गीत एवं 'पीली लूगड़ी रा झाला' आदि प्रख्यात राजस्थानी लोकगीतों व लोकनृत्यों से समस्त दर्शकों का मन मोहा। कार्यक्रम में मानसी सिंह के अलावा विश्वविद्यालय की छात्राओं हेमलता एवं समूह, पूजा एवं समूह, सिद्धि पारीक, अमिता एवं समूह, मुमुक्षु बहिनें, रागिनी शर्मा आदि ने अपनी प्रस्तुतियां दी। प्रस्तुत कार्यक्रमों में राजस्थानी लोकनृत्य, राजस्थानी पैरोडी, समूह नृत्य, क्लासिकल डांस, माईम, ड्रामा आदि पेश किये, जिन्हें समस्त उपस्थित दर्शकों व यूजीसी एक्सपर्ट टीम के सदस्य अतिथियों ने मुक्त कंठों से सराहा तथा कलाकारों को मंच पर बुलाकर उनके साथ अपने फोटो साझा किये। कार्यक्रम में महिलाओं के खिलाफ अपराध पर छात्राओं ने नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की गई। सिद्धि पारीक ने कालबेलिया नृत्य आदि प्रस्तुत किये। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने योगासनों एवं योग के विभिन्न प्रयोगों का प्रदर्शन करके सबको मोहित किया।

नया भारत-मंथन कार्यक्रम में केन्द्रीय मंत्री ने करवाया सामुहिक शपथ ग्रहण

श्रेष्ठ व समृद्ध भारत बनाने के लिये संकल्प पूर्वक करें लक्ष्य सिद्धि- चौधरी

केन्द्रीय खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामलात मंत्री सी.आर. चौधरी ने आह्वान किया है कि सभी मिल कर भारत को एक श्रेष्ठ राष्ट्र, स्वच्छ, स्वस्थ, समृद्ध, शक्तिशाली शांत व अच्छा भारत बनाने के लिये आगामी पांच सालों में संकल्प पूर्वक लक्ष्यसिद्धि में योगदान करें। वे यहां जैन विश्व भारती संस्थान के तत्वावधान में 19 अगस्त को नया भारत-संकल्प से सिद्धि अभियान के तहत सुधर्मा सभा में आयोजित नया भारत-मंथन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर नया भारत-संकल्प से सिद्धि की सबको सामुहिक रूप से शपथ ग्रहण करवाई। केन्द्रीय मंत्री ने आजादी की लड़ाई से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक और अब 2017 से 2022 तक के पांच सालों के संकल्प का विवरण प्रस्तुत किया।

केन्द्रीय मंत्री चौधरी ने विभिन्न लाभदायक योजनाओं तथा मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्टेंड अप आदि के बारे में बताया तथा कहा कि तकनीकी शिक्षा और उच्च शिक्षा के लिये जीएआईएन (ज्ञान) योजना के तहत शिक्षकों की कमी को देखते हुये विदेशों से विद्वानों को बुलाया जा रहा है। केन्द्रीय मंत्री ने बताया कि केन्द्र सरकार ने हर वर्ग के लिये योजना तैयार की है और इस समय 105 योजनायें ऐसी हैं, जिनसे हर वर्ग कोई न कोई लाभ उठा रहा है।

लक्ष्य निर्धारित कर करें देश के लिये योगदान

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा, आजादी के बाद से अब तक अनेक समस्यायें और मुद्दे हैं, जिनका समाधान किया जाना आवश्यक है। इसे देखते हुये लगता है कि देश का यथार्थ विकास नहीं हुआ और इसी कारण नया भारत-मंथन का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने हर व्यक्ति से देश के लिये अपने दायित्व को पूरा करने की आवश्यकता बताई तथा कहा कि हमें देश के प्रति शपथ लेना है, नया भारत मंथन पर विचार करना है तथा किसी भी एक मुद्दा, चाहे वह भ्रष्टाचार हो, गरीबी हो, स्वच्छता हो, उनमें से एक के हल के लिये अपने स्तर पर प्रयास करना है। विशिष्ट अतिथि सागरमल नाहटा ने देश को अपराध मुक्त, नशा मुक्त और स्वच्छ भारत बनाने की दिशा में सबके सहयोग की कामना की।

मेहनत ही है सफलता की चाबी

कार्यक्रम में मुनि स्वस्तिक कुमार ने अपने उद्‌बोधन में मेहनत को जीवन की सफलता की चाबी बताते हुये कहा, संकल्प से ही सिद्धि संभव है। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन के बारे में बताया और कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की योजनाएँ हमें लगता है कि अध्यात्म से प्रेरित है। उन्होंने आतंकवाद को मिटाने के लिये जन-जन में शिक्षा को बढावा देने की आवश्यकता बताई। विधायक मनोहर सिंह ने प्रधानमंत्री मोदी के आह्‌वान पर नये भारत के निर्माण के लिये सबके सहयोग की जरूरत बताई। कार्यक्रम के प्रारम्भ में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत भाषण पेश किया। केन्द्रीय मंत्री सी.आर. चौधरी का स्वागत जैन विश्व भारती के ट्रस्टी भागचंद बरड़िया ने उन्हें शॉल ओढाकर एवं स्मृति चिह्न भेंट करके किया। प्रो. बी.एल. जैन, प्रो. दामोदर शास्त्री, वित्ताधिकारी राकेश जैन व डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने भी अन्य अतिथियों का स्वागत शॉल व स्मृति चिह्न प्रदान करके किया। समारोह में भाजपा जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश मोदी व भागचंद बरड़िया विशिष्ट अतिथि थे।

विजेताओं को पारितोषिक वितरण

नया भारत संकल्प से सिद्धि अभियान के तहत विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे छात्रों को समारोह में केन्द्रीय मंत्री सी.आर. चौधरी द्वारा सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अमिता जैन ने घोषणा की कि वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम सुमन मंडा, द्वितीय करूणा शर्मा व सुनीता सहजवानी, तृतीय मुमुक्षु आरती रही। रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम गुंजन जांगिड व ग्रुप, द्वितीय सरिता यादव व ग्रुप एवं करूणा शर्मा व ग्रुप रहे तथा तृतीय स्थान पर सरिता फिरौदा रही। पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता में प्रथम पारूल दाधीच व प्रवीण कंवर रही। द्वितीय स्थान पर योगिता शर्मा व तृतीय स्थान पर वत्सला रही। सभी विजेता विद्यार्थियों को पारितोषिक प्रदान किये गये। समारोह में भाजपा सहकारिता प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक जगदीश सिंह राठौड़, भाजपा जिला मंत्री नीतेश माथुर, भाजपा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान की जिला संयोजक सुमित्रा आर्य, महावीर ओझा, प्रेमाराम रैवाड़, सरपंच पदम सिंह रोडू, श्यामसुन्दर पंवार, हरदयाल रूलानियां, भाजपा मंडल अध्यक्ष ओमप्रकाश बागड़ा, हनुमान मल जांगिड़ आदि उपस्थित थे।

जैन विद्या के सूत्रों से बदल सकता है जीवन- प्रो. दूगड़

इंटरनेशनल समर स्कूल ऑन जैनिज्म का 21 दिवसीय कोर्स

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है, जैन विद्या में अनेक ऐसे सूत्र हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को पूरी तरह से बदल सकता है। विद्यार्थी सुदूर से चल कर यहां जैन विद्या सीखने के लिये निरन्तर आते रहते हैं और वे उन्हें न केवल अपने जीवन में उतारते हैं, बल्कि उनसे दूसरे लोग भी प्रभावित होते हैं। वे यहां महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ तथा जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 23 जुलाई से 12 अगस्त, 2018 तक आयोजित 21 दिवसीय इंटरनेशनल समर स्कूल प्रोग्राम ऑन अंडरस्टेंडिंग जैनिज्म के कोर्स के समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होनें प्रोग्राम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों से कहा कि वे यहां पर जो कुछ सीखा है, उसे अपने जीवन में उतारें और अपने अनुभवों को देश में जाकर अन्य विद्यार्थियों को भी बतावें और उन्हें भी प्रेरित करें कि वे अगले इंटरनेशनल समर स्कूल में यहां आकर अवश्य भाग लेवें। उन्होंने इस अवसर पर प्रोग्राम में भाग लेने वाले घेंट यूनिवर्सिटी बेल्जियम की छात्राओं केटो फ्रेंकी व नैकी रिटा को प्रमाण पत्र प्रदान किये।

इस अवसर पर शोध पीठ की निदेशक समणी ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि पिछले 11 सालों से अनेकांत शोध पीठ के तत्वावधान में इंटरनेशनल समर स्कूल प्रोग्राम संचालित किया जा रहा है, जिसमें विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लेकर जैन विद्या को सीखा है। उन्होंने विद्यार्थियों से सीखने के बाद अपने देश में इसका प्रचार करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संयोजन पीठ के सहायक निदेशक डॉ. योगेश जैन ने किया।

जैन विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम संस्कार निर्माण में उपयोगी - आचार्यश्री मणिप्रभ सूरीश्वर

जैन आचार्यों से सम्पर्क कार्यक्रम

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने 22 अक्टूबर को खतरगच्छ जैन आचार्य मणिप्रभ सूरीश्वर के सान्निध्य में बीकानेर में आयोजित एक कार्यक्रम में कहा कि संस्थान के सभी पाठ्यक्रमों के केन्द्र में मूल्य है। आचार्यश्री तुलसी इस विश्वविद्यालय के प्रेरणा स्रोत थे, उनका मानना था कि यह विश्वविद्यालय अन्य विश्वविद्यालयों से अलग होना चाहिए और संस्कार निर्माण की प्रधानता होनी चाहिए। इसलिए इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य जीविकोपार्जन की शिक्षा के साथ जीवन निर्माण की शिक्षा है। संस्थान में जैन विद्या से सम्बन्धित त्रैमासिक उपयोगी प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम भी शुरू किये जा रहे हैं, जिसमें जैन वास्तु, जैन गणित, जैन प्रबन्धन, जैन ज्योतिष, जैन शिक्षा, जैन संस्कृति आदि प्रमुख है। उन्होंने कहा कि चूंकि जैन विश्वभारती संस्थान अपनी तरह का दुनिया का प्रथम विश्वविद्यालय है, अतः संस्थान की योजना है कि सभी जैन सम्प्रदाय के आचार्यों के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित कर उनके सुझावानुसार संस्थान के विकास को गति दी जाये। इस अवसर पर संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने संस्थान के नियमित एवं पत्राचार पाठ्यक्रमों का परिचय देते हुए बताया कि महिला शिक्षा के लिए यह संस्थान उत्कृष्ट है।

विश्वविद्यालय के संरक्षण, सम्पोषण व संवर्द्धन के लिये आगे आयें

अन्त में आचार्यश्री मणिप्रभ सूरीश्वर ने कहा कि यह जैन विश्वविद्यालय है, इसलिए सभी जैन समाज को इसके संरक्षण, सम्पोषण एवं सम्वर्द्धन में आगे आना चाहिए। यहां के पाठ्यक्रम जैन मूल्यों को समाहित किये हुए है, इसलिए संस्कार निर्माण में उपयोगी है। उन्होंने आगे कहा कि इस विश्वविद्यालय ने सभी सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों के लिए अध्ययन की उत्तम व्यवस्था दी है, उसका लाभ हमारे साधु-साध्वियों ने खूब उठाया है। कार्यक्रम के बाद कुलपति प्रो. दूगड़ और आचार्यश्री के मध्य मूल्यपरक शिक्षा को लेकर विचार विमर्श हुए, उसमें कई नवीन एवं उपयोगी तथ्य निकल कर आये, जो संस्थान के पाठ्यक्रमों को भविष्य में नया रूप दे सकेंगे।

उपखंड स्तरीय योग समारोह आयोजित

योग जीवन को बदलने वाली क्रिया- मुनि जयकुमार

विश्व योग दिवस के अवसर पर 21 जून को जैन विश्व भारती स्थित अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षा केन्द्र भवन में उपखंड स्तरीय योग समारोह में योग की विभिन्न क्रियायें, आसन, ध्यान व प्राणायाम आदि का सामूहिक अभ्यास करवाया गया। जैविभा विश्वविद्यालय, उपखंड प्रशासन एवं जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्वावधान में एवं जैन मुनि जयकुमार के सान्निध्य में आयोजित इस योग समारोह की अध्यक्षता जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने की तथा मुख्य अतिथि विधायक मनोहर सिंह थे। मुनिश्री जयकुमार ने अपने सम्बोधन में कहा कि योग जीवन को बदलने वाली प्रक्रिया है। ध्यान व योग-साधना नियमित किये जाने पर ही उसके परिणाम सामने आते हैं।

योग से होती है चित्त की यात्रा

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि योग जहां शारीरिक स्वास्थ्य का लाभ देता है, वहीं योग से मन एवं चित्त को भी साधा जा सकता है। इससे चित्त की यात्रा भी संभव होती है। विधायक मनोहर सिंह ने इस अवसर पर योग को बढ़ावा देने की आवश्यकता बताई। उपखंड अधिकारी रामसिंह राजावत ने योग को विश्व स्तर पर मिली मान्यता को भारतीय संस्कृति की विजय बताया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने अंत में आभार ज्ञापित किया।

योग समारोह में विश्वविद्यालय के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने सभी सम्भागियों को यौगिक क्रियायें, योगासन, ध्यान, प्राणायाम आदि के अभ्यास करवाये। इस अवसर पर तहसीलदार आदूराम मेघवाल, ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी श्याम सिंह चौहान, आयुर्वेद अधिकारी डॉ. जे.पी. मिश्रा, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी तथा क्षेत्र के सरकारी विभागों के अधिकारी व कर्मचारी एवं नागरिक गण ने सामूहिक योगाभ्यास किया।

संस्थान में मुख्यमंत्री का स्वागत

कुलपति ने किया वसुंधरा राजे का सम्मान

मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे 3 मई को नहरी जल परियोजना का शुभारम्भ करने लाड़नूं पहुंची तथा उन्होंने रात्रि विश्राम यहां शुभम् गेस्ट हाउस में किया। इससे पूर्व सायं उनके यहां पहुंचने पर जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उनका शॉल ओढ़ा कर सम्मान किया। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के ट्रस्टी भागचंद बरड़िया व जीवन मल मालू भी थे।

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ एवं श्री भागचन्द बरड़िया ने मुख्यमंत्री से डूंगर रोड़ से नेशनल हाईवे को जोड़ने वाली सड़क को चौड़ा करने एवं केम्पस में मीठे पानी की आवश्यकता से अवगत करवाया। इसके लिए मुख्यमंत्री ने संबंधित अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिये।

नवाचार के साथ पाण्डुलिपि संरक्षण वर्तमान की आवश्यकता-कुलपति

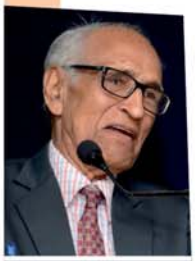

संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग व प्राच्य विद्या एवं भाषा विभाग के तत्वावधान में 21 दिवसीय पाण्डुलिपि विज्ञान एवं लिपिविज्ञान विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 25 नवम्बर से 15 दिसम्बर, 2017 तक किया गया। कार्यशाला के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि आज शिक्षा में हर जगह नवाचार का उपयोग हो रहा है, ऐसे में पाण्डुलिपि जैसे परम्परागत ज्ञान के लिए भी नवाचार की आवश्यकता है। उन्होंने कहा देश में लाखों पाण्डुलिपियां विद्यमान है जिनमें से मात्र दस प्रतिशत पाण्डुलिपियों पर ही काम हो पाया है, प्रकाशन तो इससे भी कम हुआ है। जरूरत है कि पाण्डुलिपि संरक्षण एवं संपादन के प्रति विद्वज्जन नई तकनीकों का प्रयोग करते हुए अपना योगदान दें। प्रो. दूगड़ ने पाण्डुलिपि के विकास के लिए तीन बातों को महत्वपूर्ण बताया, जिनमें पाण्डुलिपियों के संग्रह और प्रकाशन एवं नये शोधार्थी तैयार हो। प्रो. दूगड़ ने बताया कि आने वाले समय में इस विश्वविद्यालय में प्राकृतिक चिकित्सा कॉलेज एवं प्राच्य विद्याओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लखनऊ के प्रो. के.के. थापलिपाल ने पाण्डुलिपि ज्ञान एवं गुप्तकालीन लिपियों को समझाते हुए पाण्डुलिपि मिशन को रेखांकित किया। कार्यशाला की निदेशिका

प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए उनका परिचय दिया। प्राकृत एवं संस्कृत भाषा विभाग की अध्यक्ष डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने 21 दिवसीय कार्यशाला का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में समणी सुयशनिधि, कुलदीप शर्मा, समणी स्वर्णप्रज्ञा आदि ने अपने अनुभव सुनाये। इस अवसर पर देश भर से आये विद्वानों को प्रमाण पत्र, प्रतीक चिन्ह् एवं साहित्य भेंट कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज एवं आभार ज्ञापन डॉ. योगेश कुमार जैन ने किया। कार्यशाला में 40 विद्वानों एवं 65 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया।

पाण्डुलिपि संरक्षण से धरोहर, संस्कृति एवं इतिहास सुरक्षित-प्रो. दूगड़

इससे पूर्व कार्यशाला के शुभारम्भ समारोह की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि पाण्डुलिपि संरक्षण धरोहर, संस्कृति व इतिहास को सुरक्षित रखने का विशिष्ट कार्य है। इससे ज्ञान के नये-नये क्षितिज उद्भव कर सकते है। उन्होंने बताया कि भारत में 3 मिलियन पाण्डुलिपियों को संरक्षित किया गया है, जो विश्व के अन्य किसी देश में नहीं है। ज्ञान के विस्तार की मीमांसा करते हुए उन्होंने सिद्धांत, शास्त्र एवं व्यवहार को लिपि विकास का प्रमुख आधार बताया तथा पाण्डुलिपि, लिपि संरक्षण एवं ज्ञान के विकास के विविध माध्यमों पर प्रकाश डाला। उन्होंने पाण्डुलिपि संरक्षण के प्रति जागरूकता की आवश्यकता बताते हुए कहा कि विश्वभर की करीब पांच हजार भाषाओं में से लगभग ढ़ाई हजार भाषायें ही सुरक्षित रह पायी है, यह चिंतनीय पहलू है।

इतिहास लेखन में पांडुलिपियां महत्वपूर्ण

मुख्य अतिथि वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच ने कहा कि इतिहास लेखन में पाण्डुलिपि का बहुत बड़ा योगदान होता है। विशिष्ट अतिथि नेशनल मिशन फॉर मैनुस्क्रीप्टस के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. श्रीधर बारीक ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा पाण्डुलिपि संरक्षण के लिए किये जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। प्रो. दामोदर शास्त्री ने पाण्डुलिपि संरक्षण के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए जैन परम्परा में पाण्डुलिपि व लिपि संरक्षण के योगदान को रेखांकित किया।

विद्वज्जन को प्राचीन विद्याओं का गहन प्रशिक्षण

कार्यशाला में देश भर से समागत विद्वज्जन ने तल्लीनता के साथ प्राचीन लिपियों व पांडुलिपियों का गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। बनारस से बाह्मी लिपि का प्रशिक्षण देने पहुंची डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन ने प्रशिक्षणार्थियों को सम्राट अशोक की शिक्षाओं को बताने वाली ई.पू. की बाह्मी लिपि की वर्णमाला का सरल प्रशिक्षण दिया। डॉ. श्रीधर बारीक ने कश्मीर की प्राचीन लिपि शारदा लिपि का विस्तृत प्रशिक्षण दिया। उदयपुर के प्रो. जिनेन्द्र जैन ने पाण्डुलिपियों के इतिहास को रेखांकित करते हुए पाण्डुलिपि को कैसे पढें, का प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला के प्रमुख वक्ता लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. के.के. थापलियाल ने ब्राह्मी लिपि के प्रागैतिहासिक काल, ऐतिहासिक काल, मध्यकाल, आधुनिक काल में ब्राह्मी लिपि के स्वरूप व लेखन कला के परिवर्तन पर प्रकाश डाला तथा ब्राह्मी की वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर की बनावट का वैज्ञानिक आधार भी बताया।

कार्यशाला के संयोजक डॉ. योगेश कुमार जैन ने पाण्डुलिपियों के संपादन की विद्या से अवगत करवाया। उन्होनें भारत की 64 लिपियों का परिचय करवाते हुए देवनागरी, ब्राह्मी एवं शारदा लिपियों के अन्तर को समझाया। प्रो. दामोदर शास्त्री ने संपादन एवं अनुवाद की सावधानियों पर प्रकाश डालते हुए प्राचीन भारत में बौद्धग्रन्थ ललित विस्तार के अनुसार ब्राह्मी, खरोली, पुष्करसारी, अंतलिपि, द्रविड, चीनी, हूण आदि 64 लिपियों का परिचय करवाया। प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने पाण्डुलिपियों के संदर्भ में साहित्य के प्रमुख तत्त्वों एवं साहित्य की विद्याओं से अवगत करवाया।

भाषा के व्याकरण नियमों पर चर्चा

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र मोहन मिश्र ने कार्यशाला में पाण्डुलिपियों का इतिहास बताते हुये तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक शोध की विधाओं पर चर्चा की। कार्यशाला में डॉ. उत्तम सिंह ने कहा, पाण्डुलिपि ग्रंथों की असुरक्षा कहीं न कहीं हमारी सांस्कृतिक धरोहर को नेस्तनाबूत कर रही है। प्रो. समणी कुसुम प्रज्ञा ने जैन

अन्तर्राष्ट्रीय योग एवं ध्यान
कार्यशाला के सम्भागियों के साथ बैठक

अहिंसा व शांति का शिक्षण-प्रशिक्षण विश्वविद्यालय की विशेषता- प्रो. दूगड़

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है वर्तमान में पूरे विश्व में हिंसा का बोलबाला है और ऐसे में अहिंसा व शांति को लेकर एक अलग विश्वविद्यालय का होना अपने आप में विश्व की एक अनोखी बात कही जा सकती है, लेकिन यहां जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में अहिंसा व शांति का अलग विभाग बना हुआ है और अहिंसा का शिक्षण-प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है एवं उच्च स्तर की डिग्री प्रदान की जाती है। योग व जीवन विज्ञान भी इस विश्वविद्यालय की विशेषता है तथा इस पर यहां शोध कार्य भी निरन्तर चल रहा है। वे यहां योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के तत्वावधान में अमेरिका के इंटरनेशनल स्कूल फॉर जैन स्टडीज के सम्भागियों के साथ 21 जुलाई को आयोजित बैठक को सम्बोधित कर रहे थे।

अमेरिका की डा. एना लूरा फनेस ने उनसे पाठ्यक्रमों की जानकारी ली और कहा कि यहां की विशेषताओं से वे बहुत प्रभावित हुई हैं। अन्य संभागियों ने भी विश्वविद्यालय के कैम्पस को मनभावन व सुहावना बताया तथा कहा कि वे अगली बार कई दिनों का कार्यक्रम बनाकर यहां आयेंगे और पूरा लाभ उठायेंगे। इस अवसर पर कुलपति प्रो. दूगड़ ने सभी सम्भागियों को स्मृति चिह्न प्रदान किये तथा रजिस्ट्रार वी.के. कक्कड़ व योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने सभी को विश्वविद्यालय का साहित्य भेंट किया। बैठक में एल्बा, जूलिया कासजा, मेगान एलिजाबेथ, बेरिया माल्वे, जैकलीन, एलेक्जेंड्रा, मार्ग्रेट मेरिन, कायोकिन, मेघा जैन, डॉ. मुग्धा यावलेकर, सौरभ यावलेकर आदि उपस्थित थे।

सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये सहनशीलता आवश्यक : डॉ. सुधा जैन

दिल्ली की डॉ. सुधा जैन एडवोकेट ने विश्वविद्यालय के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग द्वारा 31 जुलाई को आयोजित "प्री मेरिज कॉउन्सिल" विषयक व्याख्यान में विवाह से पूर्व वैवाहिक जीवन के संदर्भ में क्या-क्या जानना आवश्यक है? पर अपने व्याख्यान में कहा कि आज के युवाओं में चाहे वह लड़का हो या लड़की सभी में मानवीय जीवन मूल्य यथा सहनशीलता, समन्वय, सामंजस्य का अभाव होने के कारण एकल परिवार की प्रवृत्ति बढ़ रही है। पति-पत्नी के आपसी झगड़ों के कारण बच्चों का जीवन अंधकारमय बन रहा है।

डा. जैन ने अपने तीस वर्ष के वकालत के कार्यकाल में सैकड़ों दंपत्तियों को परस्पर में हो रहे क्लेश एवं संघर्ष से होने वाले नुकसान को बताकर उन्हें पुनः वैवाहिक जीवन में प्रवेश कराया है। उन्होंने यहां कहा कि एकल परिवार में मुखिया के अभाव में सांस्कृतिक ह्रास भी देखा जा रहा है। इससे पूर्व दूरस्थ शिक्षा विभाग के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने समागत अतिथियों को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया तथा विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने अतिथियों का स्वागत एवं परिचय प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. योगेश कुमार जैन ने किया।

प्राणी मात्र के प्रति दया भाव ही उत्तम क्षमा : प्रो. दूगड़

मैत्री दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के जैनविद्या विभाग द्वारा संवत्सरी के उपलक्ष्य में 25 अगस्त को आयोजित मैत्रीदिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने प्रत्येक प्राणी के प्रति मैत्री भाव को यथार्थ अहिंसा व क्षमाभाव बताते हुये कहा कि जैनधर्म सूक्ष्म से सूक्ष्म प्राणी के प्रति भी अपने समान व्यवहार करने की बात कहता है। आज के युग में जैनधर्म की अहिंसा मूलक शिक्षाओं को व्यवहारिक बनाने की आवश्यकता है। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. बी. एल. जैन, प्रो. अनिलधर व वित्ताधिकारी राकेश जैन ने क्षमापर्व के महत्त्व को बताया। प्रो. दामोदर शास्त्री ने संवत्सरी पर्व की ऐतिहासिकता पर प्रकाश डाला। कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि जैनधर्म में पदयात्रा से व्यक्ति प्रत्येक प्राणी से साक्षात् संपर्क में आता है तथा क्षमाभाव से वह सदा निर्दोष बना रहता है।

कार्यक्रम का संयोजन डॉ. योगेश कुमार जैन ने किया। उपकुलसचिव डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने आभार व्यक्त किया।

ज्योतिष कर्महीन व भाग्यवादी नहीं बनाता, बल्कि भविष्य का मार्ग दिखाता है- प्रो. जैन

आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा संवर्धिनी व्याख्यानमाला में जैन ज्योतिष पर व्याख्यान

संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के अन्तर्गत संचालित महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ के तत्वावधान में 10 अगस्त, 2017 को आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा-संवर्द्धिनी व्याख्यानमाला-6 के अन्तर्गत आचार्य महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में नई दिल्ली के एस्ट्रो साईंस एंड रिसर्च आर्गेनाईजेशन के उपाध्यक्ष प्रो. अनिल जैन ने जैन ज्योतिष पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित इस व्याख्यानमाला में प्रो. जैन ने जैन धर्म के अनेक सिद्धांतों को ज्योतिष के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया तथा ज्योतिष विज्ञान की वैज्ञानिकता को प्रतिपादित किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में जैन विश्व भारती के ट्रस्टी व समाजसेवी भागचंद बरड़िया व अनेकांत शोध पीठ की निदेशक समणी ऋजुप्रज्ञा थी।

ज्योतिष विज्ञान के विख्यात विद्वान प्रो. अनिल जैन का कहना है कि ज्योतिष कभी व्यक्ति को कर्महीन या भाग्यवादी नहीं बनाता, बल्कि वह भविष्य का मार्ग दिखाता और व्यक्ति को सचेत करता है कि उसे क्या करना चाहिये और क्या नहीं। उन्होंनं जैन दर्शन के समयसार आदि ग्रंथों में विज्ञान व ज्योतिष का समावेश होने की जानकारी दी।

ज्योतिष पर शुरू होगा कोर्स

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने ज्योतिष को सबकी जिज्ञासा का विषय बताया तथा कहा कि इसके बारे में सबकी अलग-अलग राय होने के बावजूद सब कभी न कभी इस पर विश्वास कर लेते हैं। प्रो. दूगड़ ने घोषणा की कि अगले साल से विश्वविद्यालय में ज्योतिष विज्ञान पर एक अल्पकालीन कोर्स शुरू कर दिया जायेगा। उन्होनें प्रो. जैन द्वारा इस कोर्स के लिये अपनी सेवायें देने की इच्छा का स्वागत किया तथा कहा कि हम निश्चित रूप से उनका पूरा उपयोग लेंगे। वे निरन्तर इस संस्थान से जुड़े रहें, यह सौभाग्य की बात है। इससे पूर्व शोध केन्द्र निदेशिका समणी ऋजुप्रज्ञा ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया व ज्ञान सम्वर्द्धिनी व्याख्यानमाला के प्रारम्भ से लेकर अब तक की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रो. अनिल जैन का शॉल ओढा कर एवं भागचंद बरड़िया को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

कार्यक्रम का संचालन शोधपीठ के सहायक निदेशक डॉ. योगेश कमार जैन ने किया।

Workshop on Western Religion & Philosophy Faculty Development Programme

Department of Jainology and Comparative Religion & Philosophy, JVBI & National Council of Education, Jadavpur University Jointly ventured to break new ground for "Faculty Development Programme", sponsored by Shri Jain Shwetamber Terapanthi Sabha, South Calcutta, from 11-25 May, 2018. The main objective of this workshop was to train some faculties in interdisciplinary subject, import thorough knowledge of Western Philosophy & Religion from the experts of their respective field and make new headway in direction of building some experts in field of Western Philosophy & Religion as well as in Jainology.

Various eminent scholars & professors from reputed universities & colleges of India shared their encyclopedic knowledge & learning. Professor Indrani Sanyal, from Jadavpur University elaborately threw light on prolific thinker of the West Hospers & his analytic philosophy. Professor Gopal Khan from University of Burdwan & also a student of Plato's Academy in Greece. Narrated the life & philosophy of Socrates, Plato & Aristotle which compelled to think like a philosopher. Professor Deepali Dutta beautifully explained about the history of religion and also highlighted the views of Freud. Associate Professor Mousumi Guha from Jadavpur University presented an illuminating discourse on philosophy of mind, issue of mental causation, nature of concepts, folk psychology, etc. Professor Priyambada Sarkar at University of Calcutta elaborated beautifully about the most difficult philosophers of the world i.e. Wittgenstein. Facult was benefited by Professor Subir Bhattacharya, Professor Madhumita Chatterjee and Prabhakar Bhattacharya also.

Hence, the purpose was fully met out in the course of this event. This initiative will prove itself to be a milestone for the better tomorrow of Jain studies. It was felt by all the participants that such workshop should arranged every year. At the end, a valedictory function was organized in which everyone expressed their deep sense of gratitude for all the Professors & especially for Professor Arun Kumar Mukharjee who has Co-oridinated this programme. The workshop ended with positive feedback & Dr. Samani Amal Prajna, Samani Maryada Prajna, Prof. Samani Riju Prajna, Samani Sulabh Prajna, Mum. Preksha, Mum. Sneha, Mum. Namrata, Mum. Shweta gave the vote of thanks.

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में बनाई
जैन धर्म व दर्शन की प्रगति के लिये कार्ययोजना

जैन धर्म व दर्शन क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं का साझा मंच बने- प्रो. व्यास

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि आज आत्मनिर्भरता नहीं बल्कि परस्पर-निर्भरता आवश्यक है। इससे सबका विकास और विजय निश्चित होती है। वे यहां विश्वविद्यालय के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग एवं भगवान महावीर अन्तर्राष्ट्रीय शोध केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित बेहतर भविष्य के लिये जैन संस्थाओं से जुड़ाव व लगाव विषय पर (23-24 फरवरी) दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। इसके लिये उन्होंने सुझाव दिया कि भगवान महावीर अन्तर्राष्ट्रीय शोध केन्द्र के अन्तर्गत एक चेयर की स्थापना हो, जो इन सबके बीच में नेटवर्किंग का कार्य करे। इसके अलावा सभी ऐसी संस्थाओं का डाटा-बेस तैयार किया जाए और उन्हें एक अलग वेब-साईट बनाकर उस पर अपलोड किया जावे। उन्होंने ऐसे डाटाबेस की एक बुकलेट प्रकाशित किये जाने, एक अलग एकेडेमिक कैलेंडर तैयार किये जाने और टीचिंग व रिसर्च के क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं में परस्पर प्रोजेक्ट पर कार्य, प्लानिंग, लेक्चर आदि का कार्य किए जाए जावे। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी के अहिंसा समवाय की तरह जैन धर्म व दर्शन के क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं का एक साझा मंच बने और वे उसके लिये निरन्तर कार्य करे।

बौद्धिक जागरूकता आवश्यक

उदयपुर विश्वविद्यालय के प्रो. एस.आर. व्यास ने इस कार्यशाला को जैन महाकुम्भ बताते हुये परम्परागत व स्थिर दर्शन को छोड़ कर नवीनता अपनाने का आह्वान किया तथा कहा कि हमे वैश्विक स्तर पर हो रहे नये चिंतन की पूरी जानकारी होनी जरूरी है। प्रो. एस.पी. पांडे ने कहा कि शोध, साहित्य, संपादन व प्रकाशन के लिये परस्पर सभी संस्थायें जुड़ कर काम करें, तो अच्छा कार्य संभव है। सम्भागी प्रो. वीरसागर दिल्ली ने इस राष्ट्रीय कार्यशाला को अपने तरह का पहला उपक्रम बताया तथा कहा कि इसके सार्थक परिणाम प्राप्त होंगे। कार्यशाला निदेशक प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने दो दिवसीय कार्यशाला के प्रस्तावों व निर्णयों के बारे मे संक्षिप्त रूप में विवरण प्रस्तुत किया। कार्यशाला के समापन सत्र का संचालन डॉ. योगेश कुमार जैन ने किया।

परस्पर नेटवर्किंग आवश्यक

कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि अनेक संस्थायें एक ही क्षेत्र में काम करती है तो उनके काम में डुप्लीकेसी होना संभव है। इससे बचने और अपनी शक्ति को अधिक बेहतर बनाने के लिये परस्पर समन्वय स्थापित करना आवश्यक है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में देश-विदेश में जैन विद्या क्षेत्र में कार्य कर रहे विभिन्न लोगों और संस्थाओं की जानकारी देते हुये कहा कि विश्व भर में केलिफोर्निया, फ्लोरिडा, अमेरिका आदि अनेक देशों के विश्वविद्यालयों में जैन चैयर, जैन प्रोफेसरशिप, जैन स्टडी सेंटर स्थापित हैं, जिनमें जैन कम्युनिटी के नागरिकों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है। उन्होंने जैन विश्व भारती संस्थान की एक शिक्षिका फ्लोरिडा युनिर्विसिटी में प्रोफेसर होने की जानकारी दी तथा कहा कि भारतीय संस्थाओं को इनके बारे में पूरी जानकारी तक नहीं है, जबकि भारतीय संस्थाएं इन विदेशस्थ नागरिकों से महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त कर सकती हैं। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्थाओं के विकास में परस्पर नेटवर्किंग व सहयोग का अवरोध है, जिसे एक चैन स्थापित करके दूर किया जा सकता है। प्रारम्भ में जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि जरूरत इस बात की है कि जैन दर्शन को उनकी भाषा में पहुंचाया जावे। जैन सिद्धांतों से युगीन समस्याओं के समाधान को प्रस्तुत किया जाना चाहिये।

महावीर जयंती पर विशेष कार्यक्रम आयोजित

जिस सोच से समस्याएँ पैदा होती हैं, उससे समाधान नहीं निकल सकता- प्रो. दूगड़

संस्थान में महावीर जयंती के उपलक्ष में 28 मार्च को महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में भगवान महावीर अन्तर्राष्ट्रीय शोध केन्द्र एवं जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने भगवान महावीर के अनेकांत, संयम और परस्परता के सिद्धांतों को महत्वपूर्ण बताते हुये कहा कि खुलकर सोचना और प्रतिपक्ष के साथ सोचना अनेकांत है। जिस सोच से समस्याओं का जन्म होता है, उस सोच से समाधान नहीं निकल सकता। इसके लिये खुली सोच जरूरी है। अनेकांत एक क्रांतिकारी विचार था और आज भी उसकी महत्ता है। जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि भगवान महावीर अप्रमत्तता या सतत जागरूकता के प्रतिमूर्ति थे। जो अपनी आत्मा के प्रति सतत जागरूक रहता है, वह गलत काम नहीं कर सकता।

जीवन के लिए भाग्य नहीं पुरुषार्थ जरूरी

शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने महावीर के अहिंसा, समता, सहिष्णुता, संयम और अनेकांत को जीवन के लिये महत्वपूर्ण मूल्य बताया। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि महावीर पुरूषार्थ के प्रदीप्त पुरूष थे और हर व्यक्ति केवल पुरूषार्थ के बल पर ही अपने जीवन की यात्रा को पूरा कर सकता है। कार्यक्रम में वित्ताधिकारी आर.के. जैन, मुमुक्षु समता, विनय जैन, ज्योति नागपुरिया व सुविधा जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन व अंत में आभार ज्ञापन डॉ. योगेश जैन ने किया। विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में भी महावीर जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें डॉ. मनीष भटनागर, मुकेश कुमार चौहान, वर्षा स्वामी, संतोष, सरोज व सुविधा जैन ने भगवान महावीर के जीवन व उपदेशों पर प्रकाश डाला।

अहिंसा की प्रासंगिकता पर व्याख्यान आयोजित

अहिंसा को अपनाने से व्यक्ति, परिवार व समाज सुखी बनता है- डॉ. भारिल्ल

संस्थान के अन्तर्गत महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ के तत्वावधान में आचार्य तुलसी श्रुत-संवर्द्धिनी व्याख्यानमाला में 5 अप्रेल को महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अहिंसा की प्रासंगिकता" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य व्याख्यानकर्ता पं. टोडरमल जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के निदेशक डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल ने कहा कि राग आदि द्वेष हिंसा के मूल कारण होते हैं। महावीर ने 2500 साल पहले अहिंसा का सिद्धांत दिया था, वह आज पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। आज निर्दयता एवं हिंसा की भावनाएं बढी हैं। ऐसे में महावीर के सिद्धांतों पर चलने पर हम शांत हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि अहिंसा को अपनाकर व्यक्ति सुखी होगा और परिवार, समाज या देश द्वारा अहिंसा अपनाई जायेगी तो वे भी सुखी बन जायेंगे।

माध्यमिक शिक्षा में शामिल हो जीवन विज्ञान

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. बी.एल. चौधरी ने ईशावास्योपनिषद, गीता, देसी कहावतों आदि के आधार पर जीवन-व्यवहार को समझाया तथा निर्भय होने को अहिंसा का आधार बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि हिंसा का प्रारम्भ तब होता है, जब हम किसी के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करें। भगवान महावीर ने परस्परता और सह-अस्तित्व को अहिंसा का आधार बताया था। उन्होंने शिक्षा बोर्ड अध्यक्ष से जीवन विज्ञान को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता बताई, ताकि विद्यार्थी अपने जीवन को सर्वांगीण रूप से परिपूर्ण बना सकें। कुलपति ने यह भी कहा कि विश्वविद्यालय में हेंडीक्राफ्ट स्किल डेवलप का कोर्स भी शुरू करने पर विचार किया जा रहा है। शोधपीठ की निदेशिका प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने अंत में अपने सम्बोधन में अहिंसा को शाश्वत विषय बताया तथा कहा कि इसकी प्रसंगिकता सदैव ही बनी रहेगी।

हिंसा व अहिंसा को अलग-अलग करना मुश्किल

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तेरापंथ महासभा जोधपुर के ट्रस्टी दिलीप सिंघवी ने अपरिग्रह व समता के भाव को अहिंसा के लिए आवश्यक बताया। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय अजमेर के गणित विभागाध्यक्ष प्रो. सुशील कुमार बिस्सू ने कहा कि अहिंसा की प्रसंगिकता इस सृष्टि के रहने तक रहेगी। संस्थान के पूर्व कुलपति प्रो. महावीर राज गेलड़ा ने पाश्चात्य संस्कृति के आगमन को अनुचित बताया।

संस्कृत दिवस

संस्कृत भाषा में लावण्य व भावों की प्रधानता है- प्रो. शास्त्री

प्राच्य विद्या एवं भाषा विभाग तथा जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में संस्कृत दिवस के अवसर पर 5 अगस्त, 2017 को आयोजित समारोह की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता प्रो. दामोदर शास्त्री ने संस्कृत को अपभ्रंश में बदलने की चेष्टा को गलत बताया तथा कहा कि जनभाषा बनने पर विकृति आती है और वह नई भाषा बन जाती है, जो न संस्कृत रहेगी और न हिन्दी रह पायेगी। जरूरत इस बात की है कि संस्कृत की शुद्धता को बचाये रखा जावे।

रोजमर्रा की गतिविधियों की भाषा बने

समारोह के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने संस्कृत को समृद्ध भाषा एवं समस्त भाषाओं की जननी बताते हुये कहा, इस भाषा को रोजमर्रा की भाषा और सामाजिक गतिविधियों की भाषा बनाये जाने की जरूरत है। इसकी ऐसी शब्दावली तैयार होनी चाहिये, जो ऑफिसियल कामों में प्रयुक्त हो सके। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने संस्कृत को पूर्ण वैज्ञानिक भाषा बताते हुये टॉकिंग कम्प्यूटर के लिये इसे सबसे बेहतरीन भाषा बताया तथा कहा कि टॉकिंग कंप्यूटर के लिये अंग्रेजी भाषा को नकार दिया गया है।

बेल्जियम की युवतियों ने संस्कृत को श्रेष्ठ कहा

कार्यक्रम में बेल्जियम से आई विदेशी युवतियों कैटो व नैगी ने संस्कृत भाषा में अपना संयुक्त वक्तव्य प्रस्तुत करते हुये संस्कृत साहित्य को विशाल तथा उपयोगी बताया व संस्कृत भाषा को श्रेष्ठ कहा। जैन दर्शन एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने संस्कृत को सरस व समृद्ध भाषा बताते हुये कहा कि प्रत्येक भाषा में संस्कृत के शब्द मिल जायेंगे। समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा ने कहा कि संस्कृत वेद, उपनिषद, पुराण, टीका, न्यायशास्त्र, योग, दर्शन, जैन ग्रंथों आदि की भाषा रही है। यह समृद्ध भाषा है और भारत में जनभाषा रही थी। राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त विभागाध्यक्ष समणी संगीतप्रज्ञा ने संस्कृत को धनार्जन का माध्यम बनाने की आवश्यकता बताई। विनय जैन ने संस्कृत गीतिका प्रस्तुत की तथा डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्राच्य विद्याओं के संरक्षण के लिये आवश्यक है शोध- प्रो. यादव

रिसर्च मेथोडोलोजी पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग तथा अहिंसा एवं शांति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 14 फरवरी, 2018 को सेमिनार हॉल में रिसर्च मेथोडोलोजी (शोध-क्रियाविधि) विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के गांधी अध्ययन केन्द्र के निदेशक प्रो. आर.एस. यादव ने कहा कि संस्कृत व प्राकृत भाषाओं एवं प्राच्य विद्याओं की धरोहर के विकास के लिये उन पर शोध कार्य किया जाना आवश्यक है। रिसर्च शैक्षणिक प्रतिभा को उभरने का सुन्दर अवसर भी है। प्रो. यादव ने रिसर्च करने की प्रक्रिया के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा द प्रॉब्लम, रिव्यू आफ द सोर्सेज, फुटनोट्स आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस अवसर पर शोध-विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया व उन्हें उचित तरीके से शोध करने के लिये प्रेरित किया। प्रारम्भ में संस्कृत व प्राकृत भाषा विभाग की विभागाध्यक्ष डा. समणी संगीतप्रज्ञा ने कहा कि मेथोडोलोजी आज प्रत्येक विद्यार्थी के लिये आवश्यक है। अंत में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जुगल किशोर दाधीच ने आभार ज्ञापित किया।

व्याख्यानमाला आयोजित

वैदिक संस्कृत है सबसे प्राचीन भाषा- प्रो. भट्टाचार्य

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के अन्तर्गत 15 मार्च, 2018 को आयोजित व्याख्यानमाला में शांति-निकेतन विश्वविद्यालय पं. बंगाल के संस्कृत व प्राकृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन पर अपने व्याख्यान में इंडो-इरानियन व इंडो-पर्शियन भाषा की प्राचीनता से लेकर आधुनिक हिन्दी तक के सफर के बारे में बताया तथा भाषा में शब्दों के अर्थ बदलने, उनका उच्चारण बदलने एवं अनेक शब्दों के नये मिल जाने व कुछ शब्दों के लुप्त हो जाने के सम्बंध में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वेदों की भाषा उपलब्ध सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है और वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में बहुत अंतर है। उन्होंने ग्रीक व लैटिन भाषाओं के शब्दों में संस्कृत से समानता के बारे में बताया तथा कहा कि इसी प्रकार शब्दों का विकास होता है। उन्होंने कहा कि किसी मनुष्य के अचानक प्रयास से भाषा का उत्थान संभव नहीं है, यह चलते-चलते भाषा का रूप बदलता है। प्रो. भट्टाचार्य का कहना है कि व्याकरण का उद्देश्य भाषा सीखाना नहीं होता, बल्कि यह भाषा के शुद्धिकरण के लिये होता है। व्याकरण से भाषा में शुद्धता बनी रहती है। उन्होंने श्रोताओं के प्रश्नों का जवाब देकर उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया।

प्रो. भट्टाचार्य ने रिसर्च मैथेडोलोजी पर भी प्रकाश डाला। व्याख्यानमाला की अध्यक्षता प्रो. दामोदर शास्त्री ने की। कार्यक्रम का संचालन प्रो. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया तथा अंत में आभार ज्ञापन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया।

दस दिवसीय संस्कृत-प्राकृत जैन स्कॉलर कार्यशाला आयोजित

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्वावधान में संस्कृत व प्राकृत भाषाओं के विकास के लिये 16 से 26 मार्च 2018 तक दस दिवसीय संस्कृत-प्राकृत जैन स्कॉलर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विभागाध्यक्ष प्रो. समणी संगीत प्रज्ञा ने कहा कि जितनी अधिक भाषाओं का ज्ञान व्यक्ति को होता है, वह उतना ही ज्यादा भावों को आत्मसात कर सकता है। उन्होंने कहा कि संस्कृत हमारी आदि भाषा है तथा उसे सबसे प्राचीन भाषा होने व देववाणी कहलाने का गौरव भी प्राप्त है। प्राकृत भाषा वह है, जिसमें जैन आगम, महाकाव्य आदि की रचना की गई थी। इन भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना और उसे समृद्ध बनाना गौरव की बात है। उन्होंने कार्यशाला में प्राकृत व संस्कृत भाषाओं के महत्व, उपयोगिता और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसके विकास की आवश्यकता को प्रतिपादित किया।

जयपुर में करवाया प्रेक्षाध्यान का अभ्यास

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी संगीत प्रज्ञा ने जयपुर में 3 जून, 2018 को प्रेक्षा वाहिनी के तत्वावधान में अणुविभा जयपुर में शासनश्री साध्वी कमलप्रभा के सान्निध्य में आयोजित प्रेक्षाध्यान कार्यशाला में सम्भागी साधकों को प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया। कार्यशाला में कुल 45 संभागी साधकों ने हिस्सा लिया।

जैन आगमों में है विज्ञान- प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ इंदौर के तत्वावधान में 18 फरवरी, 2018 को "जैन आगमों में विज्ञान" विषय पर आयोजित व्याख्यान में जैन विश्व भारती संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग की प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा का व्याख्यान आयोजित किया गया। उन्होंने जैन धर्म में उपलब्ध विज्ञान के तत्वों को सारगर्भित भाषा में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के कुलपति नरेन्द्र कुमार धाकड़ ने अध्यक्षता करते हुये जैन धर्म की प्राचीनता और आगम ग्रंथों में छिपे विज्ञान के बारे में प्रकाश डाला तथा कहा कि जैन धर्म पूर्णतः वैज्ञानिक धर्म है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. गणेश कावड़िया ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुये आगम को अथाह ज्ञान का भंडार बताया और कहा कि हमें अपने ग्रंथों में छिपे ज्ञान-विज्ञान को भुलाकर पश्चिम की तरफ ताकने के बजाये अपने ग्रंथों पर पर्याप्त शोध करना चाहिये। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानपीठ के महामंत्री डॉ. अनुपम जैन ने किया।

योग व ध्यान पर तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला

भारतीय संस्कृति की विश्व को अमूल्य देन है अहिंसा व अनेकांत के सिद्धांत- डॉ. एना लूरा

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय (19-21 जुलाई 2017) अन्तर्राष्ट्रीय योग एवं ध्यान अध्ययन कार्यशाला के शुभारम्भ सत्र में अमेरिका के इंटरनेशनल स्कूल फॉर जैन स्टडीज की डॉ. एना लूरा फनेस माडेरा ने कहा, भारत की जैन संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकांत के सिद्धांत अपने आपमें अद्भुत हैं तथा ये विश्व की समस्त अन्य संस्कृतियों से पृथक हैं। उन्होंने योग को जीवन के लिये आवश्यक अंग बताते हुये कहा कि योग से व्यक्ति अपने आप को बदल सकता है।

प्राचीन भाषा व प्राच्य विधाओं के सम्वर्द्धन के लिये समर्पित

कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने वर्तमान औद्योगिक वातावरण में मन को शांत करने का माध्यम योग व प्रेक्षाध्यान को बताया तथा कहा कि केवल विद्यार्थी ही नहीं, चाहे सैनिक हो या पुलिसकर्मी सभी के लिये योग का महत्व है और योग सबको समता-भाव प्रदान करते हैं। प्रो. अनिल धर ने संस्थान की स्थापना से लेकर इसकी विशेषताओं के बारे में उल्लेख किया तथा बताया कि यह मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिये स्थापित किया गया था, जो प्राचीन भारतीय भाषाओं एवं प्राच्य विद्याओं के शिक्षण, संवर्द्धन व प्रसार के लिये समर्पित है। कार्यक्रम का संचालन करते हुये योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने बताया कि जैविभा विश्वविद्यालय इसलिये अलग विश्वविद्यालय है कि यह केवल इंजीनियर, डॉक्टर या वकील हीं नहीं बनाता, बल्कि यहां पहले अच्छा इंसान बनाया जाता है। कार्यक्रम में अमेरिका से आये दल की प्रभारी मेघा जैन सहित डॉ. मुग्धा यावलेकर, जूलिया काजा, एलेक्जेंडर, प्रो. मार्गेट मेरियन गोवर, जूलियान आदि को पुस्तकें भेंट करके सम्मानित किया गया। कार्यशाला में योग व ध्यान की विधियों का क्रियात्मक अभ्यास करवाया गया।

वैज्ञानिक शोधों पर खरा उतरा है प्रेक्षाध्यान

कार्यशाला के दूसरे दिन विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने कहा है कि प्रेक्षाध्यान के सम्बंध में विभिन्न वैज्ञानिक शोध के पश्चात् इसकी उपयोगिता को साबित किया जा चुका है। उन्होंने प्रेक्षाध्यान का परिचय देने के बाद उनके लाभों का वर्णन करते हुये अब तक की गई शोधों के बारे में जानकारी दी। इससे पूर्व उन्होंने योग के विभिन्न आसनों का प्रायोगिक अभ्यास भी करवाया। समणी सुलभ प्रज्ञा ने सभी संभागियों को प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया। अमेरिका से आई डॉ. एना लूरा फनेस माडेरा ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में जैन दर्शन की तत्व मीमांसा पर प्रकाश डाला और जीव-अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष के बारे में अपने विचार व्यक्त किये।

आर्ट गैलरी व कैम्पस को सराहा

अमेरिका से आये संभागियों ने यहां अपने हाथों में मेहंदी भी लगवाई। उन्होंने संस्थान कैम्पस का भ्रमण भी किया। उन्होंने आर्ट गैलरी देखकर सराहना की तथा कैम्पस के हरीतिमा युक्त सौंदर्य की प्रशंसा की। उन्होंने बार-बार आने व कम से कम 15 दिनों का प्रवास करने की इच्छा जताई। सम्भागियों ने यहां भिक्षु विहार में मुनि स्वस्तिक कुमार से भी भेंट की तथा उनसे अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाया। डॉ. अशोक भास्कर ने संभागियों को लाडनूं भ्रमण करवाया।

युवाओं को कठिनाईयों से मुकाबले के तरीके सिखावें- कक्कड़

अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया

संस्थान में 12 अगस्त को अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया गया। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में कुलसचिव वी.के. कक्कड़ ने कहा है कि हमारी सोच बन गई है कि जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं, उनका अनुसरण करना चाहिये, पर ये हमेशा सही नहीं होता। हम युवाओं को जीवन के उतार-चढाव के बारे में नहीं सिखाते, जिससे वे विपरीत परिस्थितियों से मुकाबला करने में अक्सर पिछड़ जाते हैं।

शक्ति व सामर्थ्य का सही दिशा में करें उपयोग

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वामी विवेकानन्द के संदेश ''उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत्ति'' को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के युवा दिवस का संदेश बनाया जाने पर जोर डाला तथा युवाओं द्वारा अपनी शक्ति व सामर्थ्य का सही दिशा में सही उपयोग करने को शांति स्थापना के लिये आवश्यक बताया। शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने कहा कि जहां मानसिक संतुष्टि है, वहां अहिंसा है और जहां सामूहिक अहिंसा है वहां शांति है। योग एवं जीवन विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने भी विचार व्यक्त किये। डॉ. अशोक भास्कर ने आभार ज्ञापित किया।

विभागीय सेमिनार : योग की वैज्ञानिकता प्रतिपादित

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग का विभागीय सेमिनार का आयोजन 5 अगस्त को किया गया। विद्यार्थियों के अभिव्यक्ति कौशल एवं विषयों के सूक्ष्म ज्ञान के लिए आयोजित इस सेमिनार में योग, स्वास्थ्य, अनुसंधान, मूल्यों, चिकित्सा आदि विषयों के आध्यात्मिक- वैज्ञानिक पक्षों पर व्याख्यान एवं चर्चा की गई। विश्वविद्यालय के उप-कुलसचिव एवं योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने सेमिनार में योग के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए पतंजलि योग दर्शन की वैज्ञानिकता को बताया और वर्तमान में स्वास्थ्य को लेकर पतंजलि योग की सूक्ष्म बातों पर अपना व्याख्यान दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विवेक माहेश्वरी ने किया। डॉ. अशोक भास्कर ने आभार व्यक्त किया।

विविध गतिविधियां

- **योग विश्वविद्यालय का शैक्षणिक भ्रमण-** संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों का शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम 4 से 7 जनवरी 2018 को गुजरात के अहमदाबाद स्थित लकुलीश योग विश्वविद्यालय में किया गया। डॉ. विवेक माहेश्वरी ने बताया कि इस भ्रमण में इस योग विश्वविद्यालय की योग सम्बंधी विविध गतिविधियों के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी गई। इस शैक्षणिक भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में पत्र वाचन भी किया। शैक्षणिक भ्रमण दल में 30 विद्यार्थी शामिल थे।

- **आचार्यश्री महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस-** संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभाग के तत्वावधान में 2 नवम्बर को आचार्यश्री महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के जीवन-वृत पर प्रकाश डाला। विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के योग एवं जीवन विज्ञान की दिशा में दिये गये अवदान के बारे में बताया। कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़, शोध निदेशक प्रो. अनिल धर, डॉ. हेमलता जोशी, प्रो. बी.एल. जैन आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

- **जे.आर.एफ. तथा नेट के लिये कोचिंग-** योग एवं जीवन विज्ञान विभाग द्वारा मई माह में योग के विद्यार्थियों के लिये नेट और जे. आर.एफ. की तैयारी के लिये कोचिंग कक्षाओं का आयोजन किया गया। इन कक्षाओं में नियमित एवं पत्राचार के विद्यार्थियों के अलावा प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के साथ महाराष्ट्र, दिल्ली, गुजरात, पंजाब आदि के कुल 18 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इन कक्षाओं का संचालन एवं अध्यापन का जिम्मा डॉ. अशोक भास्कर ने सफलता पूर्वक निभाया।

समाज में हिंसा के जनक पांच दोषों का उन्मूलन हो- एसपी

तीन दिवसीय युवा अहिंसा एवं मानवाधिकार प्रशिक्षण शिविर

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में 27 जनवरी 2018 से तीन दिवसीय युवा अहिंसा एवं मानवाधिकार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन यहां महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में किया गया। शुभारंभ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला पुलिस अधीक्षक परिस देशमुख ने शिविर में कहा कि हिंसा के पीछे काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार के पांच दोष होते है। इन दोषों से परे कोई अपराध नहीं होता। समाज में अगर पूर्ण अहिंसा का माहौल देखना चाहते हैं तो हिंसा के जनक इन दोषों पर विजय पाना आवश्यक है।

ध्यान व योग से बदला जा सकता है स्वभाव

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने देश, समाज व अपने प्रति कर्तव्यों को निभाने की आवश्यकता बताई तथा कहा कि ध्यान व योग से स्वभाव में बदलाव लाया जा सकता है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि बोधगया विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार प्रो. नलिन शास्त्री ने अहिंसा, शांति की संस्कृति एवं मानवाधिकारों के सम्बंध में युवाओं के प्रशिक्षण को मानवीय मूल्यों में सहायक बताया।

कार्यक्रम में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने दंड विधान के बजाये सुधारवादी सिद्धांत को उचित बताया तथा कहा कि इस विश्वविद्यालय में दिये जाने वाले अहिंसा प्रशिक्षण एवं प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से विद्यार्थियों में परिवर्तन आया है। हजारों विद्यार्थियों के विचारों को यहां दिये जाने वाले प्रशिक्षण ने बदला है। प्रो. अनिल धर ने तीन दिन के शिविर को अहिंसा व शांति का बीजारोपण करने वाला बताया। कार्यक्रम में राजस्थान पुलिस सेवा की अधिकारी नमिता खोखर भी विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचस्थ थी।

शिविर का समापन समारोह

शिविर के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा है कि हिंसा के कारण विश्व में जो असंतुलन है, उसे रोकने और संतुलित करने के लिये अहिंसा प्रशिक्षण की आवश्यकता है। डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने शिविर के तीनों दिनों के कार्यक्रमों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इस तीन दिवसीय शिविर में विवेक माहेश्वरी, समणी ऋजुप्रज्ञा, प्रो. अनिल धर, डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. जुगल किशोर दाधीच आदि ने शिविरार्थियों को अहिंसा का प्रशिक्षण प्रदान किया। शिविर के दौरान सभी को नियमित रूप से ध्यान, प्राणायाम व योग का अभ्यास करवाया गया। शिविरार्थी विक्रम सिंह राठौड़ चूरू, पीताम्बर शर्मा डीडवाना, ओमप्रकाश बिजारणियां, ममता कंवर राणावास, गणपत डीडवाना, पारूल शर्मा किशनगढ व लक्ष्मण विश्नोई नागौर ने कार्यक्रम में अपने अनुभव साझा करते हुये व्यवस्थाओं की प्रशंसा की तथा शिविर में आये परिवर्तनों के बारे में बताया। अंत में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने आभार ज्ञापित किया। डॉ. विकास शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार

इस तीन दिवसीय युवा प्रशिक्षण शिविर के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी गई एवं प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई, जिनमें विजेता रहे प्रतिभागियों को समापन समारोह में पुरस्कार प्रदान किये गये।

एकल गायन प्रतियोगिता में प्रथम राकेश नागौर, द्वितीय रविन्द्र कुमार डीडवाना एवं तृतीय स्थान पर ममता आचार्य राणावास रहे। एकल नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर दीपिका सोनी, द्वितीय ममता कंवर राणावास एवं तृतीय स्थान पर निर्मला राणावास रही। समूह नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम पिंकी पारीक एवं समूह लाडनूं, द्वितीय निशा एवं समूह किशनगढ़ व नीलम एवं समूह राणावास तथा तृतीय स्थान पर पीताम्बर एवं समूह डीडवाना रहे। वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम नरेन्द्र सिंह राठौड़ डीडवाना, द्वितीय पीताम्बर शर्मा डीडवाना एवं तृतीय स्थान पर दीनदयाल डीडवाना रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस मनाया

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा 10 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में डॉ. विकास शर्मा ने मानव अधिकार दिवस की महत्ता तथा मानवाधिकार की अवधारणा का सामान्य परिचय दिया। कार्यक्रम के अध्यक्ष विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने कहा कि व्यक्ति के नैसर्गिक विकास हेतु मानवाधिकारों की अहम भूमिका रहती है। प्रत्येक देश के नागरिकों के मानव अधिकारों की रक्षा होनी चाहिए। विभाग के सहायक आचार्य डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. बलबीर सिंह ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विकास शर्मा ने किया।

अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाया

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी की जयंती पर अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अनिलधर ने महात्मा गांधी के आदर्शों को जीवन में अपनाने पर बल दिया तथा कहा कि जीवन पर्यन्त वे अहिंसा एवं सत्य के मार्ग पर चलते रहे। विभागाध्यक्ष डॉ. जुगलकिशोर दाधीच ने महात्मा गांधी का जीवन और दर्शन दोनों को प्रासंगिक बताया। डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने महात्मा गांधी के स्वच्छता के संदेश को घर-घर पहुंचाने की जरूरत बताई। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. विकास शर्मा ने किया।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित <<<

भारतीय साहित्य में आदिकाल से ही समरसता का भाव रहा- डॉ. तत्पुरूष

राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के अध्यक्ष डा. इन्दुशेखर तत्पुरूष ने कहा है कि भारतीय साहित्य में आदिकाल से लेकर सदैव सामाजिक समरसता का भाव रहा है। आज सब जगह सूक्ष्म हिंसा एवं परोक्ष हिंसा बढ़ गई है, ऐसे में अहिंसा की आवश्यकता भी बढ़ गई। वे यहां 31 जनवरी-01 फरवरी, 2018 को विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग एवं योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के तत्वावधान में राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के प्रायोजन में भारतीय साहित्य में अहिंसा एवं सामाजिक समरसता विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर के कुलपति प्रो. भागीरथ सिंह बिजारणियां ने कहा कि हमारी संस्कृति का आधार ही त्याग, ममता तथा जीओं और जीने दो की भावनायें हैं। सद्भाव, सहनशीलता व त्याग समरसता के आधार है। उन्होंने कहा कि जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय देश में अहिंसा का सबसे बड़ा केन्द्र है। यहां अहिंसा का पाठ पढ़ाया जाता है। उन्होंने कहा कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का अहिंसा एवं सामाजिक समरसता पर एक लाडनूं घोषणा पत्र जारी होना चाहिये और यहां समागत समस्त सहभागियों को एक संकल्प लेना चाहिये कि वे जातिभेद, लिंगभेद, वर्गभेद नहीं करेंगे तथा प्रकृति के साथ छेड़छाड़ नहीं करेंगे, हिंसा का प्रयास नहीं करेंगे एवं वायु प्रदूषण नहीं करेंगे।

देश के हर ग्रंथ में समाई है अहिंसा

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता वर्द्धमान महावीर विश्वविद्यालय कोटा के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच ने

अपने सम्बोधन में कहा कि साहित्य में अभी तक अहिंसा विमर्श शुरू नहीं हुआ है। भारतीय साहित्य के हर ग्रंथ में अहिंसा का उल्लेख किसी न किसी रूप में मिलेगा। कार्यक्रम के सारस्वत अतिथि प्रख्यात चिंतक व लेखक हनुमान सिंह राठौड़ ने अहिंसा व सामाजिक समरसता को अलग-अलग नहीं बताकर उनके मूल में 'बंधुता' को बताया तथा कहा कि बंधुता आने पर समता आयेगी और समता से समरसता आयेगी। विश्वविद्यालय के शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने संगोष्ठी का परिचय प्रस्तुत करते हुये भारत की संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ बताकर कहा कि यहां कल्याण मार्ग दिखलाने वाले श्रेष्ठ साहित्य की रचना की गई। प्रारम्भ में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ समणी मृदुप्रज्ञा के मंगल-संगान से किया गया। अंत में डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने आभार ज्ञापित किया।

प्राचीन साहित्य की आधुनिक शब्दों में व्याख्या की जाएँ

राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन अकादमी के अध्यक्ष डॉ. इन्दुशेखर तत्पुरूष की अध्यक्षता में किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात चिंतक व लेखक हनुमान सिंह राठौड़ ने भारतीय संस्कृति व समरसता के साहित्य पर आक्रमणों पर चिंता जताते हुये कहा कि हमें अपने प्राचीन साहित्य को आधुनिक शब्दावली में युवाओं के लिये व्याख्यात्मक रूप में लिखना होगा, तभी परिवर्तन संभव हो पायेगा। समारोह के मुख्य वक्ता जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के नेहरू अध्ययन केन्द्र के निदेशक प्रो. प्रताप सिंह भाटी ने भगवान महावीर और उनके पश्चातवर्ती आचार्यों, अनुयायियों के उपदेशों का प्रकाशन अहिंसा का अद्‌भुत साहित्य है। सामाजिक समरसता के बारे में बोलते हुये उन्होंने कहा कि असमानता की उत्पति केवल वर्ग और जातीय भेद से नहीं है, बल्कि इसके अन्य कारण हैं, जिन पर विचार करना चाहिये।

संगोष्ठी से खुलेंगे नये आयाम

समारोह की अध्यक्षता करते हुये राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के अध्यक्ष डा. इंदुशेखर तत्पुरूष ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि अहिंसा व सामाजिक समरसता केवल व्याख्यानों से संभव नहीं है, इसके लिये कर्म और साहित्य की जरूरत है। वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र के निदेशक डॉ. अन्नाराम शर्मा ने कहा कि व्यक्ति की इच्छा व घोर उपभोग की प्रवृति ही अहिंसा व असमानता का कारण है। संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि सामाजिक समरसता हमारे व्यवहार में होनी चाहिये, केवल व्याख्यान में नहीं। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने प्रारम्भ में संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुये बताया कि दो दिनों की इस संगोष्ठी में विभिन्न सम्बंधित उप-विषयों पर 4 तकनीकी सत्र आयोजित किये गये। संगोष्ठी में कुल 12 प्रतिभागियों ने पंजीयन करवाया तथा कुल 62 शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये, जिनमें से 31 पत्रों का वाचन किया गया। कार्यक्रम में राजस्थान साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. विनीत गोधल का सम्मान भी किया गया। अंत में डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने किया।

आपदा-विपदा प्रबंधन पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

स्थानीय लोगों को शामिल किया जाए आपदा प्रबंधन में- डा. कंठ

संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में 6-7 फरवरी, 2018 से सामाजिक सुरक्षा एवं आपदा-विपदा प्रबंधन विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र के मुख्य अतिथि दिल्ली पुलिस के पूर्व पुलिस आयुक्त डॉ. आमोद कंठ ने कहा है कि किसी भी आपदा के समय जो लोग सबसे पहले सहायता के लिये उपलब्ध होते हैं, वे सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। ये स्थानीय समुदाय के लोग ही होते हैं। फायर ब्रिगेड व पुलिस भी सबसे पहले पहुंचने वालों में होती है, लेकिन सबसे ज्यादा सहयोग समुदाय का ही हो सकता है। स्थानीय समुदाय के आपदा प्रबंधन से जुड़ने से नियंत्रण अधिक प्रभावी हो सकता है। यहां सामुदायिक सुरक्षा एवं आपदा-विपदा प्रबंधन विषय पर आयोजित इस संगोष्ठी में उन्होंने अपने अनुभवों को साझा करते हुये विभिन्न आपदाओं और उनसे निपटने के तरीकों के बारे में बताया।

पाठ्यक्रम का हिस्सा हों आपदा प्रबंधन

संस्थान के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने अध्यक्षता करते हुये आपदा प्रबंधन पर पाठ्यक्रम तैयार करने पर जोर दिया तथा कहा कि जहां जिस प्रकार की आपदायें होती हैं, उस क्षेत्र के लिये उसी के अनुरूप कोर्स होना चाहिये, ताकि बच्चा-बच्चा आपदा पर नियंत्रण करना सीख जावे। समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने स्वयंसेवकों का चयन करके उन्हें प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये तथा उन्हें संसाधन उपलब्ध करवाये जाने चाहिये। इससे पूर्व डॉ. अंकित शर्मा ने दो दिवसीय कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि राजस्थान के अलावा दिल्ली, हरियाणा, गुजरात आदि प्रांतों से कुल 80 सम्भागी आये हैं तथा अनेक एनजीओ ने भी इस कार्यशाला में भाग लिया है। कार्यशाला में राजीव ऐमन, रचना सिद्धा, डा. आमोद कंठ आदि प्रमुख लोगों ने सम्भागियों को लाभ पहुंचाया। अंत में डॉ. जितेन्द्र वर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पुष्पा मिश्रा ने किया।

संगोष्ठी का शुभारंभ शोध निदेशक प्रो. अनिल धर की अध्यक्षता में किया गया। शुभारम्भ सत्र की मुख्य अतिथि स्टेट रिसोर्स सेंटर की प्रोग्राम डायरेक्टर रचना सिद्धा थीं। सिद्धा ने घटना, दुर्घटना व आपदा के अंतर को बताते हुये कहा कि जब किसी घटना के लिये हम तैयार नहीं होते हैं, तो वह आपदा बन जाती है।

समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने कार्यक्रम में स्वागत भाषण एवं कार्यशाला का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि आपदा के आने से पहले तैयारी, आपदा के समय सहयोग एवं आपदा के बाद पुनर्स्थापन पर विचार करना इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य है।

स्वच्छता जागरूकता सम्बंधी रैली व कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में 7 सितम्बर, 2017 को स्वच्छता एवं स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभाग के प्रशिक्षणार्थियों ने अपने जोरावरपुरा बस्ती कार्यक्षेत्र में स्थानीय कनक-श्याम माध्यमिक विद्या मंदिर के सहयोग से एक रैली का आयोजन किया। प्रधानाचार्य नारायण स्वामी ने रैली को हरी झंडी दिखाई। रैली में विद्यार्थी स्वच्छता सम्बंधी विभिन्न नारे लगाते हुये बस्ती के प्रमुख मार्गों से होते हुये विद्यालय पहुंचे जहां जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये नारायण स्वामी ने स्वच्छता का महत्त्व समझाया तथा सफाई के प्रति सदैव जागरूक रह कर अपने गली-मौहल्ले और शहर को स्वच्छ बनाने के लिये प्रेरित किया। मुख्य अतिथि सुनीता वर्मा थी। कार्यक्रम में सोनू व रितु ने भी सफाई व स्वास्थ्य के सम्बंध में अपने विचार व्यक्त किये। अंत में गरिमा काला ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन मुकेश ने किया।

तीन दिवसीय आमुखीकरण कार्यक्रम

बाधाओं को चीर कर आगे बढ़ने का जज्बा रखें- प्रो. त्रिपाठी

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा है कि सफलता प्राप्त करने के लिये बाधाओं को चीर कर आगे बढ़ने का जज्बा जीवित रखना और अपनी कमियों को पहचान कर आगे बढ़ना आवश्यक है। वे यहां समाज कार्य विभाग में आयोजित तीन दिवसीय दिनांक 9-11 अगस्त, 2017 आमुखीकरण कार्यक्रम के शुभारम्भ समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि रजिस्ट्रार विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा, व्यवहार कुशलता और संचार माध्यम की श्रेष्ठता ही सफलता प्राप्त करने के आवश्यक हेतु हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने दो दिन चलने वाले इस कार्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुये बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य नये विद्यार्थियों को संस्थागत एवं विभागीय परिचय करवाना है।

विश्व एड्स दिवस मनाया

समाज कार्य विभाग द्वारा 1 दिसम्बर, 2017 को विश्व एड्स दिवस का आयोजन संस्थान परिसर एवं समीपस्थ बालसमन्द ग्राम में किया गया। विभाग के विद्यार्थियों द्वारा सभी को रेड रिबन लगाया गया एवं बालसमन्द ग्राम के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने एच.आई.वी. एड्स पर प्रकाश डाला। प्रधानाध्यापक हेमाराम, डॉ. परवेज भाटी, समाज कार्य विभाग के मुकेश व विद्यार्थियों ने भी विचार व्यक्त किये। सरपंच भंवर सिंह, डॉ. परवेज भाटी, डॉ. पुष्पा मिश्रा, अंकित शर्मा, चांदनी सिंह, सुमित भाटी, नरेन्द्र जीलोय, गरिमा फिरदोस, हिमांशु आदि उपस्थित रहे। डॉ. पुष्पा मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन जीवराज सिंह ने किया।

विविध कार्यक्रम

युवा दिवस मनाया- समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में 12 अगस्त, 2017 को अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। युवाओं द्वारा शांति निर्माण विषय की थीम पर आयोजित किये गये इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रतिभागियों ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ थे।

बाकलिया व दुजार में स्वच्छता कार्यक्रम - स्वच्छता कार्यक्रम के अन्तर्गत 01 सितम्बर, 2017 को बाकलिया गांव में नारा-लेखन व व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रतिभागियों में 15 एम.एस.डब्ल्यू. छात्रों सहित 70 व्यक्ति थे। इस अवसर पर छोगा राम, सरपंच और खुमा राम, स्वरुप दास आदि मौजूद थे। इसी प्रकार 08 सितम्बर, 2017 को स्वच्छता कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम दुजार में भी नारा लेखन व व्याख्यान कार्यक्रम में कुल 60 प्रतिभागी थे, जिनमें एमएसडब्ल्यू के छात्र भी शामिल थे। कार्यक्रम में दुजार सरपंच हिम्मत सिंह एवं अन्य ग्रामीण उपस्थित थे।

गुजरात से आया दल- एमएसडब्ल्यू छात्रों एवं संकाय सदस्यों सहित 75 जनों का दल बाबा नाहरसिंह इंद्रप्रस्थ महाविद्यालय, भुज-कच्छ, गुजरात से 8 सितंबर, 2017 को शैक्षणिक दौरे पर जैन विश्वभारती संस्थान में आये और यहां समाज कार्य विभाग की गतिविधियों को देखा व कार्यशैली को समझा।

स्वागत कार्यक्रम- एमएसडब्ल्यू प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए स्वागत कार्यक्रम 15 सितम्बर, 2017 को कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ के मुख्य आतिथ्य में किया गया। इसमें शोध अध्येता एवं छात्र उपस्थित रहे।

शोध प्रबंध पर कार्यशाला - शोध प्रबंध पर 23 सितम्बर, 2017 को कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें एमएसडब्लू एवं शोध अध्येताओं को पीपीटी, व्याख्यान एवं रोल प्ले के तरीकों से डॉ. बी प्रधान, डॉ. पुष्पा मिश्रा, डॉ. जे.के. वर्मा व अंकित शर्मा द्वारा प्रस्तुतिकरण किया गया।

प्लेसमेंट कार्यक्रम- प्लेसमेंट कार्यक्रम के तहत फ्यूचर सोसायटी, जयपुर के महेश शर्मा, दीपक शर्मा और हरीश शर्मा ने 07 अक्टूबर, 2017 को एमएसडब्ल्यू छात्रों का साक्षात्कार लिया गया और उनमें से अपनी आवश्यकता के अनुसार 2 छात्रों का चयन किया।

शिक्षक दिवस - समाज कार्य विभाग में 5 सितम्बर, 2017 को प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी के मुख्य आतिथ्य में शिक्षक दिवस मनाया गया। विशिष्ट अतिथि कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष डॉ. बी. प्रधान ने की।

आईसीटी इंटीग्रेशन इन एज्युकेशन एंड लर्निंग पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

''सबको शिक्षा-अच्छी शिक्षा'' की चुनौतियों का मुकाबला आईसीटी से- मेमूर अली

संस्थान में आईसीटी इंटीग्रेशन इन एज्यूकेशन एंड लर्निंग विषय पर 10-12 फरवरी, 2018 को एनसीईआरटी नई दिल्ली एवं जैन विश्व भारती संस्थान के शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के शुभारम्भ सत्र में मुख्य वक्ता एनसीईआरटी नई दिल्ली के ई-लर्निंग कॉर्डीनेटर मो. मेमूर अली ने कहा कि दो सबसे बड़ी चुनौतियां शिक्षा के क्षेत्र में हैं, सबको शिक्षा और अच्छी शिक्षा। इन चुनौतियों का मुकाबला हम आईसीटी के माध्यम से कर सकते हैं। देश भर में 26 करोड़ विद्यार्थी स्कूली शिक्षा में हैं। उन सबको क्वालिटी एज्युकेशन देने के लिये तकनीक का सहारा आवश्यक है। मूक्स ऑनलाईन कोर्सेस के माध्यम से हम बड़ी तादाद में लोगों को शिक्षित बना सकते हैं।

इंटरनेट संसाधनों को आधारभूत ढांचे में शामिल करना होगा

अध्यक्षता करते हुये कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के गांधी एकेडेमिक सेंटर के निदेशक प्रो. आर.एस. यादव ने कहा कि आईसीटी द्वारा हम इस भूमंडलीकरण के युग में ज्ञान के क्षेत्र में पूरे जगत से जुड़ सकते हैं।

इंफोर्मेशन टेक्नालोजी एक क्रांति है

संस्थान के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि कम्युनिकेशन का दौर एक क्रांति है। हमें आईसीटी को एडोप्ट करना चाहिये। यह भविष्य के लिये मददगार है। महात्मा गांधी सेंट्रल यूनिवर्सिटी बिहार के प्रो. आशुतोष प्रधान ने कहा कि चाहे आज मूक्स का युग हो, लेकिन कक्षाओं में उपस्थिति का अपना महत्व है। तकनीक का प्रयोग केवल शिक्षा को अधिक गुणवता पूर्ण बनाने के लिये होना चाहिये। प्रारम्भ में डॉ. बी. प्रधान ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने अतिथियों का परिचय देते हुये उनका स्वागत किया। उप कुलसचिव डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डा. गोविद सारस्वत, डा. गिरीराज भोजक आदि ने अतिथियों को शॉल, पुस्तकें व स्मृति चिह्न प्रदान करके सम्मानित किया।

आधुनिक तकनीक व परम्पराओं के बीच सामंजस्य होना चाहिये

तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन समारोह में अध्यक्षता करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि ग्लोबाईजेशन के युग में हम आईसीटी के बिना आगे नहीं बढ़ सकते। तकनीक के कारण समस्त दूरियां सिमट गई हैं, लेकिन इसके कारण गुरू व शिष्य के बीच के सम्बंधों पर असर नहीं पड़ना चाहिये। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एनसीईआरटी की डॉ. ऐरम खान ने कार्यशाला में हिस्सा लेने वाले सभी सम्भागियों को कहा कि राष्ट्रीय विकास का हिस्सा बनना चाहिये और शिक्षा के क्षेत्र में देश को आगे बढाने के लिये अपनी भूमिका निभानी चाहिये। एनसीईआरटी की डॉ. अर्चना ने कहा कि कार्यशाला के सम्भागियों को यहां सीखे हुये ज्ञान को कभी भुलाना नहीं चाहिये। ये जीवन भर उपयोगी रहेगा। कार्यशाला के प्रतिभागी रविन्द्र कुमार मारू कोटा, तन्मय जैन व मुमुक्षु आरती ने अपने अनुभव साझा किये। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अंत में आभार ज्ञापित किया।

इन विषयों पर दिया प्रशिक्षण

तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में डिजीटल डेकोरेशन, ई-पाठशाला, स्वयं पोर्टल, एडिटिंग सॉफ्टवेयर, ओपन रिसोर्स, ई-रिसोर्स का प्रयोग करने, वीडियो रिसोर्स, स्क्रिप्ट लेखन, कैमरे के सामने पेश करने, लाईसेंस, वीडियो एडिटिंग, शॉट्स लेने के तरीके, एनिमेशन, ऑडोसिटी, सिनोरियम, आईपीआर ई-कंटेंट, फ्लिप्ड क्लासरूम, क्रियेटिव कॉमन साईट, ओईआर आदि के बारे में एनसीईआरटी के विषय विशेषज्ञों डा. मो. मामूर अली, डॉ. सुधीर सक्सेना, डॉ. यशपाल, डॉ. यशवन्त शर्मा, डॉ. अर्चना, डॉ. ऐरम खान आदि ने सैद्धांतिक एवं प्रयोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, जिसमें मुस्कान, प्रेमलता, विजयश्री, यतिश्री, प्रियंका, निशा, सरिता चौधरी, प्रीति जांगिड़, एकता, मीनाक्षी, अमृता, फिरोजा, भारती एवं विशाखा ने विभिन्न क्षेत्रीय नृत्यों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आभा सिंह ने किया।

शिक्षक कक्षाओं तक सीमित न रह कर समाज में व्यवस्थायें सुधारें- कुलपति

शिक्षक दिवस का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में शिक्षक दिवस का आयोजन 5 सितम्बर को समारोह पूर्वक किया गया। प्रो. दूगड़ ने शिक्षक दिवस की शुभकामनायें देते हुए कहा कि शिक्षक केवल कक्षाओं तक सीमित न रहकर समाज की व्यवस्थायें सुधारने एवं विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण में अपना विशिष्ट योगदान दें। उन्होंने कहा कि यदि हमें नये भारत का निर्माण करना है तो शिक्षकों का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग की छात्राओं द्वारा नृत्य, गायन, कविता, विचाराभिव्यक्ति आदि की प्रस्तुतियां सरिता यादव, सुनिता स्वामी, सुमन महला, गुंजन चौधरी, खुशबू योगी, संतोष, विजयलक्ष्मी, प्रियंका आदि ने दी। इस अवसर पर प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज रॉय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी शर्मा, श्रीमती ममता सोनी, देवीलाल कुमावत, मुकुल सारस्वत सहित अनेक शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विमला चौधरी ने किया।

शुभभावना कार्यक्रम

मूल्यों को आत्मसात कर उनका प्रसार करें- कुलपति

जैन विश्वभारती संस्थान के शिक्षा विभाग में अध्ययनरत बी.एड. तथा एम.एड. छात्राओं का शुभभावना कार्यक्रम 23 सितम्बर, 2017 को आयोजित किया गया। छात्राध्यापिकाओं को संबोधित करते हुए संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उन्हें भावी जीवन के लिये शुभकामनाएं देते हुये कहा कि प्रशिक्षण के दौरान सीखे मूल्यों को न केवल अपने जीवन में आत्मसात करें, बल्कि जहां भी जायें, इनको प्रसारित करें। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि इस अद्वितीय संस्थान में सीखे ज्ञान तथा मूल्यों की आभा को जहां भी रहें, फैलाते रहें। संस्थान के उपकुलसचिव डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने कहा कि आचार्य तुलसी की इस पवित्र धरा पर जो भी ज्ञान प्राप्त किया, वह आपके आगामी जीवन को निश्चित ही एक नई दिशा प्रदान करेगा। शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि विभाग में दो वर्ष के दौरान सीखा गया ज्ञान, हमेशा आपको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा तथा व्यक्तित्व विकास में सहायक होगा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत

कार्यक्रम के दौरान छात्राध्यापिकाओं ने एकल नृत्य, सामूहिक नृत्य, गीत, कविता तथा गेम्स प्रस्तुत किये। छात्राध्यापिकाओं ने प्रशिक्षण के दौरान के अपने अनुभव साझा किये। इन प्रस्तुतियों में रागिनी, अंकिता द्विवेदी, वत्सला, सुमन महला, सुनीता सहजवानी, कविता, पूनम गौड, विशाखा, पूनम एवं समूह, दिव्या पारीक, फिरोजा, आकांक्षा चारण, सरिता फिरोदा, सपना स्वामी, गीतांजली ने भाग लिया।

कार्यक्रम में डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. सरोज रॉय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. बी.प्रधान, ममता सोनी, मुकुल सारस्वत, देवीलाल एवं समस्त एम.एड., बी.एड., बी.एससी-बी.एड., बी.ए.-बी.एड. की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रही। मंच संचालन आयुषी सैनी तथा जौहरा फतिमा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विष्णु कुमार द्वारा किया गया।

गणेश चतुर्थी पर्व मनाया

शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 25 अगस्त, 2017 को गणेश चतुर्थी पर्व मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने गणेश को शुभत्व, विद्या एवं समृद्धि का प्रतीक बताते हुये गणेश को विद्यावान, चरित्रवान एवं शुभलक्षण व्यक्तित्व का आदर्श बताया। कार्यक्रम के आरम्भ में ध्यान योग के रूप में छात्राध्यापिकाओं ने सामूहिक रूप से भगवान गणेश की सस्वर आरती की। छात्राओं ने गणेश के जन्म से लेकर उनकी बाल लीलाओं के बारे में बताया और देश के विभिन्न हिस्सों में गणेश उत्सव मनाये जाने की प्रथाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. गिरीराज भोजक ने किया।

हिन्दी दिवस : भाषा से बाजार से जोड़ें

शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 14 सितम्बर, 2017 को आयोजित हिन्दी दिवस के कार्यक्रम में कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि हिन्दी भाषा को भावनाओं के साथ-साथ बाजार से भी जोड़ना आवश्यक है। हिन्दी सच्चे अर्थों में तभी सशक्त भाषा बन पायेगी

जब उसको बाजार से जोड़ा जाये। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने भावी अध्यापिकाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि देशवासियों के लिए यह गर्व की बात है कि लगभग 50 प्रतिशत भारतीय हिन्दी भाषी है। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि हिन्दी हमारी संस्कृति और सभ्यता के विकास की आधार-शिला है। छात्रा पूजा वशिष्ठ ने भी विचार व्यक्त किये एवं बी.एड. छात्रा सरिता शर्मा, खुशबू योगी ने कविता प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी दिवस प्रभारी डॉ. सरोज राय ने किया।

रक्षाबंधन आध्यात्मिक पृष्ठभूमि का पर्व - प्रो. जैन

शिक्षा विभाग में 4 अगस्त, 2017 को रक्षाबंधन पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा, रक्षाबंधन केवल आर्थिक सुरक्षा के लिये ही पर्व नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिक पृष्ठभूमि का पर्व भी है। यह हमारी संस्कृति की रक्षा का संकेत देता है। कार्यक्रम में सरिता शर्मा व कोमल ने भी अपने विचार कविता के माध्यम से प्रकट किये। कार्यक्रम का संचालन चंचल गौड़ ने किया।

जन्माष्टमी : कृष्ण के जीवन का अनुकरण जरूरी बताया

शिक्षा विभाग में 14 अगस्त को जन्माष्टमी का पर्व के अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि कृष्ण का जीवन हर वर्ग के व्यक्ति के लिये प्रेरणादायी है, सभी को उनका अनुकरण करना चाहिये। डॉ. सरोज राय ने श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व को प्रेममयी, दयावान व क्षमावान बताया। कार्यक्रम में सुगनी एवं समूह ने 'कान्हा अब तो मुरली की मधुर सुना दो तान...' भजन प्रस्तुत किया एवं प्रवीण कंवर ने कृष्ण के 1008 नामों का उल्लेख किया।

स्वामी विवेकानन्द की 153वीं जयंती मनाई

शिक्षा विभाग के तत्वावधान में स्वामी विवेकानन्द की 153वीं जयंती 12 जनवरी 2018 को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाई गई। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने इस अवसर पर कहा कि कभी कठिनाईयों से घबराना नहीं चाहिए बल्कि विकट परिस्थिति में भी सामना करते हुए आगे बढना चाहिये। डॉ. अमिता जैन ने स्वामी विवेकानन्द के जीवन से शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता बताई। बी.एससी-बी.एड की छात्रा अनुप्रिया ने स्वामी विवेकानन्द की जीवनी पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. सरोज राय, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. ममता सोनी एवं मुकेश उपस्थित रहे।

अंबेडकर जयंती पर 'सामाजिक समरसता' कार्यक्रम

शिक्षा विभाग में 13 अप्रेल को डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर यहां ''सामाजिक समरसता कार्यक्रम'' आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि डॉ. अंबेडकर ने दलितों के सामाजिक पुनरूत्थान, मानव सेवा तथा भारतीय लोकतंत्र की सफल स्थापना हेतु अपना महती योगदान दिया। कार्यक्रम के प्रभारी डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने भीमराव अंबेडकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में बताया। कार्यक्रम में छात्राध्यापिका अंबिका शर्मा, सरिता फिड़ौदा, सुविधा जैन आदि ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने किया।

शैक्षणिक भ्रमण

जयपुर में विद्यार्थियों ने किया ज्ञान-विज्ञान से साक्षात्कार

शिक्षा विभाग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक भ्रमण दल ने 27 जनवरी को जयपुर का दौरा किया। इस दल में 55 विद्यार्थी एवं 7 संकाय सदस्य शामिल रहे। इस दल के समस्त सदस्यों ने जयपुर में विज्ञान पार्क में सूचना प्रौद्योगिकी गैलरी, म्युजियम, तारामंडल गैलेरी आदि का अवलोकन किया तथा विज्ञान से जुड़े तथ्यों को जाना-समझा। उन्होंने तारामंडल में अंतरिक्ष के बारे में गहन जानकारी प्राप्त की। विद्यार्थियों ने बिड़ला मंदिर, मोती डूंगरी, गणेश मंदिर, गुलाब बाग, अक्षर धाम आदि का भ्रमण करके ऐतिहासिक, धार्मिक व पुरातात्विक ज्ञान प्राप्त किया। इस दल में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन, भ्रमण प्रभारी डॉ. सरोज रॉय, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरधारी लाल, देवी लाल, किशन टाक एवं विद्यार्थी शामिल थे।

शैक्षणिक भ्रमण में प्राचीन मंदिर व कला देखी

शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में एक दिवसीय ऐतिहासिक भ्रमण 17 जनवरी को लाडनूं शहर के जैन मन्दिरों का भ्रमण छात्रा- ध्यापिकाओं एवं संकाय सदस्यों द्वारा किया गया।

यहां स्थित बड़ा जैन मंदिर, जो भूगर्भ से प्राप्त 1100 वर्ष से भी प्राचीन ऐतिहासिक जैन मंदिर है। भूगर्भ से मूर्तियां, स्तम्भ, आलेख, अवशेष आदि पुरातात्विक प्रमाण, आकर्षक तलगृह, देवी सरस्वती की संगमरमर निर्मित अति प्राचीन कलात्मक सुंदर प्रतिमा तथा मंदिर की सूक्ष्म नक्कासी को देखा गया। लाडनूं के सभी जैन मंदिरों का भ्रमण ज्ञानवर्द्धक एवं प्राचीन स्थापत्य, मूर्तिकला, धार्मिक भावनाओं, परम्पराओं आदि की जानकारी देने वाला रहा। छात्राध्यापिकाओं को मंदिरों की ऐतिहासिक पृष्ठभमि से भी अवगत कराया गया। भ्रमण में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. गिरिराज भ ा ा ज क ,

एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में 12 सितम्बर को एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत बी.एड., एम.एड., बी.ए.-बी.एड., बीएससी.-बी.एड एवं बीएससी की लगभग 250 छात्राओं का दल डूंगर बालाजी पहुंचा, जिसमें शिक्षा विभाग के समस्त संकाय सदस्य भी शैक्षिक भ्रमण में शामिल थे। वहां पहुंचकर दर्शन उपरांत भजनों का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने बालाजी के भजन, हनुमान चालीसा गीत प्रस्तुत किये।

छात्राओं ने श्रमदान कर बनाया विश्वविद्यालय परिसर को स्वच्छ

संस्थान में 2 दिवसीय (22-23 फरवरी, 2018) स्वच्छता अभियान के तहत विश्वविद्यालय की छात्राओं ने शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन के नेतृत्व में परिसर के विभिन्न स्थानों में श्रमदान करके सफाई कार्य किया। छात्राओं के अलग-अलग दल बनाये जाकर उन्होंने अपने जिम्मे पृथक-पृथक स्थानों की सफाई का जिम्मा लिया और पूरी तन्मयता के साथ सफाई का कार्य पूर्ण किया। विश्वविद्यालय के समस्त संकायों के सदस्यों ने भी छात्राओं के साथ श्रमदान में अपनी सहभागिता दिखाई।

होली पर सुर संगम कार्यक्रम में छाया लोकगीतों का माधुर्य

होली के पर्व पर 27 फरवरी, 2018 को यहां शिक्षा विभाग में विद्यार्थियों ने सुर संगम कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में बीएड, बीएससी-बीएड एवं बीए-बीएड की छात्राओं ने भजनों, लोक गीतों एवं फिल्मी पैरोडियों को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का आगाज होली के पारम्परिक गीत 'होलिया में उड़े रै गुलाल....' से किया गया। कार्यक्रम में सामूहिक नृत्य, समूह लोकगीत, एकल नृत्य आदि की रंगारंग प्रस्तुतियां दी गई, जिनमें प्रियंका बिडियासर, तनुजा सैनी व दिव्या सोनी के गीतों ने सबको मोहा, तो जौहरा फातिमा व अम्बिका शर्मा, सुरक्षा जैन, पूजा गौड़, संतोष, सरोज व सरिता की प्रस्तुतियों को भी सभी ने सराहा। कार्यक्रम में संकाय सदस्यों ने लोकगीतों एवं विविध गीतों की प्रस्तुतियां दी। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बधाईयां दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शकुन्तला शर्मा ने किया।

चार दिवसीय विभागीय कार्यशाला

शिक्षा विभाग में कौशल विकास व विद्यार्थियों में दक्षता विकसित करने के लिये 2 जनवरी, 2018 से चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. आभा सिंह, डॉ. अमिता जैन आदि ने जानकारी दी। कार्यशाला में प्रदर्शन कौशल, प्रस्तावना कौशल, श्यामपट्ट कौशला, प्रश्न कौशल आदि में पारंगत किया गया।

महावीर जयंती मनाई

शिक्षा विभाग में 28 मार्च, 2018 को महावीर जयंती का कार्यक्रम आयोजित आयोजित किया गया। डॉ. मनीष भटनागर, मुकेश कुमार चौहान, वर्षा स्वामी, संतोष, सुविधा जैन व सरोज ने भगवान महावीर के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया

शिक्षा विभाग में 8 मार्च, 2018 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में डा. मनीष भटनागर, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. सरोज राय, पार्वती, सुमित्र, सोनू, प्रियंका, मनसुखी, आयुषी, चन्द्रावती, चेतना आदि ने अपनी अभिव्यक्ति देते हुये महिला उत्थान की जरूरत पर बल दिया।

मानवाधिकार दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

मानवाधिकार दिवस 8 दिसम्बर, 2017 को शिक्षा विभाग में कार्यक्रम आयोजित करके विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने की आवश्यकता बताई तथा सभी संकाय सदस्यों ने परस्पर शुभकामनायें दी।

दीपावली पर कार्यक्रम

दीपावली पर्व पर 13 अक्टूबर, 2017 को रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. गिरधारी शर्मा, ममता सोनी, देवीलाल व मुकुल सारस्वत ने विभार व्यक्त किये। छात्राध्यापिकाओं पूनम एवं समूह, पूजा गौड़, सरोज, रेखा व पूजा ने नृत्य प्रस्तुत किये। सुरक्षा जैन ने गीत, मंजू, आयुषी व जौहरा ने विचार पेश किये। संचालन जौहराव आयुषी ने किया।

गुरू पूर्णिमा पर्व मनाया

शिक्षा विभाग में 7 जुलाई' 2017 को गुरू पूर्णिमा पर्व पर विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन, डॉ. भाबाग्रही प्रधान, छात्राध्यापिका मंजू, खुशबू शर्मा, प्रीति स्वामी, चम्पा माली आदि ने विचार व्यक्त किये। डॉ. सरोज राय ने आभार ज्ञापित किया। संचालन डॉ. गिरीराज भोजक ने किया।

अंग्रेजी सम्प्रेषण दक्षता के लिये कक्षाओं का आयोजन

संस्थान के अंग्रेजी विभाग के तत्वावधान में संस्थान के शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक कार्मिकों के अंग्रेजी सम्प्रेषण की दक्षता में वृद्धि के लिए 20 अप्रेल से 15 मई तक (25 दिवसीय) नियमित कक्षाओं का आयोजन किया गया। अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोविन्द सारस्वत व प्रो. रेखा तिवाड़ी ने इन कक्षाओं में सरल व सहज तरीके से सबको अंग्रेजी संभाषण का प्रयोगात्मक अभ्यास करवाया तथा विभिन्न परिस्थितियों का नाट्य प्रस्तुतिकरण करवाते हुये मनोरंजक ढंग से अंग्रेजी सम्प्रेषण को परिपक्व बनाया गया। इसके अलावा अंग्रेजी बोलने की झिझक दूर करने और अंग्रेजी को कार्यस्थल व रोजमर्रा की भाषा बनाने पर जोर दिया।

मोदी यूनिवर्सिटी आफ साईंस एंड टेक्नोलोजी सीकर के सह आचार्य डॉ. अशोक एस. राव ने कार्यशाला को सम्बोधित करते हुये पढ़ाने के तरीकों को सहज बनाने एवं अध्यापक के लिये आवश्यक गुणों के विकास के बारे में बताया तथा कहा कि अध्यापक को अपने विषय में गहरी जानकारी हासिल करने के लिये नियमित अध्ययन आवश्यक होता है। अध्यापक का विद्यार्थियों के सामने संतुलित व सहज व्यवहार, अनुशासन प्रियता, समय की प्रतिबद्धता आदि पर ध्यान देना जरूरी है। उन्होंने सीखने-सिखाने के तरीकों को रोचक बनाने के उपाय बताये। सभी संभागी स्टाफ ने कक्षाओं को बहुत ही उपयोगी बताया।

व्यावहारिक ज्ञान के साथ समय का मूल्य समझना आवश्यक- कक्कड़

नवागन्तुक विद्यार्थियों का समारोह पूर्वक स्वागत

संस्थान के जैनविद्या विभाग एवं अंग्रेजी विभाग के संयुक्त तत्त्वाधान में 12 सितम्बर को स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों का स्वागत समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने नवागन्तुक विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ समय की कीमत समझाई। जैन विद्या की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि सकारात्मक सोच के साथ विद्यार्थी अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करें। अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. गोविन्द सारस्वत ने समय की आवश्यकता के अनुरूप अपने दायित्वों का निर्वहन करने के लिए जीवन में निरन्तर प्रयास करने हेतु प्रोत्साहित किया।

मिस फ्रेशर बनी मिनू रोड़ा

फाईनल के विद्यार्थी तन्मय, माया, विशाखा, विनय, कंचन, पिंकी आदि ने नवागन्तुक विद्यार्थियों का स्वागत किया। समारोह के दौरान अंग्रेजी विभाग की छात्रा मीनू रोड़ा को मिस फ्रेशर चुना गया। कार्यक्रम में नृत्य, गायन, हास्य कविता आदि का आयोजन विद्यार्थियों द्वारा किया गया। डॉ. योगेश कुमार जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अक्षय पाटिल व नाजमीन बानो ने किया।

शैक्षणिक भ्रमण एवं शोध पत्र वाचन

संस्थान के अंग्रेजी विभाग के समस्त एम.ए. उतरार्द्ध के विद्यार्थियों एवं समस्त शिक्षकों ने एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण के तहत 18 फरवरी, 2018 को अजमेर का भ्रमण किया। इस अवसर पर सबने वहां ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह का भ्रमण किया तथा उसके इतिहास व ख्वाजा के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त की। शैक्षणिक दल ने आनासागर झील की सैर करके वहां के प्राकृतिक वातावरण का आनन्द भी उठाया। इस अवसर पर अजमेर के सोफिया गर्ल्स कॉलेज के अंग्रेजी विभाग द्वारा 'प्रवासी, बहुसांस्कृतिकता और पहचान की खोज' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भी इस दल ने हिस्सा लिया तथा उसमें विभागाध्यक्ष डॉ. गोविन्द सारस्वत व सोमवीर सांगवान ने अपने शोध पत्रों का वाचन अलग-अलग सत्रों में किया।

आवरण हटायें तो ज्ञान बाहर आयेगा- प्रो. शास्त्री

संस्थान के अंग्रेजी विभाग एवं जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 20 अप्रेल को आयोजित मंगलभावना समारोह में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिये मंगलभावना प्रकट की। प्रो. दामोदर शास्त्री ने अंदर छिपे ज्ञान के आवरण को हटाने की जरूरत बताई और अंग्रेजी भाषा के वाक्य-विन्यास को विलक्षण बताते हुए भाषा के सौंदर्य को पढ़ने की जरूरत बताई। जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म एवं दर्शन विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि जो कुछ है वह सोच के कारण है और जो कुछ बनोगें वह सोच के कारण ही बनोगे।

अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोविन्द सारस्वत ने जीवन के बदलाव में अपनी क्षमताओं को पहचाने की जरूरत पर बल दिया। कार्यक्रम में उदय चौगले, माया, मुमुक्षु सोनम, कंचन शर्मा, विनय आदि ने अपने अनुभव, विचार एवं गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन प्रासुक व प्रज्ञा शर्मा ने किया।

डांडिया नृत्य

प्रतियोगिता में मानसी एंड ग्रुप विजेता रहा

अभिभावकों ने भी खेला गरबा

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा एक शाम नवरात्रि के नाम के तहत 27 सितम्बर को आयोजित गरबा एवं डांडिया नृत्य प्रतियोगिता में कुल 7 छात्रा समूहों ने डांडिया व गरबा नृत्यों की प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ थे। विशिष्ट अतिथि श्रीमती कनक दूगड़, कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ एवं अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर दाधीच थे।

अभिभावकों की गरबा प्रतियोगिता

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर मानसी एण्ड ग्रुप, द्वितीय हेमलता एण्ड ग्रुप तथा तृतीय स्थान के लिये प्रीति एण्ड ग्रुप को चुना गया व उन्हें पुरस्कृत किया गया। संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की धर्मपत्नी श्रीमती कनक दूगड़ द्वारा व्यक्तिगत रूप से सर्वश्रेष्ठ प्रतियोगी समूह को 2100 रूपये अतिरिक्त राशि पुरस्कार स्वरूप भेंट की गई। कार्यक्रम के अंतिम चरण में सभी उपस्थित अभिभावकों के लिए भी सामूहिक गरबा प्रतियोगिता रखी गई। इसमें सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतिभागियों दीप्ति दूगड़, तृप्ति दाधीच, एवं अंकिता जांगिड़ को संस्थान का स्मृति चिन्ह् देकर सम्मानित किया गया।

नवागन्तुक छात्राओं का स्वागत

अपनी क्षमताओं को पहचानें - प्रो. दूगड़

आचार्य कालु कन्या महाविद्यालय में 11 अगस्त को प्रवेशोत्सव का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुये कहा कि सभी विद्यार्थियों में क्षमता एवं योग्यता है। सभी उन्मुक्त होकर अपना विकास कर सकें, इसके लिये इस विश्वविद्यालय में समस्त आवश्यक संसाधन उपलब्ध हैं।

क्लबों से बढेगी क्षमतायें

कुलपति प्रो. दूगड़ ने घोषणा की कि महाविद्यालय में गठित प्रत्येक क्लब को ऐसे आयोजन के लिये विश्वविद्यालय की ओर से 25-25 हजार रूपये की सहयोग राशि प्रदान की जायेगी। इसके लिये चार क्लबों को प्रारम्भिक स्वीकृति दी गई है। इसके अलावा क्लबों के लिये आवश्यक इंस्ट्रक्टर रखने के लिये प्रयास किया जा रहा है।

कुलसचिव वी.के. कक्कड़ ने छात्राओं को सफलता के लिये टिप्स दिये। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुये कहा कि विश्वविद्यालय के अनुशास्ताओं के सपने के अनुरूप यहां के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिये निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। आयोजित प्रतियोगिताओं मिश फ्रेशर के रूप में खुशनुमा खान को चुना गया तथा मिस ब्यूटी के रूप में तसलीमा का चयन किया गया।

इस अवसर पर छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन हेमलता शर्मा, दीपिका राजपुरोहित व दीप्ति दूगड़ ने किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत एक दिवसीय कैम्प का आयोजन

बाकलिया गांव को स्वच्छ बनाने पर प्रतियोगिताओं व रैली का आयोजन

जैन विश्वभारती संस्थान एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय सेवा योजना एक दिवसीय कैम्प का आयोजन 10 नवम्बर को राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. बिजेन्द्र प्रधान के संयोजन में बाकलिया गांव में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में स्वच्छता जागरूकता रैली राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय से निकाली गई, जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाएं एवं विद्यालय के करीब 350 छात्र-छात्राओं और गांव के लोगो ने भाग लिया। रैली का शुभारम्भ स्कूल प्रांगण से संरपच छोगाराम, ग्राम सेवक नन्हें सिंह, वार्ड पंच अर्जुन सिंह, विद्यालय के प्राचार्य अर्जुन सिंह राणा, सतीश कुमार और सुरेन्द्र कुमार ने हरी झंडी दिखाकर किया। रैली स्कूल से होते हुए गांव के विभिन्न मार्गों, मौहल्लों आदि से होते हुए वापस विद्यालय में पहुंची, जहां सभा आयोजित की गई।

दूसरे चरण में 'बाकलिया गांव को स्वच्छ बनाने में योगदान' पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विजेता विद्यालय की प्रियंका प्रथम स्थान पर, द्वितीय हेमलता शर्मा (आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय) और तृतीय स्थान सुमन ने प्राप्त किया। तृतीय चरण में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय 'बाकलिया को स्वच्छ एवं हरा भरा बनाना' था। इस प्रतियोगिता में राजकीय विद्यालय के प्रथम गोमती, द्वितीय राकेश भाटी एवं तृतीय रेखा ने स्थान प्राप्त किया।

चौथे चरण में स्कूल के प्रधानाचार्य अर्जुन सिंह राणा, अध्यापक सतीश कुमार एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने स्वच्छता पर अपने-अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के अन्त में विजेताओं को पुरस्कार दिये गये। कार्यक्रम में समाज कार्य विभाग के इन्द्रराम पूनियां, क्षेत्रीय पर्यवेक्षक व छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। अन्त में राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापित किया।

यूथ फेस्टिवल

जीवन में सिद्धान्तों के साथ समझौता न करें- कुलपति प्रो. शर्मा

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं कैरियर काउन्सलिंग सेल द्वारा 13 जनवरी को युवा महोत्सव एवं कैरियर फेयर आयोजित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि पं. दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय सीकर के कुलपति प्रो. बी.एल. शर्मा थे। महोत्सव की अध्यक्षता कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने की। मुख्य अतिथि प्रो. शर्मा ने जैन विश्वभारती संस्थान की कार्य प्रक्रिया की प्रशंसा करते हुए कहा कि यहां अहिंसा एवं शांति का पाठ्यक्रम स्वयं यहां के नैतिक चरित्र को उजागर करता है। प्रो. दूगड़ ने छात्राओं को उद्देश्यपरक कर्म में संलग्न रहने हेतु प्रोत्साहित किया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि अभावों में सफलता तलाश कर भी सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। मुख्य वक्ता प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने लक्ष्य प्राप्ति पर बल दिया। अन्त में डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापित किया। अतिथियों ने युवा महोत्सव एवं कैरियर फेयर की समस्त स्टालों का अवलोकन करते हुए छात्राओं की मेहनत को सराहा।

छात्राओं को मार्शल आर्ट्स का प्रशिक्षण : सिखाये आत्मरक्षा के आसान गुर

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 6 सितम्बर, 2017 को छात्राओं के लिए मार्शल आर्ट्स के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कहा कि आत्मरक्षा हेतु सभी को सदैव तत्पर रहना चाहिए, क्योंकि जरा-सी चूक जिन्दगी को नाकाम कर देती है। उन्होंने कहा कि लड़कियों को अपनी सुरक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए। जयपुर से आई कोच डॉ. प्रीति सोनी एवं प्रीति लाटा ने विद्यार्थियों को दौड़ एवं उछल-कूद करवा कर हाथों व पैरों के माध्यम से अपनी सुरक्षा के कई गुर सिखायें। कोच प्रीति सोनी का मानना है कि वर्तमान विश्व में हरेक इंसान को आत्मरक्षा से जुड़ी युक्तियां आनी चाहिए। उन्होंने छात्राओं के पास मौजूद दैनिक वस्तुओं जैसे- पेन, हेयरपिन, बैग, सेफ्टीपिन, बोटल आदि को रक्षा उपकरण के रूप में उपयोग कैसे लिया जा सकता है, का स्वयं प्रयोग करके दिखाया।

साप्ताहिक मार्शल आर्ट प्रशिक्षण शिविर का समापन 9 सितम्बर को किया गया, जिसमें जयपुर से आई कोच डॉ. प्रीति सोनी व प्रीति लाटा को प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। प्रशिक्षण प्राप्त छात्राओं ने इस उपयोगी उपक्रम की गतिविधियों को सराहा। छात्रा हेमलता शर्मा ने कहा कि ऐसे प्रशिक्षणों से छात्राओं का खुद पर विश्वास दृढ़ होता

अध्ययन के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी करें- कुलपति

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 24 मार्च को ज्ञानकेन्द्र का उद्घाटन करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दुगड़ ने कहा कि प्रतियोगिताओं की तैयारी के लिए लम्बे समय तक साधना करनी पड़ती है। लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अध्ययन के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की भी तैयारी करते रहनी चाहिए। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय में यह एक अच्छी शुरूआत हो रही है। ज्ञान केन्द्र में आई.ए.एस., आर.ए.एस., बैकिंग एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित पर्याप्त सामग्री की उपलब्धता रहेगी। तत्पश्चात कुलपति ने प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी के साथ ज्ञानकेन्द्र कक्ष का अवलोकन किया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि इस ज्ञानकेन्द्र के माध्यम से छात्राओं को सभी प्रतियोगी परीक्षाओं का साहित्य उपलब्ध मिलेगा तथा आगे बढ़ने का मार्गदर्शन भी मिलेगा।

शहीद दिवस पर किया महात्मा गांधी को याद

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 30 जनवरी, 2018 को शहीद दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने महात्मा गांधी के जीवन से जुड़ी हुई अनेक बातें छात्राओं के साथ साझा किया। कार्यक्रम में छात्रा हेमलता शर्मा व दीपिका राजपुरोहित ने काव्य प्रस्तुति के माध्यम से गांधी के सपनों के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रगति भटनागर ने किया।

मंगल भावना समारोह

धैर्य के साथ प्रयास करने पर मिलती है सफलता- प्रो. दूगड़

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि जीवन में धैर्य खोने से नुकसान उठाना पड़ता है। सदैव प्रयासरत रहना चाहिये और अच्छा बनने का प्रयास करना चाहिये। वे 17 अप्रेल को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के मंगलभावना समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस अवसर पर छात्राओं को शुभकामनायें देते हुये कहा कि यहां केवल डिग्रियों के लिये ही शिक्षा नहीं दी जाती, बल्कि यहां व्यक्तित्व को तराशने का काम किया जाता है। समारोह में छात्राओं ने नृत्य, गीत, योगासन आदि के साथ विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। इस अवसर पर अंतिम वर्ष की छात्राओं को द्वितीय वर्ष की छात्राओं द्वारा उपहार देकर विदाई दी गई।

इनका किया गया सम्मान

इस अवसर पर महाविद्यालय की विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठ रही छात्राओं, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों तथा क्षेत्र के विद्यालयों के प्राचार्यों व प्रधानों का भी सम्मान किया गया। कुलपति प्रो. दूगड़ ने इनके अलावा महाविद्यालय द्वारा आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के विजेताओं को भी सम्मानित किया गया, जिनमें लक्ष्मी भाटी सुजानगढ को पहला पुरस्कार, ज्योति जांगिड़ सुजानगढ को द्वितीय पुरस्कार, दयानन्द स्कूल के नत्थूराम मौर्या को तृतीय पुरस्कार एवं मुरारी रांकावत निम्बी जोधां व मनोज रतावा निम्बी जोधां को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। इनके अलावा महाविद्यालय की श्रेष्ठ छात्रा के रूप में ज्योति नागपुरिया को, बेहतरीन एकरिंग के लिये हेमलता शर्मा व दीपिका राजपुरोहित को, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अग्रणी रहने पर किरण बानो को, एनसीसी में उपलब्धि के लिये मानसी बुगालिया को सम्मानित किया गया।

प्रख्यात लेखक आर.एस. यादव का कॅरियर परामर्श व्याख्यान आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 27 नवम्बर को आयोजित व्याख्यान में प्रमुख वक्ता राजनीति विज्ञान विषय के चिर-परिचित लेखक एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिनाम विद्वान आर.एस. यादव थे। उनकी 'भारत की विदेशनीति' नामक पुस्तक देश के दर्जनों विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शुमार है। प्रो. यादव ने छात्राओं को विद्यार्थी जीवन में सफलता हेतु कुछ महत्वपूर्ण गुर सिखाये। उन्होंने कहा कि किसी भी विद्यार्थी द्वारा परीक्षा में दिया गया प्रस्तुतिकरण सबसे महत्वपूर्ण होता है। प्रस्तुतिकरण की सक्षमता विद्यार्थी को अपेक्षा से अधिक सफलता दिलाने में सहायक होती है। जिसके लिये विद्यार्थी को परीक्षा से ठीक पहले शांतचित्त एवं सहज होकर परीक्षा के भय को दिमाग से निकाल देना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। उन्होंने प्रो. यादव का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रगति भटनागर ने किया।

राजस्थान राज्य-अन्तरमहाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित

बीकानेर की विद्या भाटी प्रथम और एकेकेएम की मेहनाज बानो द्वितीय रही

युवा दिवस 12 जनवरी 2018 को देवराज मूलचन्द नाहर चैरिटेबल ट्रस्ट, बैंगलोर द्वारा प्रायोजित एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के विवेकानन्द क्लब के तत्वावधान में आयोजित राज्य स्तरीय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में ''सदन की राय में सामाचार माध्यमों का मौजूदा रवैया राष्ट्र एकता में बाधक है' विषय पर प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने प्रस्तुतियां दी। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर महारानी सुदर्शना कॉलेज बीकानेर की छात्रा विद्या भाटी, द्वितीय स्थान पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय लाडनूं की छात्रा मेहनाज बानो और तृतीय स्थान पर राजकीय महाविद्यालय अजमेर के छात्र शिवराज चौधरी रहे। सांत्वना पुरस्कार भारतीय टी.टी. कॉलेज जसवंतगढ़ के यश शर्मा एवं श्री माधव कॉलेज की लीला भार्गव को प्रदान किये गये। प्रतियोगिता का आगाज कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री मनलाल मीणा (डीडवाना) रहे। विशिष्ट अतिथि देवराज मूलचन्द नाहर चैरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी मूलचन्द नाहर रहे, जिन्होंने आगामी वर्ष में होने वाले सभी महाविद्यालयी कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी देते हुये उनका प्रायोजक बनना स्वीकार किया। प्रतियोगिता के निर्णायक बी.जी. शर्मा (सुजानगढ़), भंवरलाल जांगीड (लाड़नूं) व डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा (सुजानगढ़) थे। संचालन प्रतियोगिता संयोजक अभिषेक चारण ने किया।

नई सोच के साथ विकास मार्ग पर बढ़ाया जायेगा महाविद्यालय

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर 4 जुलाई, 2017 को दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यभार ग्रहण करने के साथ ही शिक्षकों की बैठक ली तथा कहा कि महाविद्यालय को अब एक नई सोच और नये चिंतन के साथ विकास के मार्ग पर बढाया जाना है। उन्होंने बताया कि यहां लाईब्रेरी आधारित शिक्षण को बढ़ावा दिया जायेगा, ताकि बच्चे अपने विषय के बारे में पूर्ण रूप से समझ सके तथा शिक्षण के साथ शैक्षणेत्तर गतिविधियों का महत्व भी होता है, ताकि छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो सके; इसके लिये हर गुरूवार को स्पोर्टस, सांस्कृतिक गतिविधियां, क्रियेटिव एक्टीविटी, सोफ्ट स्किल्स, कैरियर रिलेटेड कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जायेगा। छात्राओं को वाद-विवाद, लेखन कला, चित्रकला, इंग्लिश स्पोकन, संस्कृत सम्भाषण आदि द्वारा पूर्ण रूप से पारंगत बनाने के लिये प्रयास किया जायेगा, ताकि इस महाविद्यालय के विद्यार्थी हर क्षेत्र में श्रेष्ठ बन पाये।

'कम्पनी सेक्रेट्री कैसे बनें' विषयक व्याख्यान आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 30 अक्टूबर को कॅरियर काउन्सलिंग के तहत 'कम्पनी सेक्रेट्री कैसे बनें' विषयक व्याख्यान रखा गया, जिसमें 'द इंस्टीट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेट्रीज ऑफ इण्डिया' के सहायक निदेशक राजेश गुप्ता ने कम्पनी सेक्रेट्री के कार्यक्षेत्र विस्तार एवं वर्तमान एवं भविष्य में उससे जुड़ी संभावनाओं पर चर्चा की। उन्होंने छात्राओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों का भी यथोचित उत्तर देकर समस्याओं का समाधान किया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने मूल्यपरक शिक्षा को व्यक्तित्व विकास का आधार स्तम्भ मानते हुए छात्राओं को पर्सनलिटी डवलपमेंट कर जीवन के स्वर्णिम पथ पर अग्रसर होने हेतु आह्वान किया।

मातृभाषा से होता है मानसिक विकास-प्रो. त्रिपाठी

विश्व मातृभाषा दिवस मनाया

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 21 फरवरी को अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि मातृभाषा के माध्यम से जो ज्ञान सीखा जाता है, वह विद्यार्थी सहजता से हृदयंगम कर सकता है। कार्यक्रम में हेमलता शर्मा, मेहनाज बानो, सुमन प्रजापत, करिश्मा खान, नन्दिनी पारीक, दक्षता कोठारी, नीलोफर बानो आदि ने मातृभाषा पर अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी व्याख्याता अभिषेक चारण ने किया।

निबंध व भाषण प्रतियोगिता आयोजित- संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में भी मातृभाषा दिवस के अवसर पर आयोजित भाषण एवं निबंध प्रतियोगिता में कुल 80 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने की।

मेहनाज ने जीते एक माह में तीन राज्य स्तरीय पुरस्कार

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा मेहनाज बानो द्वारा मात्र एक माह की अवधि में लगातार तीन राज्य स्तरीय पुरस्कार हासिल करने पर उसे कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, कुलसचिव विनोद कमार कक्कड़, महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी सहित समस्त स्टाफ ने बधाई दी। छात्रा मेहनाज बानो ने झुंझुनूं के जेजेटी विश्वविद्यालय में आयोजित राज्य स्तरीय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया। इससे पूर्व कुचामनसिटी में राजकीय पीजी महाविद्यालय में 2 फरवरी को आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया था और उससे पहले जैविभा विश्वविद्यालय में आयोजित राज्य स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में लक्ष्मी भाटी रही प्रथम

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता 2017-18 के परिणामों की घोषणा करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर गांधी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सुजानगढ़ की लक्ष्मी भाटी रही। द्वितीय स्थान पर भी गांधी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सुजानगढ़ की छात्रा ज्योति जांगिड़ एवं तृतीय स्थान पर दयानन्द स्कूल लाडनूं का छात्र नत्थूराम मौर्य रहा तथा प्रोत्साहन पुरस्कार के लिये भीकूलाल सारड़ा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निम्बी जोधा के छात्र मुरारी रांकावत व मनोज रतावा का चयन किया गया।

आदि शंकराचार्य की जयंती मनाई

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 20 अप्रेल को आदि शंकराचार्य की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि शंकराचार्य के जीवन-दर्शन से स्पष्ट होता है कि महानता का पैमाना कभी अवस्था नहीं होता। उन्होंने बताया कि व्यासजी के महाग्रंथ ब्रह्मसूत्र पर भाष्य मात्र 16 वर्ष की अवस्था में लिख दिया था। उन्होंने 8 वर्ष की अवस्था में चारों वेद पढ़ लिये थे। कार्यक्रम का संचालन सोनिका जैन ने किया।

विद्यार्थियों की जागरूकता के लिये केरियर परामर्श कार्यक्रम आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तत्वावधान में संस्थान के ऑडिटोरियम में 29 नवम्बर को केरियर परामर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राज. भूतोड़िया गर्ल्स स्कूल, केसर देवी गर्ल्स स्कूल एवं मौलाना आजाद स्कूल के 11वीं एवं 12वीं की छात्राओं ने भाग लिया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम में कहा कि आगे की शिक्षा कहाँ ग्रहण करें, इस प्रमुख प्रश्न में विद्यार्थी सबसे पहले अपने क्षेत्र में देखता है कि अध्ययन की उत्तम व्यवस्था कहाँ है। प्रत्येक विद्यार्थी को चाहिए कि उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश के लिए किसी से प्रभावित या प्रेरित होकर निर्णय न ले, अपितु जाँच-परख कर निर्णय ले, क्योंकि इस निर्णय से उसका भविष्य प्रभावित होता है।

चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास पर जोर

उन्होंने आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के बी.ए., बी.कॉम एवं बी.एस.सी. पाठ्यक्रम पर प्रकाश डाला तथा बताया कि यहां चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व को निखारने पर पूरा जोर दिया जाता है। अध्ययन के साथ लिखने, बोलने का अभ्यास विवेकानन्द क्लब द्वारा कराया जाता है। नृत्य, चित्रकारी, भाषण आदि करवाने पर विशेष कार्य दिवस पर बल दिया जाता है। समय-समय पर अभिभावकों के साथ संगोष्ठी करके विद्यार्थियों की प्रगति का लेखा-जोखा लेकर भावी नीतियाँ निर्धारित होती है। प्रो. त्रिपाठी ने महाविद्यालय में ज्ञानकेन्द्र के माध्यम से विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की व्यवस्था पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा कि यह एक विश्वविद्यालय है जहाँ प्रवेश लेकर बी.ए., एम.ए., पी-एच.डी. आदि संपूर्ण शिक्षा ग्रहण की जा सकती है। अहिंसा शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से लाडनूं एवं परिपार्श्व में स्थित विद्यालयों के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए जागरूक करने एवं उनको मार्गदर्शन देने का प्रयास हो रहा है। इस अवसर पर डा. विकास शर्मा, केसर देवी स्कूल की प्राध्यापिका आरती पटेल एवं संतोष, मौलाना आजाद स्कूल के इमरान एवं भूतोड़िया स्कूल के सुशीला एवं शिल्पा उपस्थित थे।

त्रिदिवसीय नवीकरण एवं प्रेक्षाध्यान शिविर

ध्यान-योग से दें जीवन को नई ऊंचाईयां-प्रो. धर

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय नवीकरण एवं प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन प्रेक्षा इन्टरनेशनल हॉल में 27 जुलाई को समारोह पूर्वक किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि अहिंसा एवं शांति विभाग के प्रो. अनिल धर ने कहा कि ध्यान एवं योग को अपने जीवन की नियमित क्रिया के रूप में उतारें और निरन्तर अपने उद्देश्य-पथ पर गतिमान बने रहें। विशिष्ट अतिथि समाजकार्य विभाग के डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने कहा प्रेक्षाध्यान से चरित्र निर्माण एवं स्वयं शुद्धि का सफल प्रयास किया जाता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि हमेशा बड़े सपने देखो, ऊँची उड़ान भरो और अनन्त आकाश को छूने का प्रयास करो। अपने सपने की दिशा में अपनी अनन्त ऊर्जा का प्रयोग करोगे तो पाओगे कि आपकी मंजिल आपके कदमों में होगी। समारोह में ज्योति नागपुरिया, सोनिका एवं करिश्मा खान ने अनुभवों को साझा किया। आरम्भ में पारूल दाधीच, निकिता एवं रेखा ने आसन एवं प्राणायाम के प्रयोग कराये। समणी सुलभप्रज्ञा ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराये। सहायक आचार्य कमल कुमार मोदी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रगति भटनागर ने किया।

नई पहल

छात्राओं में सृजनात्मक क्षमताओं के विकास के लिये क्लबों का गठन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में छात्राओं में विविध प्रकार की सृजनात्मक क्षमताओं के विकास की दृष्टि से विविध क्लबों की स्थापना की गई है। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने 3 अगस्त, 2017 को बताया कि महाविद्यालय में यह एक नई पहल की शुरूआत है, जिसमें छात्रायें अपने विषयों के अध्ययन के साथ-साथ अपनी रूचि व क्षमता के अनुसार वक्तृत्व कला, लेखन कला, नृत्य व गायन कला, चित्रकला, खेलकूद, ध्यान आदि में पारंगत हो सकेंगी। उन्होंने बताया कि वक्तृत्व कला के अन्तर्गत वाद-विवाद, भाषण, तात्कालिक भाषण आदि के विकास के लिये विवेकानन्द क्लब का गठन किया गया है। कहानी, कविता, एकांकी, नाटक, बाल कहानी, लघुकथा, व्यंग्य, संस्मरण, उपन्यास आदि के क्षेत्र में लेखन कला के विकास के लिये महाश्रमण क्लब का गठन किया गया है। छात्राओं में नृत्य, गायन आदि की क्षमता के विकास के लिये सोनल मानसिंह क्लब का गठन किया गया है। चित्रकला, पेंटिंग, रंगोली आदि में छात्राओं को दक्ष बनाने के लिये अपर्णा सेन क्लब का गठन किया गया है। हॉकी, वॉलीबोल, फुटबॉल, कबड्डी, खो-खो, क्रिकेट आदि खेलकूद के लिये स्पोर्ट्स क्षमता बढ़ाने व छात्राओं को विविध खेलों में पारंगत बनाने के लिये पीवी संधु क्लब का गठन किया गया है। इनके अलावा एकाग्रता व ध्यान तथा छात्राओं की मानसिक क्षमताओं के विकास के लिये महाप्रज्ञ क्लब का निर्माण किया गया है।

साहित्यिक प्रतियोगिता

छात्राओं ने किया अपने स्तर पर आयोजन

साहित्यिक प्रतियोगिता में अभिलाषा रही प्रथम स्थान पर

जिन्दगी वह जो दूसरों के लिये मापदंड बन जाये- प्रो. दूगड़

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 15 फरवरी, 2018 को जिन्दगी विषय पर साहित्यिक प्रतियोगिता का आयोजन महाविद्यालय के विवेकानन्द क्लब के तत्वावधान में किया गया जिसमें शहर के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने जिन्दगी विषय पर केन्द्रित कविता पाठ, कहानी एवं संस्मरणों की प्रस्तुतियां दी।

बच्चों में मौलिक लेखन की शुरूआत हो

प्रतियोगिता में विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान करते हुये जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने छात्राओं द्वारा अपने स्तर पर किये गये आयोजन को पहला प्रयोग बताते हुये कहा कि इसे बेहतर बनाने के लिये प्रयास करना चाहिये। उन्होंने अपने सम्बोधन में छात्राओं को प्रेरित करते हुये कहा, जिन्दगी वह है जो दूसरों के लिये मापदंड बन जाये। प्रतियोगिता के समीक्षक प्रमुख साहित्यकार राजेश विद्रोही व सह समीक्षक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन थे।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के विवेकानन्द क्लब के तत्वावधान में इस प्रतियोगिता के सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन, संचालन एवं व्यवस्थायें छात्राओं द्वारा ही सम्पन्न की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता छात्रा ज्योति नागपुरिया ने की। मुख्य अतिथि के रूप में छात्रा तृप्ति दाधीच एवं विशिष्ट अतिथि पूजा चौधरी रही। कार्यक्रम का संचालन छात्रा दीपिका राजपुरोहित व हेमलता शर्मा ने किया।

साहित्यिक प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि प्रथम स्थान पर आदर्श विद्या मंदिर सी. सै. स्कूल की छात्रा अभिलाषा स्वामी रही। द्वितीय स्थान पर विमल विद्या विहार सी. सै. स्कूल की छात्रा यशप्रिया और तृतीय स्थान पर मौलाना आजाद सी. सै. स्कूल की नाजमीन बानो व साहिर खान रहे। प्रतियोगिता की निर्णायक छात्रायें रेशमा बानो, रेखा लोहिया व मुमुक्षु आरती थे।

अभिभावक-शिक्षक बैठक आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में विद्यार्थियों के विकास की दृष्टि से विद्यार्थियों के संदर्भ में अभिभावक-शिक्षक बैठक 25 नवम्बर को आयोजित की गई। बैठक के दौरान अभिभावकों को महाविद्यालय परिवार के ओर से फीड बैक फॉर्म वितरित कर महत्त्वपूर्ण सुझावों के लिए आमंत्रित किया गया। बैठक में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि शिक्षक-छात्र एवं अभिभावक एक ऐसी संगमत्रयी है, जिसके द्वारा छात्र का सर्वांगीण विकास संभव होता है। प्रो. त्रिपाठी ने छात्राभिभावकों को महाविद्यालय की जुलाई से लेकर अब तक की सभी गतिविधियों से अवगत भी करवाया, जिसमें छात्राओं को जुलाई माह में दिए गए मार्शल आर्टस प्रशिक्षण, जुलाई से अक्टूबर तक प्रत्येक गुरूवार को चलने वाली क्लब गतिविधियां, प्रत्येक जयन्ती को प्रार्थना कक्ष में उत्साह से मनाना एवं ज्ञान केन्द्र के माध्यम से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी आदि का विवरण दिया गया।

बैठक के दौरान अभिभावक इंसाफ खान, बीरबल प्रजापति, प्रदीप कोठारी आदि ने महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये तथा संस्थान के उत्कृष्टतम कार्यों की सराहना की। बैठक में कुछ महिला अभिभावकों ने भी अभिव्यक्तियां दी। इस दौरान महाविद्यालय के बी.कॉम तृतीय वर्ष की छात्रा हेमलता शर्मा ने महाविद्यालय के वैशिष्ट्य को अभिभावकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए महाविद्यालय की नवाचार करने की गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला। बैठक के प्रभारी अभिषेक चारण, डॉ. बलवीर सिंह एवं सोनिका जैन आदि ने अभिभावकों से सीधे संवाद कर उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया।

हिन्दी दिवस : वैश्विक ऊंचाईयों पर है हिंदी

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में हिन्दी भाषा के महत्व को चिरस्थाई बनाये रखने के लिए 15 सितम्बर को हिन्दी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि हिन्दी को विषय-संकीर्णता से नहीं बल्कि भाषा-व्यापकता एवं उसके बढ़ते महत्व के आधार पर देखना चाहिए, क्योंकि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी भाषा नित नई ऊंचाईयां छू रही है और हिन्दी भाषा की श्रेष्ठता पर आज समूचा विश्व एकमत नजर आता है। कार्यक्रम में छात्रा सरीता शर्मा, भगवती, दीपिका राजपुरोहित, रेखा हरिजन, रश्मि, निकिता, सरीता, राजलक्ष्मी, माया शर्मा आदि ने हिन्दी दिवस पर अपने विचार रखकर विषय एवं भाषा की सार्थकता प्रकट की।

शिक्षक दिवस मनाया

5 सितम्बर को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा शिक्षक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ एवं कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ मौजूद रहे। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने विद्यार्थी जीवन से जुड़ी से कई यादें साझा की। कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़, प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, अंग्रेजी के विभागाध्यक्ष डॉ. गोविन्द सारस्वत, अभिषेक चारण ने अपने विचार व्यक्त किये। उषा सेन, अंकिता, माया एवं संध्या द्वारा सामूहिक नृत्य एवं मानसी जांगीड़, पूजा, महिमा प्रजापत, निष्ठा मोदी, रेखा गुर्जर, कौशल्या, दीपिका गिरिया एवं खुशनुमा ने मनोहारिक नृत्य की प्रस्तुतियां दी।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रतिष्ठा एवं दक्षिता कोठारी ने नृत्य के साथ गणेश वंदन प्रस्तुत किया। छात्रा ज्योति नागपुरिया एवं रेखा हरिजन ने आभार प्रकट किया व स्लाईड शो से शिक्षकों से जुड़ी यादों को प्रस्तुत किया गया। अंत में बैलून पासिंग खेल के माध्यम से सभी शिक्षकों ने अपने विद्यार्थी जीवन की यादें साझा की। कार्यक्रम का संचालन हेमलता शर्मा, प्रतिष्ठा व दक्षिता कोठारी ने किया।

भाई-बहिन के प्यार का प्रतीक है रक्षाबंधन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 5 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि भाई-बहिन का प्यार जाति-धर्म से उपर होता है और इस प्यार का प्रतीक राखी का त्यौंहार भी सबके लिये होता है। कार्यक्रम में जगदीश यायावर, ज्योति नागपुरिया, कृष्णा सेन, रश्मि, दीपिका, पूजा कंवर व हेमलता ने रक्षा बधन के त्यौंहार का महत्व, मनाने के कारण आदि पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया।

बाल-दिवस पर नेहरू को याद किया

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 14 नवम्बर को नेहरू जयन्ती को बाल-दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक एवं महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रथम प्रधानमंत्री एवं कुशल राजनीतिज्ञ जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और उनकी विदेश नीतियों एवं उनसे पड़ने वाले वैश्विक प्रभावों को बताया। कार्यक्रम में प्रत्येक संकाय की छात्राओं ने जवाहरलाल नेहरु की जीवन स्मृतियों को याद किया। डॉ. प्रगति भटनागर, सोनिका जैन, डॉ. बलवीरसिंह, सोमवीर सागवान एवं अभिषेक चारण ने विचार रखे।

गुरूनानक जयन्ती मनाई

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 3 नवम्बर को गुरुनानक जयन्ती का आयोजन प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में रखा गया। उन्होंने गुरु नानक के जीवन एवं उनसे जुड़ी घटनाओं को बताया। हिन्दी व्याख्याता अभिषेक चारण ने गुरुनानक द्वारा सिक्ख धर्म की स्थापना से लेकर गुरू गोविन्दसिंह तक के सिक्ख आदर्शों को अभिव्यक्त कर इस पंथ के स्वर्णिम इतिहास की जानकारी दी।

राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय शिविर आयोजित

एनएसएस के स्वयंसेवकों ने पिलाई पोलियो की खुराक

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दो इकाईयों आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं जैन विश्वभारती संस्थान के सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन 27 जनवरी से 2 फरवरी तक किया गया। शिविर का शुभारम्भ पल्स पोलियो अभियान सम्बंधी प्रशिक्षण के साथ किया गया। इस अवसर पर जिला पुलिस अधीक्षक परिस देशमुख ने एक नन्हें बच्चे को पोलियो ड्रोप्स पिला कर शिविर का शुभारम्भ किया और कहा कि पोलियो की खुराक स्वस्थ भारत की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। शिविर में स्थानीय राजकीय चिकित्सालय के डॉ. बी.आर सारण एवं उनकी टीम ने स्वयं सेवकों को पल्स पोलियों का प्रशिक्षण दिया। इसके बाद सभी शिविरार्थी 200 स्वयंसेवकों ने निर्धारित पोलियो-बूथों पर जाकर तथा अगले दो दिन सभी एनएसएस स्वयंसेवकों ने शहर के विभिन्न क्षेत्रों में घर-घर जाकर बच्चों को पोलियो की दवाई पिलाई।

छात्राओं ने किया ट्रेक रंगाई का कार्य

शिविर के अन्तर्गत संस्थान प्रांगण में ट्रेक रंगाई का कार्य स्वयंसेवकों द्वारा किया गया। कार्य का शुभारम्भ संस्थान के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ एवं महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी द्वारा संस्थान के प्रतीक चिह्न के चारों ओर बने ट्रेक पर रंगाई करते हुये किया गया। बाद में एनएसएस की छात्राओं ने विधिवत रूप से सम्पूर्ण ट्रेक की रंगाई का कार्य किया। इसके साथ ही छात्र-छात्राओं द्वारा सम्पूर्ण परिसर में स्थित पेड़ों पर भी रंगाई का कार्य किया गया। शिविर के दोनों इकाईयों के समन्वयक क्रमशः डॉ. जुगल किशोर दाधीच एवं डॉ. प्रगति भटनागर के निर्देशन में आयोजित किया गया। सोनिका जैन ने स्वयं सेवकों को जीवन में सदैव खुशनुमा रहने के गुर सिखाये। शिविर का समापन लाडनूं शहर के सभी प्रमुख मार्गों से स्वच्छता एवं स्वास्थ्य जागरूकता रैली निकाल कर किया गया।

शिविर के पांचवें दिन आयोजित प्रेरणा सत्र में क्षेत्र के उर्दू व हिन्दी के प्रसिद्ध शायर राजेश विद्रोही ने कहा कि राष्ट्र के उत्थान के लिये युवाशक्ति का ही उपयोग आवश्यक है। कार्यक्रम का संचालन छात्र हेमलता ने किया।

पोस्टर प्रतियोगिता में नेहा प्रजापत प्रथम रही

शिविर के प्रथम चरण में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के अंग्रेजी के सहायक आचार्य सोमवीर सांगवान द्वारा फॉनेटिकस पर कार्यशाला आयोजित की गई। द्वितीय सत्र में सभी स्वयं सेवकों ने विश्वविद्यालय परिसर में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य जागरूकता सम्बन्धित नारे लगाकर स्वच्छ एवं स्वस्थ रहने का संदेश दिया। तृतीय चरण में समापन समारोह में शिविर के दौरान आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया गया, जिसमें नेहा प्रजापत प्रथम, योगिता शर्मा द्वितीय तथा अंकिता बैंगानी तृतीय रही। कार्यक्रम में ज्योति नागपुरिया, सुरैया बानो, तन्मय जैन, एवं आनन्दपाल सिंह ने अपने शिविर अनुभव साझा किये।

दो दिवसीय दूरस्थ शिक्षा सम्प्रसारक कार्यशाला

दूरस्थ पाठ्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाने की अपील

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय (27-28 अक्टूबर) दूरस्थ शिक्षा सम्प्रसारक कार्यशाला के 27 अक्टूबर को आयोजित उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि सम्प्रसारक इस विश्वविद्यालय के प्रतीक है, उनका आचरण एवं संवाद विश्वविद्यालय को प्रस्तुत करता है। इस विश्वविद्यालय की गुणवत्ता व प्रामाणिकता ही इसकी विशेषता है। यह विश्वविद्यालय नियमों को सर्वोपरी मानता है, सम्प्रसारक नियमों की पालना की ओर विशेष ध्यान रखें। प्रो. दूगड़ ने विश्वविद्यालय के नये नियमों का उल्लेख करते हुए कहा कि अब से विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा के परीक्षा केन्द्र राजकीय महाविद्यालय, नवोदय विद्यालय, सैनिक स्कूलों अथवा समकक्ष संस्थानों में ही स्थापित किये जायेगें। मुख्य अतिथि के रूप में इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय जोधपुर की निदेशक डॉ. ममता भाटिया ने कहा कि दूरस्थ शिक्षा का दायरा अब विस्तृत बनता जा रहा है। सम्प्रसारकों को अधिक जिम्मेदारी के साथ इस विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाना चाहिए।

नैतिक मूल्यों से प्रेरित पाठ्यक्रम सबके लिये उपयोगी

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि इग्नू के सहायक निदेशक मुख्यतारअली ने कहा कि आज की तनावपूर्ण जिन्दगी में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी हैं। आज के दौर में दूरस्थ शिक्षा का महत्त्व बढा है, दूरस्थ शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों का उच्च पदों पर चयन होना इसकी महत्ता को प्रमाणित करता है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के

अब जैन व प्राच्य विद्या सम्प्रसारक कहलायेंगे

कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्यों को बताते हुए दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि यह विश्वविद्यालय प्राच्य विद्याओं का विशिष्ट केन्द्र है, इसलिए अब सम्प्रसारकों को जैन एवं प्राच्य विद्या सम्प्रसारक के रूप में जाना जायेगा। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्प्रसारकों के सहयोग से ही यह विश्वविद्यालय जन-जन तक पहुंच सकता है।

प्रबन्ध मण्डल के सदस्य व मगध विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. नलिन के. शास्त्री ने तकनीकी विस्तार के साथ दूरस्थ शिक्षा को हर व्यक्ति के लिए उपयोगी बताया।

जैन एवं प्राच्य विद्या प्रचार-प्रसार सम्मान

इस अवसर पर देश भर से समागत सम्प्रसारकों में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए चार सम्प्रसारकों गच्छीपुरा के हनुमानराम, जोधपुर के कुशलराज समदड़िया, जायल के इन्द्रदेव जाखड व देवातु की दिव्या राठौड को जैन एवं प्राच्य विद्या प्रचार-प्रसार सम्मान प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें शॉल, श्रीफल एवं मोमेन्टों भेंट किये गये। कार्यक्रम का संचालन सहायक निदेशक श्रीमती नूपुर जैन ने किया एवं समन्वयक जे.पी. सिंह ने आभार ज्ञापित किया।

दूरस्थ शिक्षा में लाखों लोगों ने अर्जित की शिक्षा

कार्यशाला के दूसरे दिन सत्र की अध्यक्षता करते हुए शोध विभाग के निदेशक प्रो. अनिल धर ने कहा कि दूरस्थ शिक्षा अब नियमित शिक्षा से किसी भी मुकाबले में कम नहीं है। आज दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से लाखों लोग शिक्षा अर्जित कर अपने कैरियर को नया आयाम दे रहे है। समणी नियोजिका प्रो. समणी ऋजु प्रज्ञा ने कार्यशाला को उपयोगी बताते हुए क्वालिटी व क्वांटिटी दोनों को ही बढ़ाने का आह्वान किया। दूरस्थ शिक्षा के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने दो दिवसीय कार्यशाला का प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अहमदाबाद के बसंत मालू, जयपुर की रीना गोयल, इंदौर के डॉ. दक्षदेव गौड आदि सम्प्रसारकों ने अपने-अपने अनुभव सुनाये।

स्वरचित एकांकी लेखन प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के तत्वावधान में विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता के विकास के लिए आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में सत्र 2017-2018 में पत्राचार के विद्यार्थियों के लिए आयोजित स्वरचित एकांकी लेखन प्रतियोगिता में देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण शुद्धि एवं नैतिक मूल्यों का संवर्द्धन करने वाली स्वरचित एकांकी भेजी जानी थी। निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी के अनुसार इस प्रतियोगिता में सवाई माधोपुर के सोनू कुमार बैरवा को प्रथम, नागौर के गिरीराज व्यास को द्वितीय तथा जोधपुर के एम. उषा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ है।

दूरस्थ शिक्षा है सर्वजन सुलभ शिक्षा- प्रो. त्रिपाठी

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा है कि दूरस्थ शिक्षा में एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय और विभिन्न राज्यों के 13 मुक्त विश्वविद्यालय तथा 150 अन्य विश्वविद्यालय एवं संस्थान कार्य कर रहे हैं। जैन विश्वभारती संस्थान एक ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ शिक्षा की द्वैध प्रणाली लागू है। यहाँ नियमित शिक्षा के साथ-साथ दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से कई उपयोगी पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं। दूरस्थ शिक्षा की सुविधा होने के कारण यह संस्थान लाडनूं जैसे छोटे से स्थान पर होते हुए भी देश के कोने-कोने के विद्यार्थी यहाँ के उपयोगी पाठ्यक्रमों का लाभ उठा रहे हैं। वे यहां 17 जनवरी 2018 को आयोजित एक संगोष्ठी को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि स्वतः शिक्षा बोधक प्रणाली में पाठ्यसामग्री दूरस्थ शिक्षा के लिए आवश्यक है। इस प्रकार की पाठ्यसामग्री शिक्षक की कमी को पूरा करती है क्योंकि यह पाठ्यसामग्री स्वतः व्याख्यायित, स्वतः निर्देशित, स्वतः प्रेरित, स्वतः पूरित एवं स्वतः मूल्यांकित होती है।

फोन, फैक्स, ई-मेल, वेबसाइट, इण्टरनेट, टेलीकान्फ्रेन्सिग, वीडियो कान्फ्रेन्सिग आदि तकनीकी संसाधन दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता लाते हैं। अतः गुणवत्तापूर्ण दूरस्थ शिक्षा आज के युग की मांग है। इस अवसर पर सहायक निदेशक नुपूर जैन ने दूरस्थ शिक्षा में सूचना तकनीकी की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। जे.पी. सिंह, पंकज भटनागर, अजय पारीक, मंयक जैन, ओम प्रकाश सारण, हिमांशु खिड़िया एवं अंजू जैन ने भी दूरस्थ शिक्षा की उपादेयता पर प्रकाश डाला।

पांच दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

सर्वांगीण विकास का माध्यम होती हैं प्रतियोगिताएँ– प्रो. त्रिपाठी

संस्थान में पांच दिवसीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन 13 से 17 नवम्बर तक किया गया। प्रतियोगिताओं के उद्घाटन समारोह में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है। ये प्रतियोगिताएं हमारे तनाव को दूर करने में सहायक है। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि किताबी ज्ञान के साथ-साथ हमारे मानसिक विकास में ये सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं अत्यन्त जरूरी है। डॉ. बी.प्रधान, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. जुगलकिशोर दाधीच एवं डॉ. गोविन्द सारस्वत ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सांस्कृतिक कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अमिता जैन ने प्रतियोगिताओं के परिचय एवं उद्देश्य पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. आभा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के प्रथम दिन एकल नृत्य प्रतियोगिता में 27 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में नुपूर जैन, सुश्री मुकुल सारस्वत एवं सोनिका जैन रही।

समूह नृत्य एवं रंगोली प्रतियोगिता आयोजित

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के दूसरे दिन समूह नृत्य एवं रंगोली प्रतियोगिताओं में समूह नृत्य में सात समूहों- आनन्दपाल एवं समूह, मुस्कान एवं समूह, ज्योति भोजक एवं समूह, सुष्मिता एवं समूह, डिम्पल सोनी एवं समूह, पूजा चौधरी एवं समूह तथा सीमा शेखावत एवं समूह ने तथा रंगोली प्रतियोगिता में 42 समूहों ने प्रतिभागिता की। सभी समूहों ने भारतीय संस्कृति को प्रतिपादित तथा वर्तमान समय की ज्वलन्त समस्याओं को रेखांकित किया। प्रतियोगिताओं का संयोजन डॉ.

नाटक, माईम व एकल गायन प्रतियोगिता

प्रतियोगिताओं के चतुर्थ दिवस नाटक एवं माईम प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। नाटक प्रतियोगिता में पांच समूहों उषा सैनी एवं समूह, ताम्बी एवं समूह, मुमुक्षु चेतना एवं समुह, मुमुक्षु धरती एवं समूह, सुविधा जैन एवं समूह तथा माईम प्रतियोगिता में रंजित एवं समूह, खुशबू एवं समूह, सरिता फिरोदा एवं समूह आदि ने प्रतिभागिता की। नाटक एवं माईम दोनों ही प्रतियोगिताएं संदेशपरक थी, जिनमें राष्ट्रीय सद्भाव, कहीं राष्ट्रीय चेतना, तो कहीं बेटी बचाओ आदि समाज की अनेक ज्वलन्त समस्याओं को उठाया गया।

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के अंतिम दिवस एकल गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 28 प्रतिभागियों ने प्रस्तुतियां दी। इसमें गजल, लोकगीत एवं भजन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

ये रहे विजेता

प्रतियोगिताओं के समापन समारोह में प्रतियोगिता का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया एवं डॉ. अमिता जैन द्वारा विजेताओं के नामों की घोषणा की गई। लोकनृत्य (एकल) में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः सिद्धि पारीक, ज्योति भोजक, आनन्दपाल सिंह एवं कीमती शर्मा, लोकनृत्य (सामूहिक) में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः सुष्मिता नाहर एवं ग्रुप, ज्योति भोजक एवं ग्रुप एवं सीमा शेखावत एवं ग्रुप, रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः साजिदा एवं ग्रुप, गरिमा काला एवं ग्रुप, निकिता शर्मा एवं ग्रुप, हेमलता शर्मा एवं ग्रुप, सामूहिक गायन में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः सुरक्षा जैन एवं ग्रुप, मुस्कान एवं ग्रुप, पूर्णिमा चौधरी एवं ग्रुप, रश्मि एवं ग्रुप, पोस्टर पेंटिंग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः प्रगति भूतोड़िया, पारूल दाधीच, योगिता शर्मा, मेहंदी प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः नाजमीन बानो, सरोज एवं मानसी खटेड़, आयुषी सैनी, माईम प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः रंजित एवं समूह, खुशबू शर्मा एवं समूह, सरिता फिरोदा एवं समूह, नाटक प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः मुमुक्षु धरती एवं समूह, सरिता फिरोदा एवं समूह, ऊषा सैनी एवं समूह, एकल गायन में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः स्वामी अरूण, विकेश चौबे, मुमुक्षु करिश्मा रहे।

विश्वविद्यालय में अभिनन्दन एवं मंगलभावना समारोह आयोजित

विकास के लिए आवश्यक है शीतलता, गांभीर्य व पुरूषार्थ के गुण - मुनि जयकुमार

मुनिश्री जयकुमार ने कहा है कि स्वयं के विकास के लिये तय पैमाने के अनुसार व्यक्ति को शीतल, पराक्रमी और गंभीर होना चाहिये। वे यहां संस्थान के सेमिनार हॉल में 31 मार्च को आयोजित अभिनन्दन एवं मंगलभावना समारोह में सम्बोधित कर रहे थे। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने इस अवसर पर मुनिश्री जयकुमार का स्वागत करते हुये बताया कि वे ऐसे तपस्वी व साधक संत हैं, जिन्होंने अपने साधना-काल में बरसों तक लेट कर शयन नहीं किया। वे आराम के लिये केवल बैठ कर ही विश्राम करते रहे हैं। मुनि स्वस्तिक कुमार ने कहा कि संत किसी समाज से बंधकर नहीं चलते। समाज उनकी व्यवस्थायें करते हैं, लेकिन संत समस्त संसार के लिये होते हैं। मुनि मुदित कुमार व मुनि सुपारस कुमार ने व्यक्ति को सदैव गतिशील रहने की जरूरत बताई। कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के ट्रस्टी भागचंद बरड़िया, जीवनमल मालू, निदेशक राजेन्द्र खटेड़, विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़, प्रो. दामोदर शास्त्री, वित्ताधिकारी आर.के. जैन, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी आदि ने सम्बोधित किया तथा संतों को सदैव चलने वाला और सम्पूर्ण मानवता के लिये समर्पित बताया।

जैन मुनि ने किया संस्थान का अवलोकन

तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी मुनिश्री जयकुमार ने 3 मई को संस्थान का अवलोकन किया। उन्हें विश्वविद्यालय का योग एवं जीवन विज्ञान विभाग, महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम, कम्प्यूटर लेब, जिम्नेजियम, डिजीटल स्टूडियो, केन्द्रीय पुस्तकालय, शिक्षा विभाग एवं विज्ञान प्रयोगशालाओं का मुआयना किया। आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशालाओं, विभिन्न विभागों की व्यवस्थाओं आदि को देखा। उन्होंने जैन विद्या एवं प्राकृत भाषा के लिये करवाये जा रहे कोर्सेस एवं प्रचार-प्रसार पर संतोष व्यक्त किया। संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़, डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, प्रो. बी.एल. जैन, प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, नुपूर जैन, प्रकाश गिड़िया, डॉ. जसबीर सिंह, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, जे.पी. सिंह आदि ने इन सभी विभागों आदि के बारे में उन्हें विस्तार से जानकारी दी।

आतंकवाद विरोधी दिवस पर शपथ दिलवाई

संस्थान के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा कि देश का सम्पूर्ण ताना-बाना हमारे संविधान के अन्तर्गत निहित है। इस ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करने का कार्य ही आतंकवाद है। वे यहां 21 मई को राष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी दिवस के अवसर पर सम्बोधित कर रहे थे। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि हर

नागरिक को अपना कर्तव्य समझ कर अपने स्तर पर आतंकवाद से निपटने और उसके विरोध में भूमिका तय करनी होगी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त स्टाफ को आतंकवाद का डटकर विरोध करने, सामाजिक सद्भाव व सूझबूझ कायम रखने, मानवीय मूल्यों को खतरा पहुंचाने वाली विघटनकारी शक्तियों से लड़ने की शपथ दिलवाई गई। इससे पूर्व शिक्षा विभाग में भी आतंकवाद विरोधी दिवस मनाया गया तथा समस्त छात्राध्यापिकाओं एवं स्टाफ को भी शपथ दिलवाई गई। इस अवसर पर बी.एड. की छात्राओं अंजू, प्रीति स्वामी, भव्या ने आतंकवाद दिवस मनाये जाने के कारण, आतंकवाद के दुष्परिणामों एवं आतंकवाद से निपटने के उपायों के बारे में बताया।

कन्या भ्रूण हत्या निरोध जागरण कार्यक्रम

संस्थान में आयोजित कन्या भ्रूण हत्या निरोध जागरण कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के राज्य सहायक कार्यक्रम अधिकारी सुजानकुमार शाह द्वारा प्रोजेक्टर के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या को समाज के लिये अभिशाप बताकर, इस अभिशापित जीवन से उबरने के कारगर उपाय बताये। जिनके दम पर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा सकता है। उन्होंने जरूरी कानूनों से छात्राओं को अवगत कराया, ताकि वे अपने अस्तित्व के बाधक कारकों का सिरे से खात्मा कर सके।

इससे पहले सुजान कुमार शाह एवं रूपाराम का परिचय देते हुए दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक एवं महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने दिया। श्री शाह जैन विश्वभारती संस्थान के समाज कार्य विभाग से बी.एस.डब्ल्यू एवं एम.एस.डब्ल्यू की डिग्री प्राप्त कर आज राज्य के उच्चस्थ पदों पर रहकर समाज को लाभान्वित कर रहे है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के लाडनूं खण्ड के समन्वयक रूपाराम सैनी भी संस्थान के समाज कार्य विभाग से एम.एस.डब्ल्यू. कर चुके। कार्यक्रम में उनका शॉल, संस्थान का प्रतीक-चिह्न एवं माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पुष्पा मिश्रा ने किया।

'नया भारत संकल्प सप्ताह, के अन्तर्गत प्रतियोगिताओं का आयोजन

स्वभाव को सुधारें और व्यक्तित्व विकास पर ध्यान दें – कक्कड़

संस्थान के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने यहां आचार्य महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में आयोजित नये भारत के निर्माण के लिये संकल्प सम्बंधी सप्ताह के शुभारम्भ समारोह की अध्यक्षता करते हुये सभी विद्यार्थियों एवं प्रशिक्षु शिक्षिकाओं से कहा कि वे अपने व्यक्तित्व निर्माण पर पूरा ध्यान दें। इसके लिये कक्षाओं के बाहर भी सीखने पर जोर देना आवश्यक है। उन्होंने टीम वर्क पर जोर देते हुये अपने सहयोगियों के साथ व्यवहार को श्रेष्ठ बनाने तथा अपने आप के प्रति अपनी सोच को बदलने की आवश्यकता पर जोर दिया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रधानमंत्री के पांच साल के लक्ष्य में संकल्प पूर्वक नये भारत के निर्माण में योगदान करने की जरूरत बताई। उन्होंने जातिवाद, साम्प्रदायिकता, हिंसा, गरीबी से मुक्ति के लिये पांच साल का अंतराल पर्याप्त बताया। उपकुलसचिव डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने देश की संस्कृति की रक्षा की आवश्यकता बताई। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा समस्याओं के समाधान के लिये बुद्धि-कौशल की आवश्यकता है। समन्वयक डॉ. अमिता जैन ने संकल्प सप्ताह के आयोजन पर प्रकाश डाला।

वाद-विवाद व रंगोली प्रतियोगिता आयोजित

पूरे देश में मनाये जा रहे संकल्प सप्ताह के अन्तर्गत जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में 'नया भारतः संकल्प से सिद्धि' कार्यक्रम में विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। वाद-विवाद प्रतियोगिता में 'नये भारत के निर्माण में स्वच्छता अभियान की भूमिका' विषय पर पक्ष व विपक्ष में कुल 15 प्रतियोगियों ने भाग लिया, जिनमें से प्रथम स्थान पर बी.एड. की छात्रा सुमन कंवर रही। द्वितीय स्थान पर समाज कार्य विभाग की छात्र करूणा शर्मा व बीएड की छात्रा सुनीता सहजवानी रही। तृतीय स्थान पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्रा मुमुक्षु आरती रही।

17 अगस्त को रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में कुल 21 समूहों के 63 प्रतिभागियों ने भाग लेकर आकर्षक रंगोलियों का निर्माण किया। रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम स्थान गुंजन जांगिड़ एवं समूह, द्वितीय स्थान पर सरिता यादव समूह एवं करूणा शर्मा समूह रहे तथा तृतीय स्थान पर सरिता फिरोजा एवं समूह ने प्राप्त किया। 21 अगस्त को एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। 'आचार्य तुलसीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर हुई। इस परिचर्चा में आचार्य तुलसी के समग्र पक्षों पर प्रकाश डाला गया। परिचर्चा में तन्मय जैन, सरोज देवी बैद, निशा सोनी, दीप्ति दूगड़, प्रवीण कंवर, वत्सला व खुशबू योगी ने भाग लिया। परिचर्चा का संयोजन डॉ. गिरीराज भोजक ने किया।

पूर्व डीजीपी मनोज भट्ट ने अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया

सेवानिवृत पुलिस महानिदेशक मनोज भट्ट ने 25 अगस्त को यहां जैन विश्व भारती संस्थान विश्वविद्यालय में अपने शोध प्रबंध की पूर्व रूपरेखा प्रस्तुत की। वे यहां विश्वविद्यालय के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के अन्तर्गत पीएचडी के लिये शोध प्रबंध तैयार कर रहे हैं। भट्ट द्वारा 'प्रेक्षाध्यान द्वारा वृद्धाश्रम में रहने वाले व्यक्तियों की मृत्यु-चिंता तथा समायोजन पर प्रभावः एक अध्ययन' विषय पर अपना शोध प्रबंध लिखा जा रहा है। वे यह शोध प्रबंध एमिटी यूनिवर्सिटी के डीन एसएस नाथावत के निर्देशन में तैयार कर रहे हैं। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने बताया कि पूर्व डीजीपी ने अपने शोध प्रबंध में काफी मेहनत की है और उनका प्रस्तुतिकरण प्रभावी रहा।

खेलों से होता है सर्वांगीण विकास- कक्कड़

संस्थान में खेलकूद प्रतियोगिताओ का शुभारंभ 20 नवम्बर को कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने गोला फेंक कर किया। उन्होंने विद्यार्थियों का उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा यह स्वस्थ प्रतिस्पर्धा है, जिसमे विद्यार्थियों का शारीरिक व मानसिक विकास होता है और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि सभी को खेल भावना से खेलना चाहिए। हार या जीत मायने नहीं रखती। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया, ऐसी प्रतियोगिताओं से आत्मविश्वास की वृद्धि होती है।

क्रीड़ा सचिव डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया कि संस्थान में 20 से 25 नवम्बर तक खेल-कूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिनमें गोला फेंक, तस्तरी फेंक, 100 मी. दौड़, 200 मी. दौड़, बैडमिंटन, ऊंची-कूद, लम्बी-कूद, कबड्डी, खो-खो आदि शामिल थीं। कार्यक्रम में संकाय सदस्य तथा विभागों के विद्यार्थी उपस्थित थे।

खेल प्रतियोगिताओं के विजेता

विविध खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन में लम्बीकूद (छात्र वर्ग) में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की मोनिका प्रथम व रेणुका चौधरी द्वितीय स्थान एवं योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की राजू जाट तृतीय स्थान पर रही। लम्बी कूद (छात्र वर्ग) समाज कार्य विभाग के नरेन्द्र जलोया प्रथम, द्वितीय स्थान पर योग जीवन विज्ञान विभाग के साकेत एवं तृतीय स्थान पर समाज कार्य विभाग के विपिन शर्मा रहे। इसी प्रकार दौ सौ मीटर दौड़ (छात्र वर्ग) में प्रथम इन्द्राराम पूनियां, द्वितीय साकेत एवं तृतीय स्थान पर विश्वजीत पुनियां रहे। दौ सौ मीटर दौड (छात्रा वर्ग) में शिक्षा विभाग की दिव्या पारीक प्रथम, द्वितीय निरमा एवं तृतीय स्थान पर मंजू कलवानिया रही। इसी प्रकार कैरम (छात्र वर्ग) में प्रथम महेन्द्र सिंह, द्वितीय स्थान पर रणजीत जैसवाल एवं तृतीय राजदीप घोष रहे।

स्वाभिमान व कर्तव्य परायणता आवश्यक गुण- प्रो. दूगड़

सरदार पटेल जयन्ती पर एकता दौड़ व निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन

संस्थान में 31 अक्टूबर को सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय एकता दिवस में कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ ने कहा कि हमें राष्ट्र प्रेम, जन सेवा, कर्त्तव्य परायणता, स्वाभिमान, कर्मठता आदि गुणों को अपनाना चाहिए। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किस प्रकार देश में एकीकरण स्थापित किया। प्रो. बी.एल. जैन, डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. अशोक भास्कर, डा. जितेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. सरोज राय, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी, डॉ. पुष्पा मिश्रा एवं समस्त विभाग के संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

प्रतियोगिता के विजेता

इस अवसर पर एकता दौड़ एवं निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। एकता दौड़ में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। यह दौड़ तीन चरणों में आयोजित की गई। प्रथम चरण क्रमशः सरिता फिरोदा, माया शर्मा एवं सरोज, दुर्गा कुमारी, द्वितीय चरण में क्रमशः साकेत, जगदीश प्रसाद मीणा, द्वय मुक्ति राजोवर एवं विस्वाजित सरकार तथा तृतीय चरण में क्रमशः मंजू कलवानिया, जितेन्द्र उपाध्याय, खुशबू योगी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थानों पर विजेता रहे। निबन्ध प्रतियोगिता में दीपिका राजपुरोहित प्रथम, सरिता फिरोदा द्वितीय, द्वय सुमैया खानव एवं सुविधा जैन तृतीय रहे। संयोजन डॉ अमिता जैन ने किया।

व्याख्यानमाला आयोजित

संस्थान के एससी/एसटी/ओबीसी प्रकोष्ठ द्वारा ''रोजगार परिदृश्य एवं अन्य मुद्दों'' पर 27 अक्टूबर को एक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मगध विश्वविद्यालय बिहार के प्रो. नलिन शास्त्री थे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में समाज कार्य विभाग एवं समन्वयक एससी/एसटी/अन्य पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के विभागाध्यक्ष डॉ. बिजेन्द्र प्रधान ने अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान करते हुए कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया। मुख्य वक्ता प्रो. नलिन शास्त्री ने व्यावहारिक कुशलता में वृद्धि को विभिन्न पहलुओं- अर्थ, महत्त्व, मुख्य बिन्दु, सीख, नेतृत्व, सम्प्रेषण एवं समस्या-समाधान आदि पर प्रकाश डाला। अन्त में सहभागियों ने अपने-अपने प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का उत्तर वक्ता एवं सहभागियों के अन्तःक्रिया के माध्यम से समाधान किया। अन्त में प्रकोष्ठ के सदस्य डॉ. विष्णु कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

गीता की जीवन में प्रासंगिता पर व्याख्यान

इस युग में सामाजिक नियम-विधान ही ईश्वर-तुल्य हैं

संस्थान के सेमिनार हॉल में 17 फरवरी को गीता की मानव जीवन में प्रासंगिता विषय पर आयोजित व्याख्यान में प्रो. दामोदर शास्त्री ने गीता को दिव्य-ध्वनि बताते हुए कहा कि हर गीत में ईश्वरीय अंश होता है, चाहे वह किसी भी भाषा का गीत क्यों न हो। उन्होंने जैन, बौद्ध व उपनिषद के वर्णन के अनुसार शब्द-ब्रह्म व बौद्ध-संगति के बारे में बताया। उन्होंने गीता का मुख्य संदेश बताया कि जो भी आपके उपर सार्वजनिक नियम लागू किये हुये गये, उन्हें मानें। आज के युग में सामाजिक नियम-विधान ही ईश्वर-तुल्य हैं। इन नियमों के अनुसार ही कार्य करें। कर्ता भाव रखने के बजाये नियमों को सर्वोपरि मानें और तटस्थ भाव रखें। कार्यक्रम में विभिन्न शिक्षकों ने गीता और उसके व्यावहारिक दर्शन के सम्बंध में अनेक सवाल पूछे, जिनका समाधान प्रो. शास्त्री ने किया।

स्वधर्म में रह कर पुरूषार्थ करें

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि गीता किसी न किसी रूप में जीवन से जुड़ी हुई है, इसीलिये इसकी हर बात रूचिकर लगती है। गीता में स्पष्ट संदेश है कि कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो पूर्णतया दोषमुक्त हो और ऐसा भी कोई नहीं है जो पूर्ण रूप से दोषयुक्त हो। हमें इन ग्रंथों को जीवन से जोड़कर देखना चाहिये। व्याख्यान के समन्वयक डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने कार्यक्रम का संचालन किया।

शोध-अध्येताओं के लिये व्याख्यान आयोजित

संस्थान में शोध-अध्येताओं के लिये कोर्स वर्क एंड रिसर्च मैथडोलोजी पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। संस्थान के शोध निदेशक प्रो. अनिल धर की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में जोधपुर के जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. के.एन. व्यास ने शोध में पुनरावृति नहीं होने देने को जरूरी बताते हुये कहा कि रिसर्च में कट एंड पेस्ट की आदत भी ठीक नहीं है; प्लेगेरिज्म का होना एक अपराध है, इससे बचना चाहिये तथा जो उद्धरण लिया जा रहा है, उसका रेफरेंस अवश्य उल्लेख करना चाहिये। उन्होंने विषय के बाद उपकल्पना का निर्धारण करना बताया तथा कहा कि उपकल्पना ऐसा दिशासूचक होती है। उपकल्पना का स्रोत व्यक्तिगत अनुभव, सामान्य संस्कृति, सादृश्यता एवं वैज्ञानिक सिद्धांत होते हैं। उन्होंने शोध तैयार करने की विधियों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। प्रारम्भ में प्रो. अनिल धर ने उनका स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने किया।

शोध कार्य में सुविधाओं के साथ जवाबदेहिता भी होना आवश्यक- प्रो. यादव

दो दिवसीय रिसर्च ओरियेंटल वर्कशॉप आयोजित

संस्थान में आयोजित दो दिवसीय रिसर्च ओरियेंटेशन वर्कशॉप के समापन सत्र को 9 फरवरी को सम्बोधित करते हुये कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रो. आर.एस. यादव ने कहा है कि शोध की आवश्यकता व प्रासंगिकता होने पर ही शोध उपयोगी बन सकती है। शोध का विषय तय करने के बाद उसकी प्रश्नावली तैयार करने, लोगों से साक्षात्कार करने में स्वयं को पूरी मेहनत करनी चाहिये। पीएचडी में डाटा का प्रस्तुतिकरण भी महत्व रखता है, अगर डाटा संग्रह और प्रस्तुतिकरण सही रूप में नहीं है तो वह शोध महत्वहीन हो जाती है। विश्वविद्यालय के शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने कार्यशाला की दो दिवसीय गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुये शोधार्थियों के लिये आवश्यक मार्गदर्शन किया तथा उनके द्वारा प्रस्तुत शोध पत्रों में रही कमियों व पूर्तियों के सम्बंध में बताया। अंत में डॉ. जितेन्द्र वर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विकास शर्मा ने किया। दो दिवसीय कार्यशाला में देश भर से 80 शोध-अध्येताओं ने हिस्सा लिया व अपने शोध प्रबंध प्रस्तुत किये।

रिसर्च के लिये समय, नियमितता व व्यवस्था जरूरी

वर्कशॉप के शुभारम्भ सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. दामोदर शास्त्री ने रिसर्च करने का कारण, अब तक हो चुकी रिसर्च का अध्ययन, नये विषय की तलाश, मैटर की उपलब्धता आदि के बारे में बताते हुये कहा कि एम.ए. करने के बाद विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकों से मुक्त हो जाता है, लेकिन उसे डिग्री देते समय उपनिषद वाक्यों के रूप में कहा जाता है कि स्वाध्याय बंद न करें, स्वाध्याय को आगे बढ़ायें। संस्थान के उप कुलसचिव डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने कहा कि रिसर्च करने वाले अध्येता को यह नहीं सोचना चाहिये कि पहले क्या स्थापित था और लोग क्या कहते रहे थे, आपकी शोध उन सबसे भिन्न हो सकती है। उन्होंने रिसर्च और सर्वे में अंतर भी बताया तथा कहा कि डेटा कलेक्शन करना केवल सर्वे है, जबकि उसके साथ एनालिसिस व डिस्कशन भी हो तो वह रिसर्च हो जाती है। शोध निदेशक प्रो. अनिल धर ने शोध तैयार करने के सम्बंध में गाईड लाईन से अवगत करवाया तथा शोध के लिए आवश्यक मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जितेन्द्र वर्मा ने किया।

संस्थान को नई ऊंचाइयां देने के लिए समर्पित रहें-कुलपति

नव वर्ष समारोह

वर्ष 2018 के शुभागमन पर सेमिनार हॉल में 3 जनवरी को संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने संस्थान की श्रेष्ठता एवं सर्वोच्चता के लिये समस्त सदस्यों की सक्रिय भागीदारी को आवश्यक बताते हुये गत वर्ष के योगदान की सराहना की और भविष्य में भी संस्थान को नई उंचाईयाँ मिलने के लिये प्रयासरत रहने का विश्वास जताया। उन्होंने वर्ष 2018 में प्रस्तावित कार्ययोजनाओं का जिक्र करते हुए योगा, नेचुरोपैथी हॉस्पिटल एवं कॉलेज खोलने की संभावना व्यक्त की तथा सभी से ध्येय पथ पर निरंतर गतिमान रहने की अपेक्षा की। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने संस्थान के विकास में एकजुट होकर लक्ष्य को अर्जित करने पर विशेष बल दिया। कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने नये वर्ष में आत्मविश्वास से आपूरित होकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। समणी नियोजिका प्रो. ऋजुप्रज्ञा ने सभी सदस्यों को संस्थान के प्रति समर्पित बताया और कहा कि नववर्ष में यह भावना और विकसित होनी चाहिए।

नववर्ष पर उत्साह जनक कार्यक्रम

संस्थान में नववर्ष पर 1 जनवरी 2018 को महाप्रज्ञ सभागार में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि नववर्ष के प्रथम दिवस आत्मावलोकन व आत्मचिंतन का दिन है, ताकि अपने गुजरे

अतीत से सबक लेकर भविष्य संवार सके। रमेश दान चारण ने देशभक्ति गीत, विनय जैन, हेमलता शर्मा, प्रवीणा कंवर, कंचन स्वामी ने कवितायें एवं तांबी दाधीच ने एकल नृत्य की प्रस्तुति दी। उपकुलसचिव डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. बी. एल. जैन, डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, डॉ. जुगल किशोर दाधीच, डॉ. गोविन्द सारस्वत, डॉ. योगेश जैन, अभिषेक चारण, डॉ. विकास शर्मा ने विश्वविद्यालय परिवार के लिये मंगलकामनायें व्यक्त की।

नये भारत के निर्माण के संकल्प की सिद्धि के लिये मन व कर्म से जुट जायें- प्रो. दूगड़

संकल्प दिवस मनाया

भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर 9 अगस्त को यहां विश्वविद्यालय में संकल्प दिवस मनाया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि 9 अगस्त 1942 को लिये गये आजादी के संकल्प से ही स्वतंत्रता की नींव पड़ी थी और 15 अगस्त 1947 को देश की स्वतंत्रता के रूप में उसकी सिद्धि मिली थी। उन्होंने आजादी की लड़ाई के सेनानियों एवं उनके द्वारा दिये गये नारों को याद करते हुये कहा कि हमें उन सेनानियों के बलिदान पर गर्व करना चाहिये। प्रो. दूगड़ ने नये भारत के निर्माण के संकल्प को सन 2022 तक सिद्ध करने के आह्वान के साथ कहा कि मन व शरीर से मजबूत बन कर ही सभी संकल्प की सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

सामूहिक संकल्प लिया

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों, व्याख्याताओं, स्टाफ आदि ने नये भारत के निर्माण का संकल्प लिया। उन्होंने सामूहिक रूप से संकल्प लिया कि वे स्वच्छ, गरीबी मुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त, आतंकवाद मुक्त, सम्प्रदाय मुक्त व जातिवाद मुक्त भारत के निर्माण करने में अपने मन और कर्म से जुट जायेंगे। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने सबको एक साथ संकल्प ग्रहण करवाया। इस अवसर पर कुलसचिव वी. के. कक्कड़, उप कुलसचिव डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, आईक्यूएसी के निदेशक प्रो. अनिल धर मंचस्थ थे।

देश भर में 400 लोग और राज्य में 29 जने रोजाना मर जाते हैं सड़क दुर्घटनाओं में

तहसील स्तरीय हेलमेट जागरूकता कार्यशाला आयोजित

सरदार पटेल पुलिस विश्वविद्यालय जोधपुर के सेंटर फॉर रोड सेफ्टी की केन्द्रीय समन्वयक प्रेरणा सिंह ने यहां संस्थान के महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में 7 फरवरी को आयोजित तहसील स्तरीय हेलमेट जागरूकता कार्यशाला में बताया कि हमारे देश में प्रतिदिन 400 लोग सड़क दुर्घटनाओं में मरते हैं और साल में करीब डेढ़ लाख लोग मौत के शिकार हो जाते हैं। यह आंकडो विश्व में सबसे अधिक है। यहां जितनी सड़क दुर्घटनायें होती हैं, उनमें 100 में से 40 व्यक्ति मर जाते हैं। राजस्थान में सालाना 10 हजार 465 सड़क दुर्घटनायें होती हैं। प्रदेश में रोजाना 29 लोग सड़क दुर्घटनाओं में मर जाते हैं। इन मरने वालों में मजदूरों की संख्या नहीं होती, बल्कि सबसे ज्यादा मौतें पढे-लिखे लोगों की होती हैं और उनमें भी युवा अधिक होते हैं। प्रेरणा सिंह ने प्रोजेक्टर के माध्यम से जानकारी देते हुये बताया कि इन दुर्घटनाओं के कारणों में यातायात नियमों की जानकारी नहीं होना, नियमों को तोड़ने की आदत होना, वाहन में तकनीकी खराबी का होना, गलत ओवर टेक करना, ज्यादा गति रखना, दृश्यता और अंध मोड़ या अन्य जगह, अंधाधुंध वाहन चलाना, नाबालिग द्वारा वाहन चलाना, सतर्कता व ध्यान खोना जिसमें नशा, सहयात्री व्यवधान, गुस्से में चलाना, जल्दबाजी, थकान और नींद शामिल हैं। इनके अलावा सड़क की दशा और बनावट, मौसम की दशा, सुरक्षा उपकरणों का अभाव यथा हेलमेट, सीट बेल्ट आदि मौत के कारण बनते हैं।

उन्होंने बताया कि बिना हेलमेट के मरने वालों की संख्या 10 हजार 135 है, जो बहुत ज्यादा है। दुर्घटनाओं में हेलमेट लगाया हुआ होने पर जीवन बच सकता है, क्योंकि अधिकतर मौतें सिर की चोट के कारण होती हैं। कार्यशाला में लाड़नूं थानाधिकारी भजन लाल भी मंचस्थ थे। कार्यशाला में नगर पालिका के समस्त पार्षदगण, सीएलजी के सभी सदस्य, विद्यालयों के प्रधान एवं विद्यार्थी व युवा वर्ग उपस्थित थे।

स्वच्छता पखवाड़े के तहत सफाई की क्रियान्विति

यूजीसी के निर्देशानुसार पूरे देश 01 से 15 सितम्बर तक सभी विश्वविद्यालयों में स्वच्छता पखवाड़े के रूप में मनाया गया। संस्थान द्वारा श्रमदान कर एवं स्वच्छता के प्रति जन-जागृति रैली के रूप में कार्यक्रम शुरू किया गया। संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ एवं दूरस्थ शिक्षा के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी के अगुवाई में सबने मिलकर संस्थान में सफाई अभियान चलाया और परिसर के मैदानों को सम्पूर्ण रूप से स्वच्छ बनाया। इसके बाद छात्रावासों की सफाई के कार्यक्रम में पुरूष छात्रावास की साफ-सफाई डॉ बिजेन्द्र प्रधान, विभागाध्यक्ष समाज कार्य विभाग के निर्देशन में किया गया। सभी 22 छात्रों ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लेते हुए कार्यक्रम को सफल बनाया। महिला छात्रावास की साफ-सफाई कार्यक्रम का आयोजन छात्रावास अधीक्षक गीता पूनियां एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ. प्रगति भटनागर के निर्देशन में किया गया।

कैम्पस हरा-भरा कार्यक्रम का आयोजन– स्वच्छता पखवाड़े के तीसरे दिन संस्थान में कैम्पस हरा-भरा कार्यक्रम का आयोजन पेड़ पौधे लगवाकर किया गया। कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़, दूरस्थ शिक्षा के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, शोध निदेशक प्रो. अनिल धर, उप कुलसचिव डॉ प्रद्युम्नसिंह शेखावत, महिला एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जुगलकिशोर दाधीच, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. पुष्पा मिश्रा आदि उपस्थित थे। सभी उपस्थित विशिष्ट सदस्यों ने छात्र-छात्राओं के सहयोग से पेड़ पौधे लगाकर संस्थान को हरा-भरा करने में सहयोग दिया।

स्वच्छता पखवाड़े के तहत व्याख्यान– पखवाड़े के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं ने नगर पालिका के समन्वय से सार्वजनिक स्थान से एकत्रित किये जाने वाले कूड़े की मात्रा एवं साफ-सफाई की प्रक्रिया का अध्ययन किया। इसके अलावा दुजार गांव में लोगों को स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर व्याख्यान एवं चर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सरपंच हिम्मतसिंह एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। स्वच्छता का व्याख्यान छात्र विनय कुमार एवं मुकेश कुमार ने दिया। गांव के गुवाड़ एवं सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता का नारा लेखन का कार्य किया गया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ एवं डा. प्रगति भटनागर के संयोजन से हुआ।

फार्म 4
(नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
2.	प्रकाशन अवधि	:	अर्द्धवार्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	विनोद कुमार कक्कड़
	क्या भारत के नागरिक है ?	:	हाँ
	पता	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
4.	प्रकाशक का नाम	:	विनोद कुमार कक्कड़
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
5.	सम्पादक का नाम	:	समणी अमल प्रज्ञा
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
6.	उन व्यक्तियों के नाम पते जो पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान

मैं विनोद कुमार कक्कड़ एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

लाडनूं
दिनांक : 1 मार्च, 2018

विनोद कुमार कक्कड़
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

'A' Grade my NAAC & 'A' Category by MHRD

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत घोषित

मान्य विश्वविद्यालय

M.A. | M.S.W. | M.Phil. | Ph.D.

B.A./B.Com. | B.Sc. | B.A.-B.Ed B.Sc.-B.Ed | B.Ed.-M.Ed.

Placement Assistanc | Separate Hostels for Male & Female | Scholarship Facility | Internet Facility | Coaching for Competition Exams

विशेषताएँ

● राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा समाजोपयोगी कार्यक्रम ● व्यक्तित्व विकास शिविर द्वारा मूल्यपरक शिक्षण एवं प्रशिक्षण ● शैक्षिक भ्रमण ● राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिताओं में संभागिता ● महाविद्यालय परिसर में बुक बैंक व्यवस्था उपलब्ध ● अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण जैसे पाठ्यक्रमों में रियायती शुल्क पर प्रशिक्षण ● योग्य अनुभवी शिक्षक एवं प्रबुद्ध समणी वर्ग द्वारा विशेष अध्यापन ● आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु प्रयोगशाला लेबोरेटरी ● शान्त, सुरक्षित, अनुशासित एवं प्रदूषण मुक्त परिवेश ● सभी पाठ्यक्रम यू.जी.सी. एवं भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ● संभाषण, लेखन, खेलकूद, साहसिक एवं रोमांचक खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में विशेष अवसर ● समृद्ध एवं विशाल पुस्तकालय की व्यवस्था ● छात्रावास एवं जिम की सुविधा ● प्राच्य विद्याओं का अध्ययन करने वाले छात्रों को स्कॉलरशिप देने का प्रावधान ● प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रशिक्षण (NET, JRF, CA and CS) ● विषयों से सम्बन्धित विशेष कोचिंग कक्षाएं।

नियमित पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

एम.ए.

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ दर्शन ▸ संस्कृत ▸ प्राकृत ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ क्लीनिकल साइकोलॉजी ▸ अहिंसा एवं शान्ति ▸ राजनीतिक विज्ञान ▸ समाज कार्य ▸ अंग्रेजी ▸ एम.एड. (उपरोक्त सभी विषयों में पीएच.डी. सुविधा)

एम.फिल.

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ प्राकृत एवं जैन आगम

स्नातक पाठ्यक्रम

▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम. ▸ बी.एस.सी. ▸ बी.ए.-बी.एड. ▸ बी.एससी-बी.एड. ▸ बी.एड. (केवल महिलाओं के लिए)

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

▸ स्टडीज इन जैनिज्म ▸ नेचुरोपैथी ▸ प्रेक्षा योग थैरेपी ▸ एन.जी.ओ. मैनेजमेण्ट ▸ बैंकिंग ▸ रूरल डेवलपमेण्ट ▸ जेण्डर इम्पॉवरमेण्ट ▸ कॉरपोरेट सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी ▸ ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेण्ट ▸ काउन्सलिंग एण्ड कम्युनिकेशन ▸ राजभाषा अध्ययन

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

▸ प्राकृत ▸ संस्कृत ▸ योग एवं प्रेक्षाध्यान ▸ जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग शिक्षा ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ जर्नलिज्म एण्ड मास मीडिया ▸ ऑफिस ऑटोमेशन एण्ड इंटरनेट ▸ फोटोशॉप ▸ एचटीएमएल- वेब डिजाईनिंग

पत्राचार पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ शिक्षा ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ अंग्रेजी

स्नातक पाठ्यक्रम

▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम.

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

▸ अहिंसा प्रशिक्षण ▸ अण्डरस्टेडिंग रिलिजन ▸ जैन धर्म एवं दर्शन ▸ प्राकृत ▸ जैन आर्ट एंड एस्थेटिक्स ▸ ह्यूमन राइट्स ▸ प्रेक्षा लाईफ स्कील

बी.पी.पी. पाठ्यक्रम

वे आवेदक जो 10+2 उत्तीर्ण नहीं हैं अथवा प्राथमिक औपचारिक योग्यता नहीं रखते हैं, लेकिन 18 वर्ष की उम्र पूर्ण कर चुके हों, विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित बी.पी.पी. परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं।

फोन : 01581-226110, 224332, 226230 फैक्स : 227472 web : www.jvbi.ac.in e-mail : jvbiladnun@gmail.com

www.jvbi.ac.in

जैन विश्वभारती संस्थान की ओर से विनोद कुमार कक्कड़, कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित तथा पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित एवं जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ (राजस्थान) में प्रकाशित। सम्पादक-समणी भास्कर प्रज्ञा